RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan Vishesh

वर्ष 03, अंक 205, नई दिल्ली, गुरुवार 02 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 श्एनआईआईटी से वैशाली शर्मा द्वारा प्रदान किए गए प्रमाणपत्रश्

06 स्वच्छ हवा, स्वस्थ लोग

08 राउरकेला सरकारी अस्पताल (आर जी एच) भूमि संकट से जूझ रहा...

परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र और टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्यों ने आज काली बाड़ी उत्तम नगर में जाकर मां का आशीर्वाद प्राप्त किया

"श्री श्री दुर्गा शरणम"
तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

दिनांक 1 अक्टूबर 2025 को टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य एवं परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा में सम्मिलित हुए और मां की आराधना कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

मां का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद संयोजक मंडल से मुलाकात कर कहा की आपके द्वारा 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह की शोभा देखने लायक रही और आशा करते है की आपके द्वारा आगे भी इसी तरह के भव्य आयोजन होते रहेंगे। साथ ही संजय बाटला संपादक ने कहा की कभी भी हमारी तरफ से किसी सहायता की आवश्यकता लगे तो हमें जरूर याद कीजियेगा।

मंदिर के बुजुर्ग सदस्यों ने परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को सम्मान प्रदान किया। इस मौके पर उन्होंने कहा आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

इस आयोजन में उत्तम नगर कालीबाड़ी के अध्यक्ष मलय डे, सचिव जयंत डे और सदस्य पिंकी कुंडू उपलब्ध रहे और उसके पश्चात संपादक द्वारा मां को पुष्पांजलि कर मा का प्रसाद और भोग प्राप्त किया।

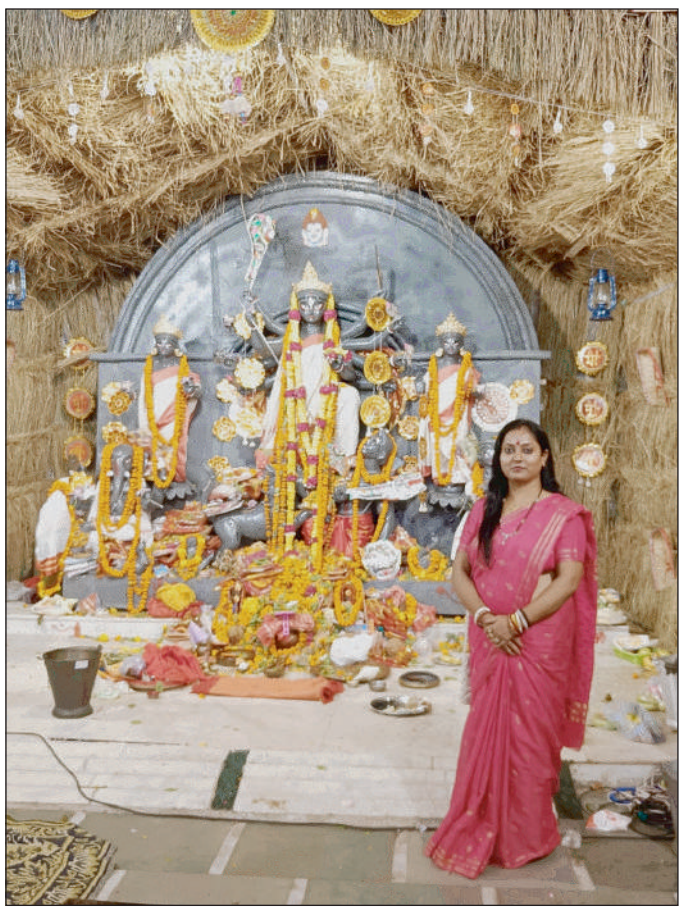

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दुर्गा पूजा पंडाल में ऐश्वर्यपूर्ण प्रस्तुति

ऐश्वी राजपूत और अद्विका शर्मा ने किया दर्शकों को मंत्रमुग्ध

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। स्थानीय दुर्गा पूजा पंडाल में इस वर्ष की सांस्कृतिक संध्या का मुख्य आकर्षण बनीं मंच प्रस्तुति, जिसमें बाल कलाकार ऐश्वी राजपूत (5 वर्ष) पुत्री अभिषेक एवं रश्मि राजपूत और अद्विका शर्मा पुत्री विकासदीप शर्मा ने अपने भावपूर्ण नृत्य और अभिनय से उपस्थित भक्तों का हृदय जीत लिया। देवी स्तुति और शक्ति आराधना पर आधारित उनके प्रदर्शन ने वातावरण को आध्यात्मिक रंगों में सराबोर कर दिया। तालियों की गड़गड़ाहट और भक्तिमय वातावरण ने यह स्पष्ट कर दिया कि दर्शक उनकी कला से अभिभूत हो गए। सभी भक्त जनों को नवरात्रि की और दशहरे की बहुत बहुत शुभकामनाएं।

दिल्ली में सभी व्यावसायिक वाहनों को देना पड़ेगा ईसीसी, टोल नाकों को जाम मुक्त करने के लिए एमसीडी का फैसला

दिल्ली में टोल नाकों पर जाम को कम करने के लिए एमसीडी ने सभी डीजल वाहनों पर ईसीसी लगाने का फैसला किया है। पहले आवश्यक वस्तुओं और खाली वाहनों को छूट मिलती थी। यह निर्णय सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर लिया गया है। इस कदम से जाम कम होने और राजस्व बढ़ने की उम्मीद है लेकिन परिवहन संघ ने इसे व्यापार विरोधी बताया है।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। दिल्ली में 156 टोल नाकों पर लगने वाले जाम को खत्म करने के लिए एमसीडी ने बड़ा कदम उठाया है। इसके लिए व्यावासयिक मालवाहक वाहनों पर पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क(ईसीसी) पर मिलने वाली छूट खत्म कर दी गई है। यह आदेश एमसीडी ने जारी किया हैं।

अब सभी व्यावासायिक मालवाहक वाहनों से ईसीसी वसूला जाएगा। जबकि पूर्व में सब्जी, दूध जैसी जरुरी वस्तुएं लाने वाले व्यावसायिक वाहनों को ईसीसी में 100 प्रतिशत की छूट और दिल्ली में प्रवेश करने वाले खाली मालवाहक वाहनों को 50 प्रतिशत की रियायत मिलती थी।

अब यह रियायत नहीं मिलेगी। निगम ने यह कदम सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर उठाया है। सुप्रीम कोर्ट में निगम ने ही हस्तक्षेप याचिका दायर की थी। जिसमें उसने ईसीसी में जरूरी वस्तुएं और खाली वाहनों पर मिलने वाली छूट को खत्म कर एकरूपता की बात कही थी। कोर्ट ने इसे स्वीकार कर लिया है, जिसके बाद एमसीडी ने इसे लागू कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि अभी तक व्यावासायिक मालवाहक वाहन के आकार के हिसाब टोल और ईसीसी शुल्क दिल्ली में प्रवेश के दौरान एमसीडी टोल पर आरएफआईडी टैग से लिया जाता था।

जांच के दौरान लग जाती थी वाहनों की कतार

अगर, कोई वाहन चालक यह दावा करता है उसके वाहन में जरूरी वस्तुएं हैं तो वाहन की टोल नाके पर ही जांच की जाती थी और वाहन की वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी की जाती थी।

दावा सही निकलने पर वाहन के आरएफआईडी टैग में काटे गए ईसीसी शुल्क को अगले दिन रिफंड कर दिया जाता था। लेकिन वाहन चालक के दावे पर हुई वीडियोग्राफी और वाहन की जांच के दौरान पीछे से आ रहे दूसरे वाहनों को इस दौरान इंतजार करना पड़ता था।

इससे जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। अब चूंकि सभी तरह के व्यावसायिक मालवाहक वाहनों पर ईसीसी शुल्क वसूला जाएगा तो वाहनों की जांच और वीडियोग्राफी की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिससे जाम पीछे आ रहे दूसरे वाहनों को इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

ट्रांसपोर्ट्स ने बताया व्यापार विरोधी निर्णय

इस नए नियम से लाभ यह भी होगा कि ईसीसी से दिल्ली सरकार का राजस्व बढ़ेगा। ईसीसी वायु प्रदूषण को कम करने के लिए वर्ष 2015 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर लागू किया गया था लेकिन जरूरी वस्तुओं और खाली मालवाहक वाहनों को इसमें छूट प्रदान की गई थी।

ऑल इंडिया मोटर एंड गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेंद्र कपूर ने इसे व्यापार विरोधी निर्णय बताया है। उन्होंने पहले से ही दिल्ली में ट्रक और मालवाहक वाहन बड़ी मुश्किल से आते हैं।

इससे व्यापार खत्म हो जाएगा। साथ ही दूध और सब्जी जैसी जरूरी वस्तुओं लाने पर भी ईसीसी लगेगा तो इनके दामों में वृद्धि हो जाएगी। पहले ही महंगाई बहुत है ऐसे में लोग कैसे जीवन यापन करेगा। सरकार को चाहिए था कि वह ईसीसी खत्म करें न की सभी पर लागू करें।

2015 से 2021 तक 1298 करोड़ रुपये की ईसीसी की वसूली हुई थी।

70 हजार व्यावसायिक वाहन औसतन दिल्ली में प्रवेश करते हैं।

29 हजार कार होती हैं।

25 हजार एमएलवी होते हैं।

हल्का वाणिज्य वाहन- 6 हजार औसतन इसमें हल्के व्यावसायिक वाहन होते हैं।

2800 बसें होती हैं।

3400 दो एक्सल वाले ट्रक होते हैं।

1000 तीन धूरी के वाणिज्य वाहन होते हैं।

1100 तीन धूरी से ज्यादा वाले वाणिज्य वाहन होते हैं।

इन बॉर्डरों पर वसूला जाता है ईसीसी

दिल्ली में 156 टोल नाके हैं। इसमें 13 प्वाइंट ऐसे हैंख जहां से 85 प्रतिशत व्यावसायिक वाहन दिल्ली में आते हैं। दिल्ली में ईसीसी कारण रजौकरी, बदरपुर, गाजीपुर मैन, गाजीपुर ओल्ड, कालिंदी कुंज, सिंघु बॉर्डर, भोपुरा बॉर्डर पर जाम लगता है।

किस वाहन पर कितना लगता है ईसीसी

छोटे मालवाहक वाहन पर 1400 रुपये प्रति एंट्री

बड़े मालवाहक वाहन पर 2600 रुपये प्रति एंट्री

विजयादशमी आज

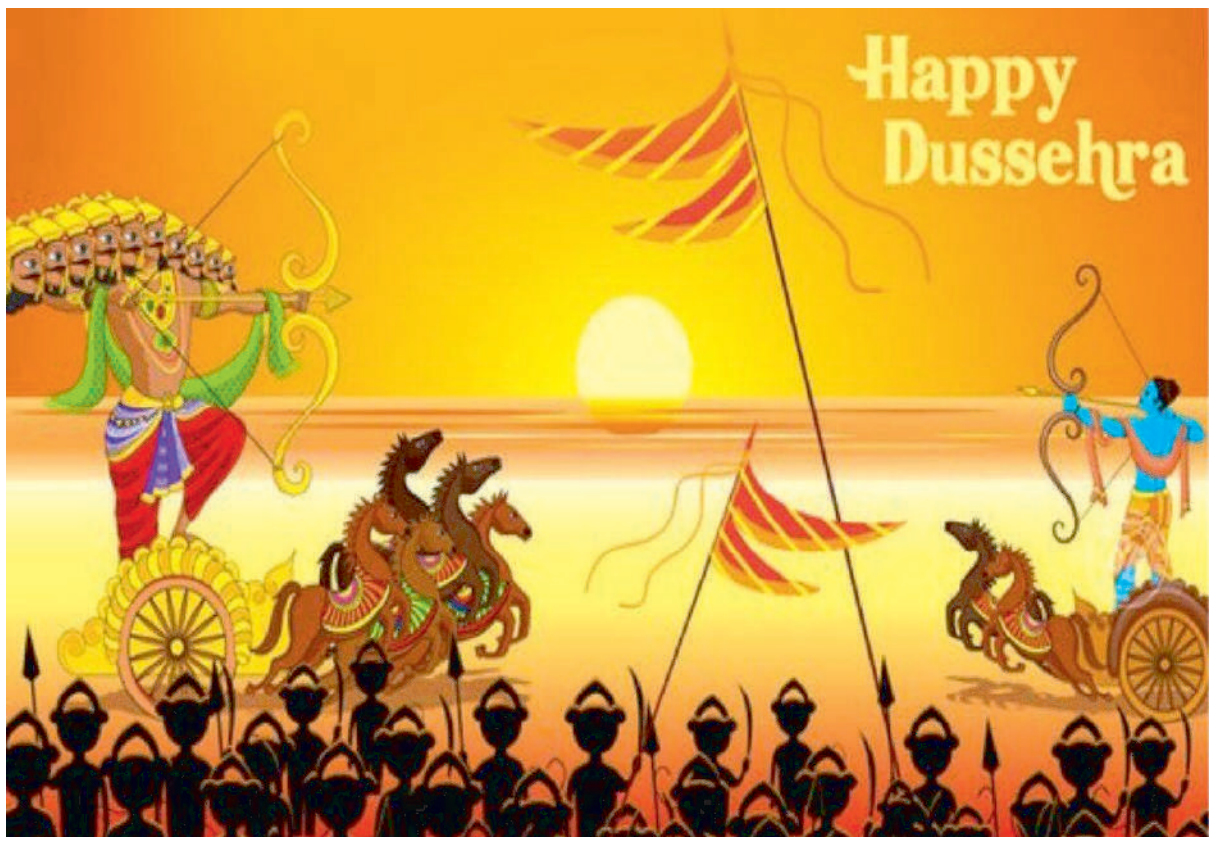

हिंदू धर्म में दशहरा को प्रमुख त्योहारों में से एक माना जाता है, जिसे बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। हर साल आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को ये पर्व मनाया जाता है, जो शारदीय नवरात्रि के समापन के साथ होता है। मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान राम ने रावण और मां दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था। इस दिन लोग एक-दूसरे के गले लगकर दशहरा की शुभकामनाएं देते हैं। इसके अलावा देशभर में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतले जलाकर बुराई के नाश का उत्सव मनाते हैं। कई साल बाद ऐसा हो रहा है कि रावण दहन के समय पंचक या फिर भद्रा का साया नहीं रहेगा। इस साल दशमी तिथि दो दिन होने के कारण असमंजस की स्थिति बनी हुई है कि किस दिन रावण दहन करना शुभ होगा।

दशहरा कब है?

==========

ज्योतिष पंचांग के अनुसार, आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि 1 अक्टूबर 2025 को शाम 7 बजकर 2 मिनट पर आरंभ हो रही है, जो 2 अक्टूबर शाम को 7 बजकर 10 मिनट पर समाप्त होगी। ऐसे में दशहरा का त्योहार 2 अक्टूबर, 2025 गुरुवार को मनाया जाएगा।

दशहरा में पंचक और भद्रा का साया

==========

रावण दहन पंचक या फिर भद्रा में करना अशुभ माना जाता है। इस साल ये दोनों ही रावण दहन के समय नहीं लग रहे हैं। 2 अक्टूबर को पूरे दिन भद्रा नहीं रहेगी। 3 अक्टूबर को सुबह 06:57 बजे से आरंभ होगी। वहीं पंचक की बात करें, तो अक्टूबर माह के पंचक 3 तारीख से ही आरंभ हो सकते है।

दशहरा का धार्मिक महत्व

==========

दशहरा का धार्मिक महत्व अत्यंत गहरा और प्रेरणादायक है। यह पर्व अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक माना जाता है और हिंदू धर्म में इसकी विशेष धार्मिक मान्यता है। मान्यताओं के अनुसार, दशहरा के दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था और मां दुर्गा ने महिषासुर का संघार किया था। नवरात्रि के नौ दिनों तक मां दुर्गा ने महिषासुर राक्षस से युद्ध किया और दशमी के दिन उसे पराजित किया। यह पर्व व्यक्ति को सदैव धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलाने के लिए अग्रसर करता है। ये पर्व विजय शक्ति, भक्ति और नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है। यह पर्व हमें अपने अंदर के अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह और अन्य नकारात्मक प्रवृत्तियों को नष्ट करने की प्रेरणा देता है। इसके अलावा दशहरा के दौरान शस्त्र पूजन की परंपरा निभाई जाती है।

विजयादशमी पूजन विधि

==========

विजयादशमी के दिन प्रातः स्नान के बाद घर के देवस्थान को सजाकर भगवान श्रीराम और माता दुर्गा की पूजा करें। माँ दुर्गा को लाल पुष्प, चुनरी, श्रृंगार की वस्तुएँ और नारियल अर्पित करना शुभ माना जाता है। भगवान श्रीराम की पूजा कर उनके जीवन की आदर्श कथाओं का स्मरण करना चाहिए।

इस दिन शमी वृक्ष का पूजन कर उसके पत्तों को तिलक लगाकर घर लाना शुभ माना जाता है। शस्त्र और वाहन को धोकर उन पर रोली, अक्षत और पुष्प अर्पित कर दीपक जलाएँ। इससे घर और जीवन में विजय और मंगल की शक्ति बनी रहती है।

नवरात्रि में 101 कन्याओं का पूजन और भव्य कन्या भोज

वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन एवं सर्व युवा ब्राह्मण परिषद बिलासपुर ईकाई का आयोजन, सामाजिक एकता और धार्मिक आस्था का अनूठा संगम

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। नवरात्रि का पर्व मां दुर्गा की उपासना और उनके नौ स्वरूपों की साधना का प्रतीक है। इसी पावन अवसर पर वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन एवं सर्व युवा ब्राह्मण परिषद बिलासपुर ईकाई द्वारा सामुदायिक भवन, सरजू बगीचा, बिलासपुर में 101 कन्या भोज का आयोजन बड़े ही श्रद्धाभाव और उत्साह के साथ किया गया।

इस कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष प्रभा तिवारी एवं उपाध्यक्ष छाया पाण्डेय के नेतृत्व में 200 से अधिक कन्याओं को 'मां' का स्वरूप मानकर विशेष पूजन किया गया। कन्याओं के सिर पर चुनरी ओढ़ाई गई, पैरों में रंग व माथे पर सिंदूरी टीका लगाया गया। इसके बाद उन्हें खीर, पूड़ी, सब्जी, मिठाई और फल का भोग कराया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रत्येक कन्या को उपहार देकर आशीर्वाद प्राप्त किया गया।

सामाजिक सेवा से जुड़ा विशेष अवसर

कन्या भोज के साथ ही कार्यक्रम में वीर योद्धा टाक्स फोर्स के अध्यक्ष राम सिंह ठाकुर का जन्मदिन भी मनाया गया। ठाकुर लंबे समय से छत्तीसगढ़ में गौसेवा, लव जिहाद और धर्मांतरण के विरोध जैसे सामाजिक सरोकारों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। अतिथियों ने उन्हें बधाई दी और उनकी सेवाओं को समाज के लिए प्रेरणादायी बताया।

मुख्य अतिथियों की उपस्थिति से बढ़ा आयोजन का महत्व

कार्यक्रम का शुभारंभ मां जगदम्बे की पूजा-अर्चना और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस दौरान वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन प्रदेश अध्यक्ष अरविन्द ओझा, महिला अध्यक्ष नमिता शर्मा, प्रदेश सलाहकार रज्जन अग्निहोत्री, वार्ड पार्षद अमित तिवारी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण अध्यक्ष अरविन्द दीक्षित, डॉ. आरती पाण्डेय, फिल्म कलाकार सुनील मिश्रा सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

इसके अलावा सुनीता शर्मा, शुभम तिवारी, संजय दीक्षित, टिंकू दुबे, अभिषेक शर्मा, अभिषेक तिवारी, अविनाश मिश्रा, करुणा तिवारी, पूर्णिमा दुबे, अनीता जी, रेखा दुबे, ऋचा दुबे, ओ.पी. मिश्रा, विनोद व्यास, किरण सिंह, मीनू दुबे, अर्चना शुक्ला, अर्चना तिवारी, रोशनी शुक्ला, राज शर्मा, सौरभ दुबे, सांझ तिवारी, शाश्वत तिवारी, विभा मिश्रा, मुकेश तिवारी, लक्ष्मीनारायण पांडेय, दीप, ज्योति शर्मा और कई अन्य गणमान्य नागरिकों ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनाया।

कन्या रूप की आध्यात्मिक महत्ता पर चर्चा

सभी वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में नवरात्रि में देवी के कन्या रूप की आध्यात्मिक महत्ता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कन्या पूजन केवल धार्मिक परंपरा ही नहीं बल्कि समाज में नारी सम्मान और उनकी गरिमा को बनाए रखने का भी प्रतीक है। कन्याओं के चरणों में भगवान का वास मानकर उन्हें भोजन कराना सबसे पुण्यकारी कार्यों में गिना जाता है।

सफल संचालन और आभार प्रदर्शन

पूरे आयोजन का संचालन प्रभा तिवारी ने उत्साहपूर्ण ढंग से किया। अंत में आभार प्रदर्शन उपाध्यक्ष छाया पाण्डेय ने करते हुए सभी उपस्थित जनों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ने का अवसर मिलता है। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक रहा बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाने का एक सफल प्रयास भी सिद्ध हुआ।

नवरात्रि पर शक्तिपूजा की एक अनोखी परंपरा : गोलू

अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक नवरात्रि का यह पर्व तमिलनाडु में ग्गोलूग्र के रूप में विशेष रीति से मनाया जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार वरदान के कारण महिषासुर को कोई पुरुष नहीं मार सकता था, तब माँ दुर्गा ने नौ दिनों तक चले भीषण युद्ध के अन्त में उसका वध किया।

क्योंकि इस युद्ध के समय सभी देवता और जीव-जन्तु अपनी शक्ति माँ भवानी को अर्पित करने के कारण मूर्तियों की तरह स्थिर हो गए थे, इसीलिए गोलू में मूर्तियाँ सजाने की परंपरा है।

महालय अमावस्या के दिन से गोलू की सीढ़ियाँ सजाई जाती हैं, जिसमें नीचे जीव-जंतु और ऊपर देवताओं की प्रतिमाएँ रखी जाती हैं। दीप और नैवेद्य अर्पित कर सुहागिनों को सौभाग्यचिह्न भेंट किए जाते हैं।

वास्तव में ग्गोलूग्र हमारी भारतीय संस्कृति में नारी-शक्ति के सम्मान और धर्म के प्रति प्राणिमात्र के दृढ़ आग्रह का प्रतीक है।

#श्रीरुद्रचण्डी स्तोत्रम्!! {श्रीरुद्रयामल तंत्रे}

ध्यानम् –

रक्तवर्णां महादेवी लसच्चन्द्रविभूषितां
पट् टवस्त्रपरीधानां स्वर्णालङ्कारभूषितम् ।
वराभयकरां देवीं मुण्डमालाविभूषितां
कोटिचन्द्रसमासीनां वदनैः शोभितां पराम् ॥

करालवदनां देवीं किञ्चिज्जिह्वां च लोलितां
स्वर्णवर्णमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ।
अक्षमालाधरां देवीं जपकर्मसमाहितां
वाञ्छितार्थप्रदायिनीं रुद्रचण्डीमहं भजे ॥

श्रीशङ्कर उवाच ।
चण्डिका हृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ।
अनन्तफलमाप्नोति देवी चण्डीप्रसादतः ॥ 1 ॥

घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी ।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता ॥ 2 ॥

रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी ।
तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ * ॥

गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा ।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका ॥ 4 ॥

शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशी गणभूषिता ।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥ 5 ॥

श्रीविद्या परमाविद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी ।
दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥ 6 ॥

माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा ।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥ 7 ॥

रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणे रामवरप्रदा

विजयदशमी से महके कोना...!

कालचक्र सह असंख्य युद्ध संग्राम घटे,
सत्य की ज्योत जलाए 'श्रीराम' हैं डटे।
श्रीराम व रावण के बीच यह युद्ध हुआ,
अस्त्र-शस्त्र एवं छल बल से शुद्ध हुआ।

वन प्रजातियाँ युद्धभ्यास के न अनुभव,
इस युद्ध में श्रीराम ही उनके रहें वैभव।
एक ओर रहें प्रशिक्षित अनुभवी योद्धा,
दूसरी ओर वनवासियों में अद्भुत माद्दा।

प्रभु की विश्वास नय्या अनंत सागर पार,
उत्साह रूपी शस्त्र से हो जाएँ बेड़ा पार।
प्रभु की अगुवाई में जीत गई वानरसेना,
आओ मनाए विजयदशमी महके कोना।

यह समय है बड़ा अदभुत और हैं पावन,
इस धरा पर आए न जाने कितने रावण।
युगों तक मानव बुद्धि के तर्कों से निरस्त्र,
असुरी शक्तियाँ रावण-सी होती रहें पस्त।

संजय एम तराणेकर

पपीते के दूध का जादू: स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक प्राकृतिक अमृत

प्राकृतिक उपचारों की दुनिया में, पपीते का दूध एक छिपा हुआ रत्न है, जो अक्सर फल के मुकाबले पीछे रह जाता है। यह कैरिका पपीया पौधे की पत्तियों, तनों और फलों से निकाला गया दूधिया लेटेक्स है, जो लाभकारी एंजाइमों से भरा होता है, विशेष रूप से पपेन, जो अपने चिकित्सीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है। जैसे-जैसे लोग समग्र स्वास्थ्य समाधानों की ओर बढ़ते हैं, पपीते के दूध के कई लाभों को समझना व्यक्तियों को प्राकृतिक रूप से अपनी भलाई को बढ़ाने के लिए सशक्त बना सकता है।

1. पाचन में सहायता करता है

पपीते के दूध के सबसे प्रसिद्ध लाभों में से एक इसका पाचन स्वास्थ्य का समर्थन करना है। पपेन से भरपूर, यह एंजाइम प्रोटीन को तोड़ने में मदद करता है, जिससे यह सूजन, कब्ज और अपच के लिए एक उत्कृष्ट उपाय बनता है। अपने दैनिक आहार में पपीते के दूध को शामिल करना एक स्वस्थ पाचन तंत्र को बढ़ावा दे सकता है, जिससे यह प्राकृतिक पाचन स्वास्थ्य सप्लीमेंट की तलाश करने वालों के लिए लोकप्रिय विकल्प बनता है।

2. सूजन-रोधी गुण

पपीते के दूध में पाए जाने वाले एंजाइमों में मजबूत सूजन-रोधी प्रभाव होते हैं, जो गठिया और अन्य सूजन संबंधी स्थितियों से संबंधित दर्द और सूजन को कम करने में मदद कर सकते हैं। जो लोग सिंथेटिक सूजन-रोधी उत्पादों के प्राकृतिक विकल्प की तलाश कर रहे हैं, उनके लिए पपीते का दूध एक आशाजनक समाधान है।

3. घाव भरने में मदद करता है

पपीते का दूध केवल आंतरिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद नहीं है; यह त्वचा की देखभाल में भी चमकता है। इसके एंटीमाइक्रोबियल गुण घाव भरने को तेज करते हैं, जिससे यह छोटे कट और जलने के लिए एक प्रभावी उपचार बनता है। प्रभावित क्षेत्रों पर पपीते के दूध को लगाने से, व्यक्ति इसके प्राकृतिक

उपचार क्षमताओं का लाभ उठा सकते हैं, संक्रमण के जोखिम को कम कर सकते हैं और तेजी से ठीक हो सकते हैं।

4. हृदय स्वास्थ्य का समर्थन करता है

पाचन और त्वचा की देखभाल के लाभों के अलावा, पपीते का दूध हृदय स्वास्थ्य का समर्थन करने में भी भूमिका निभा सकता है। सूजन को कम करके और संभावित रूप से कोलेस्ट्रॉल के संचय को रोककर, यह उन लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है जो प्राकृतिक रूप से हृदय स्वास्थ्य में सुधार करना चाहते हैं।

5. मस्से और वर्ट्स को हटाने में मदद करता है

पपेन के प्रोटियोलिटिक गुण पपीते के दूध में धीरे-धीरे अवांछित त्वचा वृद्धि, जैसे मस्से और वर्ट्स को तोड़ सकते हैं। कई लोग इन चिंताओं के लिए प्राकृतिक त्वचा उपचार की तलाश कर रहे हैं, और पपीते का दूध एक कोमल लेकिन प्रभावी विकल्प प्रदान करता है।

6. प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है

आवश्यक पोषक तत्वों से भरा, पपीते का दूध शरीर की रक्षा तंत्र को बढ़ाता है, जिससे यह प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले सप्लीमेंट में जोड़ने के लिए आदर्श बनता है। एक ऐसे समय में जब मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली बनाए रखना अधिक महत्वपूर्ण है, पपीते का दूध एक मूल्यवान सहयोगी हो सकता है।

7. संभावित एंटी-ट्यूमर गुण

प्रारंभिक शोध से पता चलता है कि पपीते का दूध असामान्य कोशिकाओं की वृद्धि को रोक सकता है, इसके एंजाइम गतिविधि के कारण। जबकि अधिक अध्ययन की आवश्यकता है, यह संभावित एंटी-ट्यूमर गुण इसे समग्र स्वास्थ्य रखरखाव के लिए एक आशाजनक प्राकृतिक उपाय बनाते हैं।

8. प्राकृतिक दर्द निवारक

टॉपिकल रूप से लगाया गया, पपीते का दूध कीट के काटने, जलने और मांसपेशियों में दर्द से राहत प्रदान कर सकता है। इसके एनाल्जेसिक प्रभाव इसे सिंथेटिक दर्द निवारक उत्पादों का एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं।

9. घरेलू उपयोग

व्यक्तिगत स्वास्थ्य के अलावा, पपीते का दूध घरेलू अनुप्रयोगों में भी उपयोग किया जा सकता है। यह एक प्राकृतिक कीटनाशक और एक पारिस्थितिकीय सफाई करने वाला के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे हम प्राकृतिक उपचारों के लाभों की खोज जारी रखते हैं, पपीते का दूध (रस/सैप) एक शक्तिशाली अमृत के रूप में सामने आता है, जिसके व्यापक उपयोग हैं। पाचन में सहायता करने और घाव भरने से लेकर हृदय स्वास्थ्य को सहयोग देने और त्वचा की चमक बढ़ाने तक, यह बहुउपयोगी रस प्राकृतिक स्वास्थ्य समाधान खोजने वाले हर व्यक्ति के लिए अत्यंत उपयोगी है। अपनी दैनिक दिनचर्या में पपीते के दूध को शामिल करके, आप इसके अद्भुत लाभों का अनुभव कर सकते हैं और एक स्वस्थ, अधिक समग्र जीवनशैली अपना सकते हैं।

जेब में ठूंसा लोकतंत्र! (व्यंग्य आलेख : संजय पराते)

योगी सरकार का आदेश है कि राज्य के सभी जनपदों में हर शनिवार को आम जनता की सभी समस्याओं का संपूर्ण समाधान किया जाएं। आम जनता के नाम पर ऐसे ढकोसले करना भाजपा सरकार की निशानी बन गया है। उत्तरप्रदेश में भी ऐसा ढकोसला चल रहा है। इस ढकोसले का एक प्रमाण हवा में वीडियो के रूप में वायरल हो रहा है। घटना 10 माह पुरानी, पिछले वर्ष दिसंबर की है।

दरअसल, संपूर्ण समाधान के नाम पर शनिवार का दिन राज्य भर में कलेक्टर साहब, एसपी साहब के साथ ही पुलिस प्रशासन के तमाम अधिकारी-कर्मचारियों का दिन होता है। इसलिए कि बाकी दिन ये सब बेचारे जनता के सेवक रहते हैं, जनता के दरबार में मत्था टेकते घूमते रहते हैं। इसलिए, इस दिन के लिए योगी सरकार का फरमान है कि जनता इनके दरबार में आकर मत्था टेके और इनका रुतबा देखें कि घुटकी बजाते ये कैसे समाधान करते हैं।

सो, मैनपुरी की एक पीड़िता भी अपनी बेटी के साथ पहुंच गई थाना किशनी में, जहां कलेक्टर का दरबार सजा था। आम जनता अपनी दबी-कुचली आवाज में रिरिया रही थी और कलेक्टर साहब मस्त मुद्रा में समाधान लुटा रहे थे। लेकिन कलेक्टर साहब की इस मस्तानी मुद्रा को इस विधवा महिला ने भंग कर दिया। उसे उम्मीद थी कि साहब लोग सुनेंगे और उसे न्याय मिलेगा। उसकी समस्या थी कि उसकी खेती की जमीन पर किसी बड़े आदमी ने कब्जा कर लिया है। थाने-चौकी-तहसील में वह कई बार मत्था रगड़ आई है, लेकिन हर बार भगा दी गई है। उसने कलेक्टर को अपना सेवक समझकर उसे अपनी जमीन दिलाने की मांग की।

अब बेचारी को यह नहीं मालूम था कि उसकी समस्या बहुत बड़ी है, क्योंकि उसकी जमीन पर हाथ किसी बड़े वाले ने रख दिया था। बड़ा वाला छोटा होता और विधवा से छोटा होता, तो न जाने कब का उसे दो डंडा मारकर समाधान कर दिया जाता। लेकिन बड़ा वाला छोटा नहीं था और शायद बड़े वाले कलेक्टर से भी बड़ा था। इसलिए न तो छोटों वालों से समस्या हल हो सकती थी और न उस बड़े वाले से भी, जिसने अपना यह दरबार योगी सरकार के कहने पर सजाया था। चूंकि थाने में दरबार सजा था, इसलिए पीड़िता अपने अंदर जमे थाने-तहसील के खिलाफ गुस्से को काबू करने की स्थिति में नहीं थी। बताया जाता है कि महिला ने कलेक्टर साहब के सामने जब अपनी शिकायत रखी, तो उसकी आवाज थोड़ी ऊंची थी। तभी बीच में राजस्व विभाग के अधिकारी बोलने लगे। इससे कलेक्टर साहब को समझ में आ गया कि मामला उनसे भी बड़े वाले का है। अब बड़े वाले कलेक्टर को यह अच्छा नहीं लगा कि उससे भी बड़े वाले की शिकायत उनसे ऐसी आवाज में की जाएं कि पूरे दरबार में उसकी आवाज गूंजे, इसलिए कलेक्टर साहब को उस पीड़िता का ऊंची आवाज में बोलना अच्छा नहीं लगा। दोनों में थोड़ी बहस हुई, तो पीड़िता ने और जोर से बोला कि "हम लोग भाग-भाग कर थक चुके है। सब लोग भ्रष्टाचारी और घूसखोर है। कोई सुनवाई नहीं कर रहा है। यहां भी हमारी सुनवाई नहीं हो रही है। सब पैसे लेते है, तभी हम लोगों को बोलने नहीं दिया जा रहा है।"

जनता के इस सेवक को अच्छा नहीं लगा कि उसके प्रभुत्व और बड़प्पन को कोई अदना-सी विधवा महिला चुनौती दे। यदि भरे दरबार में ऐसी चुनौतियां उसे मिलती रहे, तो न वह रहेगा और न उससे बड़ा वाला ही रह पाएगा। इसलिए शायद महिला की ऊंची आवाज पूरी व्यवस्था को ही चुनौती थी और जनता के सेवक कलेक्टर को यह मंजूर नहीं था। जमीन पर काबिज उस बड़े वाले से छोटे कलेक्टर साहब को इसका तुरंत समाधान निकालना जरूरी लगा। सो, भरे दरबार में उसने महिला और उसकी बेटी को गिरफ्तार करके जेल में डालने का हुक्म सुना दिया। अब बड़े वाले जन सेवक का आदेश था, तो छोटे जन सेवकों को तो अमल करना ही था। कोई चारा नहीं था और कोई तर्क भी नहीं कि बड़े वाले की हुक्म उदूली छोटे वाले कर सके। यह छोटे वालों के मनोनुकूल भी था। चाहते तो वे भी यही थे, लेकिन कर नहीं पाए थे। जेब में लोकतंत्र की थोड़ी-बहुत लाज रखकर चलने की जो मजबूरी थी। लेकिन बड़े वाले ऐसी किसी मजबूरी को जेब में थोड़े ही रखते है। मजबूरी में लोकतंत्र की लाज रखने जायेंगे, तो हो गया राजकाज, हो गया समस्या समाधान!!

अब बड़े वाले साहब का आदेश था, तो छोटे वालों ने भी आव देखा न ताव। यह विधवा पहले उनसे भी चपर-चपर कर चुकी थी, सो मां-बेटी को तत्काल गिरफ्तार करके जेल दाखिल कर दिया गया। वीडियो दिखा रहा है कि महिला पुलिस दोनों को ले जा रही है। कलेक्टर नाम का बड़ा वाला जीव जन सेवक था, जनता की सेवा के लिए पैदा हुआ था। लेकिन योगी-मोदी राज में तो जनता की परिभाषा तक बदल गई है। अब तो चुनाव आयोग भी जनता से कह रहा है कि पहले अपने को जनता सिद्ध करो। इस बड़े वाले जन सेवक ने भी सोचा होगा कि मैनपुरी की यह विधवा महिला, जो इतनी चपर-चपर कर रही है, हो न हो, सपाई ही होगी। अब कोई सपाई, कोई कांग्रेसियाई, कोई बसपाई या कोई कम्युनिस्ट भला जनता कैसे हो सकती है? जनता कहलाने के लिए तो भाजपाई होना जरूरी है। इसलिए जो जनता ही नहीं है, भला कलेक्टर उसकी जन सेवा क्यों और कैसे करें??

लेकिन मामला गोदी प्रशासन के गोदी मीडिया तक सीमित रहता, तो चल जाता। सोशल हो गया और सोशल मीडिया से सत्ता के गलियारों तक उसकी थू-थू करते पहुंच गया। लखनऊ को लगा कि बहुत ज्यादा हो गया है, क्योंकि अभी तक हिंदू राष्ट्र बना नहीं है और लोकतंत्र भी जेब में ही सही, लेकिन जिंदा है और सांसें ले रहा है। कलेक्टर साहब की उससे बड़े वाले साहब ने पेशी ली। इस बड़े वाले की उससे भी बड़े वाले ने पहले ही पेशी ले ली थी कि वीडियो ऐसे-ऐसे वायरल हो रहा है, सरकार की नंगाई जनता की आंखों में चुभ रही है। बड़े वाले ने अपने से छोटे कलेक्टर साहब को समझाया कि भैये,

अपनी जेब में ठूंसे लोकतंत्र का भी थोड़ा बहुत ख्याल कर लिया करो, क्योंकि अभी संपूर्ण हिंदू राज नहीं आया है। अभी तक तो केवल बुलडोजर राज तक ही पहुंचे है। लेकिन इस बुलडोजर राज को ऊपर वाला सुप्रीम कोर्ट भी मानने के लिए तैयार नहीं है। सो थोड़ा धैर्य रखो। इस समझाईश का छोटे वाले जन सेवक पर असर पड़ना ही था। उसे भी अपने जेब में ठूंसे लोकतंत्र से बाहर झांकती लोक-लाज का ख्याल आया। विधवा महिला और उसकी बेटी को छोड़ने का आदेश जारी हो गया।

यही है योगी प्रशासन का असली चेहरा, जिसे उत्तरप्रदेश की पूरी जनता आज झेल रही है। जनता की समस्याओं का समाधान करने का उसका तरीका यही है कि जनता का मुंह बंद कर दो, चाहे उसे जेल में ही क्यों न डालना पड़े। जो सरकार अपने प्रदेश में कानून का नहीं, बुलडोजर का राज स्थापित करना चाहती हो, उसे एक मिनट भी सत्ता में बने रहने का संवैधानिक हक नहीं है। यह मामला बताता है कि सरकार प्रशासन नहीं चला रही है, बल्कि प्रशासन ही सरकार को चला रहा है। वरना ऐसे बदतमीज और बददिमाग कलेक्टर को इस घटना के बाद ही तुरंत हटा दिया जाता। लेकिन वे पूरी दमदारी से अपनी जगह विराजमान थे।

यह घटना 10 माह पुरानी है। पिछले साल दिसंबर की है। तब से अब तक तीन दर्जन से ज्यादा समाधान दिवस यह सरकार मना चुकी है। लेकिन विधवा मां-बेटी की समस्या ज्यों-की-त्यों है। जमीन हड़पू इस बड़े वाले पर हाथ डालने की हिम्मत बुलडोजर बाबा की भी अभी तक नहीं हुई है।

दीवार पर लिखी इबारत साफ दिखा रही है कि वोट चोरी से बनी सरकार का संपूर्ण समाधान करने का दिन नजदीक आता जा रहा है।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष है)

हर व्यक्ति में हो संघ प्रवेश

डॉ. अंजु वेद

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं. ऐसे में यह आवश्यक है कि केवल कुछ लोग ही संघ में न जाएं अपितु हर व्यक्ति में संघ चला जाए, यानी जन-जन संघ के विचार और कार्य पद्धति से जुड़कर समाज और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें।

विगत कुछ वर्षों में भारतवर्ष वैश्विक फलक पर व्यापक हुआ है। विश्व के कोने-कोने में भारत के सांस्कृतिक स्वर सुनाई दे रहे हैं। भारत माता की रक्षा ,एकता और अखंडता के लिए समय-समय पर देश के विभिन्न संगठनों तथा व्यक्तियों द्वारा प्रयास किया जाता रहा है। उन्होंने धर्म ,संप्रदाय, रीति- रिवाज और विभिन्नताओं से ऊपर उठकर भारतीयता का एक नया संदेश राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया है। क्या आज भारतीयता के इस संदेश से सभी को नहीं जुड़ना चाहिए?

भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम के समय वर्ष 1920 का दशक विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। यही वह समय था जब भारतवर्ष सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से भारतीयता के बोध, सांस्कृतिक विरासत के उत्थान और सनातन की रक्षा के लिए जद्दोजहद कर रहा था। ऐसे संघर्ष के समय डा. हेडगेवार ने जिस संगठन की नींव रखी, वह है- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार बचपन से ही ऐसे देशभक्त थे जो राष्ट्रीय आदर्श स्थापित करना चाहते थे। राष्ट्र के उत्थान के लिए समस्त भारतीय समाज में त्याग और सेवा का बीजारोपण करना चाहते थे। उनका विचार था कि स्वतंत्र भारत का कार्यभार संभालने वाले लोगों में भारतभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण और अपनी संस्कृति के प्रति गहरा लगाव होना चाहिए। इसी ध्येय से 1925 में विजयदशमी के दिन जब इस संगठन की नींव रखी गई तब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का नया अध्याय लिखा गया। मां भारती को जगतगुरु के सिंहासन पर आरूढ़ करने का पुण्य विचार लिए यह संगठन निरंतर कार्य कर रहा है। भारत मां की सेवा और राष्ट्र को एकमात्र अपना देवता मानने वाला यह संगठन आज भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी हमेशा कहते हैं- दैव पूजा अपनी अपनी हो सकती है किंतु राष्ट्र पूजा एक ही होनी चाहिए. राष्ट्र की एकता का यह सबसे बड़ा सूत्र है।

राष्ट्र को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए प्रत्येक समाज में देशभक्त, अनुशासित, चरित्रवान और निस्वार्थ भाव से काम करने वाले लोगों की आवश्यकता रहती है। यह संगठन ऐसे ही लोगों को तैयार करने एवं संगठित करने का कार्य कर रहा है जो स्वयं की प्रेरणा से समाज और राष्ट्र के कार्य हेतु समर्पित हों। संघ का उद्देश्य किसी देश पर वर्चस्व रखने वाला भारत बनाना नहीं है अपितु यह तो भारत को संसार का सर्वश्रेष्ठ देश बनाना चाहता है। संघ भारत को केवल एक भौगोलिक क्षेत्र ही नहीं मानता है अपितु संघ का मानना है कि भारत एक जीवंत और जागृत विचार है, एक चिंतन है। भारत की एक जीवन दृष्टि है। यह जीवन दृष्टि एकात्मक और सर्वांगीण है और यही भारत की पहचान है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि - आध्यात्मिकता ही भारत की आत्मा है, भारत का प्राण है। यह भारत की आध्यात्मिकता यहां के समाज जीवन के प्रत्येक अंग में प्रकट हो, ऐसा एक उन्नत समाज हम निर्माण करना चाहते हैं। इसी के लिए उन्होंने महामंत्र दिया-उत्तिष्ठत !जागृत प्राप्य वरान्निबोधत ! अर्थात उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज देश विदेश में हजारों शाखाओं के माध्यम से सामाजिक कार्य कर रहा है। संघ के स्वयंसेवक समाज में लाखों सेवा कार्य कर रहे हैं। उपेक्षा, उपहास, विरोध तथा अवरोध को मात देते हुए संघ का कार्य निरंतर,निर्बाध गति से चल रहा है, आगे बढ़ रहा है। संघ का मानना है कि- हिंदवाः सहोदराः सर्वे...अर्थात सभी हिंदू एक ही माँ के पुत्र हैं इसलिए सभी भाई-भाई हैं। कोई ऊंचा या नीचा नहीं है। संघ का विचार भी ऐसा ही रहा है और संघ का आचरण भी ऐसा ही रहा है। संघ के तृतीय सरसंघचालक पूज्य बालासाहेब देवरस ने अपने उद्बोधन में कहा था कि-यदि अस्पृश्यता गलत नहीं है तो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है और इसको जड़मूल से उखाड़कर फेंक देना चाहिए। संघ संपूर्ण समाज का संगठन करने की बात करता है, इसलिए समाज के सभी वर्ग के लोगों का संघ में आना अपेक्षित है।

इस वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विजयदशमी के दिन अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। सौ वर्षों की इस सेवा यात्रा को आज प्रत्येक भारतवासी को समझना चाहिए। विविधताओं से भरे इस देश में विविधताओं का उत्सव मनाना चाहिए। सबकी विविधता का सम्मान करना चाहिए और मिलजुल कर साथ चलना चाहिए। हमारी परंपरा जोड़ने की और मूल्य आधारित संस्कृति पर कार्य करते रहने की रही है। संघ की कार्य पद्धति , राष्ट्रीयता और मानवीय संवेदना को समझने के लिए प्रत्येक भारतीय में संघ के वैचारिक प्रवेश की आवश्यकता है। संघ का स्वयंसेवक सामाजिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक, व्यवहारिक और नैतिक मूल्य से परिपूर्ण होता है। मातृभूमि की सेवा और उसके उत्थान के लिए निरंतर प्रयास करना उसका एकमात्र ध्येय होता है।

राष्ट्र की परिस्थितियों और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघ की मातृशक्ति भी पीछे नहीं रहती। भारत की नारी शक्ति भारतीय धर्म में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखती है। वह तेजस्वी है और अपने गौरवशाली भविष्य के प्रति भी सचेत है। ₹राष्ट्र सेविका समिति₹ नाम का संगठन मातृशक्ति के साथ संघ के कार्य को गति देने के लिए ही बनाया गया है। मातृशक्ति अपने गृहस्थ जीवन के साथ-साथ राष्ट्र धर्म का भी पालन कर रही हैं। हमारी माताएँ और बहनें विभिन्न सेवा कार्यों में योगदान दे रही है। विभिन्न सेवा कार्यों में लाखों पुरुष और महिला कार्यकर्ता कंधे से कंधा मिलाकर समाज और राष्ट्र की उन्नति को गति दे रहे हैं।

भारत की युवा पीढ़ी में संघ को लेकर जो भ्रम का वातावरण बनाया गया था, उसका निराकरण तभी संभव है जब संघ की कार्य पद्धति को सूक्ष्मता से समझा जाए। वर्षों से संघ पर अनेकानेक आरोप मढ़े गए। संघ पर प्रतिबंध लगे किंतु संघ का एकमात्र उद्देश्य राष्ट्रसेवा ही रहा है। नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे... प्रार्थना का गायन करते समय संघ का कार्यकर्ता सतर्क, समर्पित और राष्ट्र सेवा के प्रण में भाव विभोर हो जाता है और कह उठता है .. हे मुझे प्रेम करने वाली मातृभूमि, मैं तुझे नमस्कार करता हूं। तूने मेरा सुख से पालन पोषण किया है। हे पुण्य धरा में बारंबार तुम्हें नमस्कार करता हूं। तेरे ही कार्य के लिए हमने कमर कसी है और इसकी पूर्ति के लिए हमें अपना आशीर्वाद देती रहना। हमें ऐसी शक्ति देना कि हमें कोई चुनौती न दे सके आदि आदि। यह राष्ट्र वंदना प्रत्येक युवा को स्मरण कराती है कि अपनी जन्मभूमि के प्रति त्याग और सेवा का भाव रखना है और उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना है। धार्मिक और सांस्कृतिक विभिन्नता इस एकता के आड़े नहीं आनी चाहिए। देश सदैव प्रथम रहना चाहिए। देश की एकता ,अखंडता ,सहिष्णुता और समरसता को बनाए रखने में हमें अपना योगदान देते रहना चाहिए।

संघ के 100 वर्ष इस बात का संकेत करते हैं कि कठोर अनुशासन ,सामूहिक चेतना और राष्ट्र को समर्पित विचारधारा देश के लिए कितनी आवश्यक है। संपूर्ण समाज को जोड़कर अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान कराते रहना और सामूहिक प्रयास को लेकर आगे बढ़ते रहना ही संघ का उद्देश्य है। भारत के वैभव और ज्ञान भंडार को विश्व पटल पर स्थापित करना और उसके अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष करते रहना ही संघ है।

लेखिका एवं कथाकार

मन का रावण

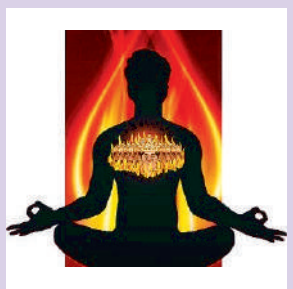

लो फिर पुतला फूँककर,
गजब किया संहार।
मन के रावण दुष्ट से,
गया आदमी हार।।

धधक उठी लपटें बड़ी,
गूँजे जय-जयकार।
भीतर जो था अंधकार,
रहा वही साकार।।

बाहरी रावण राख हो,
मन का जीवित शेष।
अभिमान, क्रोध, लोभ में,
हर पल रहे विशेष।।

धर्म की बातें हों मगर,
कर्म बने विश्वास।
राम की मर्यादा कहाँ,
ढूँढे जग में पास।।

सच का दीपक जल उठे,
मन से मिटे अंधकार।
तभी मिलेगा जीत का,
सच्चा हमें उपहार।।

डॉ० सत्यवान सौरभ

कुछ मानवों का जन्म इतिहास रचने के लिए होता है

नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

बीते 17 सितंबर को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी 75 साल के हो गए। 17 सितंबर को ही बहुत सारे लोग 75 साल के हुए होंगे लेकिन उनमें से किसी ने भी इस गरिमा को प्राप्त नहीं किया जितना नरेंद्र मोदी ने किया। इसका कारण साफ है कि ईश्वर कुछ लोगों को ही बड़े काम के लिए धरती पर भेजते है। नरेन्द्र मोदी का नाम जब गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में प्रस्तावित हुआ था, उस समय तक मोदी को विरले लोग ही जानते थे। संघ के प्रचारक के तौर पर उनकी एक छवि थी जिसके कारण उनको गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में गद्दी सौंपी गई थी। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते उनकी कार्यशैली का लोगों को आभास हुआ। गुजरात को उन्होंने देश का अग्रणी राज्य अपने 15 साल के कार्यकाल में कर दिखाया। मुख्यमंत्री रहते हुए उन पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं लगा बल्कि उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों पर भी भ्रष्टाचार का कोई इल्जाम नहीं लगा।

गोधरा कांड के बाद उनकी छवि एक हिंदूवादी नेता के तौर पर दृष्टिगोचर हुई। भारत की राजनीति में राष्ट्रीय स्तर पर एक हिंदूवादी नेता के रूप में उदय हुआ। बीजेपी को एक हिंदूवादी नेता का चेहरा नरेंद्र मोदी के रूप में दिखाई दिया। गुजरात में वे फायरब्रांड नेता के रूप में स्थापित थे जिसका फायदा बीजेपी को उनको प्रधानमंत्री के तौर पर प्रस्तुत करने में हुआ। गुजरात मॉडल देश भर में स्वीकार हो चुका था और लोगों को ये लगने लगा था कि जो व्यक्ति गुजरात को अग्रणी राज्य बना सकता है तो वह देश को क्यूं नहीं बना सकता , इसलिए 2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के चेहरे को देखकर जनता ने अपना वोट दिया।

2024 के चुनाव में बीजेपी को कम सीट आने का कारण यह नहीं था कि मोदी जी लोकप्रियता में कोई कमी आई थी बल्कि हुआ ये कि 400 पार के नारे ने लोगों को ये आश्वस्त कर दिया कि बीजेपी को 400 सीट आ ही रही है तो मैं वोट डालने क्यूं जाऊं। इस गलतफहमी में बीजेपी के कट्टर समर्थक वोट डालने नहीं गए इसका फायदा विपक्षी दलों को मिल गया। नरेंद्र मोदी जब से देश के प्रधानमंत्री बने, तब से आज तक ये देश प्रगति के रास्ते पर ही चल रहा है। उस आदमी का विजन इतना व्यापक है कि आम आदमी इसे सोच भी नहीं सकता । वर्षों से ग्रामीण महिलाएं खुले में शौच जाकर अपमान का सामना करती थीं. उनकी इस सोच ने कि घर घर शौचालय होना चाहिए , पूरे देश की दिशा ही बदल दी। सफाई अभियान ने लोगों में सफाई के प्रति जागरूकता पैदा की। बहुत से लोग सरकार द्वारा दिये जाने वाले मुफ्त के अनाज पर सवाल उठाते हैं। आज जो अनाज सरकार द्वारा किसानों से खरीदा जाता है उसके लिये सरकार के पास प्रर्याप्त भंडारण की सुविधा नहीं है। करोड़ों टन अनाज खुले में पड़ा रहता है। चूहे उस अनाज को खा जाते हैं या बरसात में भीगने से सड़ जाता है। इस चीज को इस व्यक्ति ने देखा और बर्बाद होने से अच्छा है कि किसी के काम आए, इसलिए ये काम सरकारी स्तर पर होने लगा। 5 किलो अनाज से कुछ होता नहीं है लेकिन अगर देश के नागरिकों को ये अनाज मिल जाता है तो ये बर्बाद होने से अच्छा है। ये मोदी जी की अद्भुत सोच थी। मेरा तो मानना है कि ये अनाज हर भारतीय को मिलना चाहिए।

उसी तरह आयुष्मान योजना भी मोदी जी की सोच थी लेकिन इसकी पात्रता हर भारतीय को मिलना चाहिए। देश के सभी नागरिकों को ये सुविधा मिलनी चाहिए और ये मिल भी सकती है बशर्ते इसमें कोई धोखाधड़ी नहीं हो। अभी आयुष्मान योजना के तहत इलाज तो किया जाता है लेकिन इसमें केवल निजी अस्पतालों को फायदा होता है। वास्तविक इलाज में जहाँ खर्च 25 हजार का होता है लेकिन बिल का भुगतान एक लाख रुपये का हो जाता है। आयुष्मान योजना से केवल निजी अस्पताल फल फूल रहें हैं। आम आदमी को इसका लाभ नहीं मिल पाता है। अगर इलाज ईमानदारी से की जाए तो देशभर के सभी नागरिकों का इलाज उसी फंड से किया जा सकता है। हमारे देश में भ्रष्टाचार इस कदर व्याप्त है कि क्या स्कूल, क्या अस्पताल, किसी भी जगह को भ्रष्टाचारियों ने नहीं छोड़ा है। हर जगह मोदी जी स्वयं नहीं आ सकते हैं। इसके लिए हरेक आदमी को ईमानदार होना होगा। एक आदमी केवल रास्ता दिखा सकता है लेकिन चलना तो आप को ही होगा।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चला कर ये सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक नेतृत्व कुशल हो तो हम कोई भी मुकाबला जीत सकते हैं। अभी अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने भारत पर टैरिफ लगाया लेकिन मोदी जी ट्रम्प के आगे नहीं झुके .अलबत्ता ट्रम्प को झुकना पड़ा और आने वाले दिनों में अतिरिक्त टैरिफ वापस लेने को ट्रम्प तैयार हैं। ये मोदी जी की कुशल कार्य क्षमता है। वह दिन भी याद है जब मोदी जी इसरो के सेंटर में थे और वह मिशन फेल हो गया था. उस समय रात के तीन बजे होंगें। उसके बाद वे वहाँ से चले गए लेकिन सुबह आठ बजे पुनः उसी ऊर्जा के साथ वहां पहुंचे थे। उनके चेहरे पर किसी तरह की थकान के भाव नहीं थे। आखिर ये आदमी इतनी ऊर्जा इस उम्र में कैसे ले आता है। जो आदमी अपनी मां की मृत्यु के बाद भी उसी दिन काम पर लौट जाए, उसका क्या कहना। मोदी जी ने अपनी हिंदूवादी सोच को कभी छुपाया नहीं। श्रीराम मंदिर के शिलान्यास से लेकर उसके उद्घाटन समारोह में शामिल होकर ये साबित कर दिया कि उनकी विचारधारा साफ है। मोदी जी के पहले कोई भी सरकार धारा 370 को हटाने के बारे में सोच नहीं सकती थी लेकिन मोदी जी ने एक झटके में इसे खत्म कर दिया। तीन तलाक को आसानी से खत्म कर दिया। वक्फ बोर्ड की मनमानी पर विराम लगवा दिया। सुप्रीम कोर्ट ने भी कानून को निरस्त नहीं किया. केवल कुछ प्रावधानों पर पूरी सुनवाई होने तक रोक लगाई है। अपने11साल के कार्यकाल में मोदी जी ने देश के लिए अद्भुत काम किया है और ये कार्य निरंतर जारी हैं और रहेंगे । ऐसे मानव को महामानव कहना उपयुक्त होगा। उम्मीद है अपनी इस कार्यशैली से मोदीं जी इस देश को नई ऊचांइयों पर ले जाएंगे। कुछ लोग ईर्ष्यावश उनकी आलोचना जरूर कर सकते हैं लेकिन मोदी जी ने अपने देश का नाम विश्व स्तर पर ऊंचा किया है ।

"एनआईआईटी से वैशाली शर्मा द्वारा प्रदान किए गए प्रमाणपत्र"

23 सितंबर 2025 को फन वे लर्निंग सेंटर पर वैशाली शर्मा द्वारा साइबर क्राइम के ऊपर एक पाठ्यक्रम आयोजित किया था जिसमें उस संस्था के अध्यापिकाओं और अन्य को जानकारी दो गई थी, आज उस पाठ्यक्रम में जिन लोगों ने ज्ञान अजित किया था उन्हें स्वयं वैशाली शर्मा ने अपनी हाथों से प्रमाणपत्र प्रदान किए आज फन वे लर्निंग सेंटर में आयोजित प्रमाणपत्र वितरण समारोह में शिक्षकों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षार्थियों की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया और संकाय के समर्पित मार्गदर्शन को मान्यता दी गई, जिससे प्रोत्साहन और शैक्षणिक उत्कृष्टता की भावना को बढ़ावा मिला।

साभार : एनएफ डीएल फतेह नगर

आप सभी की जानकारी हेतु

1 अक्टूबर, 2025 से, आधार कार्ड में सुधार के लिए आधार नामांकन केंद्र पर सुधार के लिए लगने वाले शुल्क का विवरणः

आधार नामांकन केंद्र पर

1. जनसांख्यिकीय अपडेट (जैसे नाम, पता, जन्मतिथि, लिंग, मोबाइल नंबर या ईमेल आईडी के लिए) ₹75 और

2. बायोमेट्रिक अपडेट (उंगलियों के निशान, आँख की पुतली, फोटो) के लिए ₹125।

3. बायोमेट्रिक और जनसांख्यिकीय अपडेट की संयुक्त लागत 125.

यह शुल्क आधिकारिक केंद्रों पर अपडेट के लिए हैं;

4. ऑनलाइन जनसांख्यिकीय अद्यतन के लिए ₹50 का शुल्क लिया जाता है, तथा ऑनलाइन दस्तावेज़ अद्यतन निःशुल्क हैं।

फ़न वे लर्निंग एनजीओ में पर्व डांडिया के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया

स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम की ब्रांड एम्बेसेडर बनीं सारा अली खान

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। हाइजेनिक रिसर्च इंस्टीट्यूट प्राइवेट लिमिटेड के प्रमुख ब्रांड स्ट्रीक्स ने बॉलीवुड की लोकप्रिय अभिनेत्री सारा अली खान को अपना नया ब्रांड एंबेसडर बनाने की घोषणा की है। इसके साथ ही ब्रांड ने अपना नया टीवीसी कैंपेन फ्रिज गॉन, स्मूथ शाइन ऑन लॉन्च किया है, जिसमें सारा अपनी चुलबुली और आत्मविश्वासी पर्सनैलिटी के साथ दिखाती हैं कि कैसे स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम कुछ ही सेकंड्स में बालों को स्मूद, चमकदार और फ्रिज़-फ्री बना देता है।

अपनी जिंदादिल पर्सनालिटी, यूथफुल चार्म और सहज स्टाइल के साथ, सारा अली खान स्ट्रीक्स के उस विश्वास को बखूबी दर्शाती हैं कि हर महिला 'शाइन ऑन' कर सकती है — यानी आत्मविश्वास के साथ चमक सकती है। उनका नैचुरल एलीगेंस और रिलेटेबल अंदाज़ उन्हें स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम का परफेक्ट फेस बनाते हैं। यह ब्रांड बालों को खूबसूरत बनाने की क्षमता के लिए मशहूर है। इस साझेदारी को सेलिब्रेट करने के लिए स्ट्रीक्स ने नया टीवीसी कैंपेन 'फ्रिज गॉन, स्मूद ऑन' लॉन्च किया है, जिसमें सारा मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म में रोजाना के पलों—जैसे कि हवा भरी छतों या व्यस्त सफर—जहां बाल अचानक उलझ (फ्रिज़) सकते हैं, के जरिये दिखाया गया है कि कैसे बालों में बस जरा सा स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम लगाते ही महज सेकंड में बाल स्मूद, ग्लॉसी और कैमरा-रेडी बन जाते हैं। कैंपेन के जरिये यह बताया गया है कि यह महिलाओं के लिए बालों को खूबसूरत और चमकदार बनाए रखने का एक भरोसेमंद समाधान है, ताकि वे हर समय आत्मविश्वास के साथ 'शाइन ऑन' कर सकें।

प्रियंका पुरी, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट-मार्केटिंग, एचआरआईपीएल ने कहा, 'सारा अली खान स्ट्रीक्स मूवमेंट के लिए बिल्कुल सही चेहरा हैं। हेयरकेयर अब सिर्फ प्रोडक्ट्स तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्वास और रोज़मर्रा के स्टाइल का हिस्सा बन गया है। टीवीसी 'फ्रिज गॉन, स्मूद ऑन' दिखाता है कि फ्रिज़ किसी के भी बालों में कहीं भी आ सकता है, लेकिन स्ट्रीक्स शादन हेयर सीरम इसका

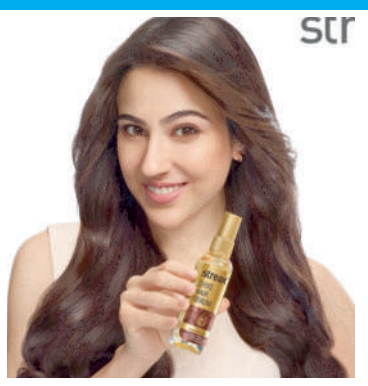

आसान और तेज़ समाधान है। महज कुछ सेकंड्स में यह फ्रिज़ दूर कर बालों को स्मूद, चमकदार और कैमरा-रेडी बना देता है। सारा के साथ यह कहानी और भी दिलचस्प हो हो गई है। हम देशभर की महिलाओं को हर दिन आत्मविश्वास और स्टाइल के साथ 'शाइन ऑन' करने के लिए प्रेरित करने के लिए तैयार हैं।'

सारा अली खान ने कहा, "मेरे लिए स्टाइल तभी मायने रखता है जब वह नैचुरल और रिलेटेबल हो। मुझे खुशी है कि मैं स्ट्रीक्स के साथ जुड़ रही हूँ, जो हर लड़की को आत्मविश्वास के साथ 'शाइन ऑन' करने के लिए प्रेरित करता है। स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम मेरे लिए परफेक्ट है—यह आसान है, फास्ट है और बालों को तुरंत स्मूद और ग्लॉसी बना देता है।"

अखरोट के तेल और विटामिन ई से युक्त स्ट्रीक्स शाइन हेयर सीरम को अपने इंस्टैंट शाइन, स्मूदनेस और फ्रिज-फ्री रेडिएंस के लिए जाना जाता है। यह हर दिन महिलाओं को खूबसूरत और आत्मविश्वासी महसूस करने में मदद करता है—चाहे वो कोई कैज़ुअल आउटिंग हो या ग्लैमरस अवसर।

स्ट्रीक्स हेयर सीरम रेंज में फ्रिज कंट्रोल हेयर सीरम, हीट प्रोटेक्ट स्पे और मॉइश्चर बूस्ट स्पे भी शामिल हैं, जो अलग-अलग बालों की जरूरतों के लिए विशेष समाधान पेश करते हैं। ये सभी प्रोडक्ट्स प्रमुख ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफॉर्म्स पर आसानी से उपलब्ध हैं, जिससे प्रोफेशनल क्वालिटी हेयरकेयर पाना हर किसी के लिए आसान हो गया है।

दिव्या पाटिल ने 'माना के हम यार नहीं' में लीड भूमिका निभाने को लेकर कही दिल की बात!

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस जल्द ही अपना बहुप्रतीक्षित नया शो 'माना के हम यार नहीं' लॉन्च करने जा रहा है, जिसमें मंजीत मक्कड़ कृष्ण के रोल में और दिव्या पाटिल खुशी के रोल में दिखाई देंगी। कहानी एक कॉन्ट्रैक्ट मैरिज के दिलचस्प कांसेप्ट के इर्द-गिर्द घूमती है, जो दो बिल्कुल अलग इंसानों को करीब लाती है। खुशी, जो 'इस्त्रीवाली' है और कपड़े इस्त्री करके अपना जीवन चलाती है, अपने परिवार की पूरी जिम्मेदारी संभाले हुए है और ताकत और सहनशीलता का प्रतीक है। वहीं, कृष्णा को एक चालाक, स्ट्रीट स्मार्ट और ठग के रूप में पेश किया गया है, जो अपनी अनोखी तरकीबों से जिंदगी में अपने रास्ते बनाता है। *खुशी का रोल निभा रही दिव्या पाटिल ने शो का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी जताई। उन्होंने कहा, * "मुझे सच में बहुत खुशी है कि मैं स्टार प्लस के शो का हिस्सा बनी और खुशी का लीड रोल निभा रही हूँ। यह मेरे लिए एक बड़ा मौका है, और मैं उत्साहित भी हूँ और थोड़ी नर्वस भी क्योंकि यह किरदार बहुत चैलेंजिंग है। यह शो गणपति के समय साइन करना और भी खास लगा। यह इतनी पॉजिटिव शुरुआत के साथ शुरू हुआ, और मेरा परिवार और मैं इससे बहुत खुश हैं।" अपने किरदार के बारे में आगे बात करते हुए, उन्होंने कहा, * "जब मैंने पहली बार स्क्रिप्ट सुनी, तो मुझे किरदार और कहानी की गहराई ने बहुत खींचा। खुशी एक मजबूत, निडर और मेहनती लड़की है, जो अपने परिवार के लिए खड़ा होना जानती है, मुश्किलों का सामना करती है और अपने अपनों की परवाह करती है।

मां दुर्गा के सभी स्वरूपों में मां काली का विशिष्ट स्थान : डॉ. केशवाचार्य

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। गोपीनाथ बाज़ार स्थित श्रीकृष्ण काली पीठ में शारदीय नवरात्र महोत्सव के उपलक्ष्य में शतचंडी महायज्ञ अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ चल रहा है।जिसमें अनेकों वैदिक विप्रों के द्वारा दुर्गा सप्तशती के पाठ व हवन आदि के कार्यक्रम हो रहे हैं।

श्रीकृष्ण काली पीठाधीश्वर डॉ केशवाचार्या महाराज ने बताया है कि श्रीकृष्ण काली पीठ अत्यंत प्राचीन व सिद्ध स्थली है।मां दुर्गा के सभी स्वरूपों में मां काली का विशिष्ट स्थान है।तंत्र शास्त्र में मां काली के जिन आठ स्वरूपों का वर्णन किया गया है,उन्ही में से एक श्रीकृष्ण काली हैं। जो कि श्रीकृष्ण काली पीठ में विराजमान हैं।उनका यह दिव्य व भव्य विग्रह 5 फीट ऊंचा है।उनका मुखारविंद और श्री चरण भगवान श्रीकृष्ण जैसे हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि श्रीकृष्ण काली पीठ में विराजित मां काली की प्रतिमा डॉ. केशवाचार्य महाराज के पूर्वजों को सैकड़ों वर्ष यमुना किनारे केशीघाट पर पृथ्वी के अंदर से खुदाई के दौरान प्राप्त हुई थी।जिसे मन्दिर में स्थापित करके उनकी पूजा-अर्चना प्रारम्भ की गई।इस प्रतिमा में भगवान श्रीकृष्ण मां काली के रूप में विराजित हैं।इसीलिए इस प्रतिमा को श्रीकृष्ण काली कहा जाता है।

युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा ने कहा कि श्रीकृष्ण काली पीठ की श्रीधाम वृन्दावन में अत्यधिक मान्यता है।क्योंकि यह भगवान श्रीकृष्ण एवं मां दुर्गा का मिश्रित स्वरूप हैं।इसीलिए इसके दर्शन करने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों से असंख्य भक्ति श्रृद्धालु यहां आते हैं। इस अवसर पर श्रीमती कल्पना आचार्य, श्रीमती वसुधा गोपाल एवं आदित्य आचार्य आदि की उपस्थिति विशेष रही।

सेवा को जीवन का मूल मंत्र बनाएं: डॉ. अनिल अग्रवाल

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 में कुंभकरण- मेघनाथ व अहिरावण वध कि लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्पेशल इफेक्ट, एल ई डी, कंप्यूटरराइड यंत्र व लेजर लाइट के उपयोग से युद्ध कौशल आकर्षण का केंद्र बना। भूतों और राक्षसों का उन्माद डरावना व अद्भुत कौशल से परिपूर्ण था। काली माता कि मंच पर उपस्थिति देख दर्शक रोमांचित हो गए। उन्होंने 11फुट लंबा और 11किलो वजन का मुकुट पहन रखा था। युद्ध के दौरान तलवार से तलवार और तीर से तीर टकराने पर चिंगारी निकलती हुई दिखाई दी।

आज की लीला का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक के प्रांत संचालक डॉक्टर अनिल अग्रवाल, भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग के द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ अनिल अग्रवाल ने कहा कि सेवा को जीवन का मूल मंत्र बनाएं। इसके जीवंत प्रेरणा हमें श्रेष्ठतम सेवा व्रती स्वर्गीय मांगेराम गर्ग से मिलती है जिन्होंने अनेकों संस्थाओं का सृजन समाज सेवा के लिए किया। उनमें से आदर्श रामलीला कमेटी भी एक है जो कि रामलीला के साथ सेवा का प्रकल्प भी चलाती है। सतीश गर्ग ने कहा कि रामायण का प्रत्येक भाग प्रेरणादायक है। श्री राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ, कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर मर्यादित जीवन जीना चाहिए। अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री अनिल यादव ने जल संरक्षण व डेंगू रोकथाम के लिए दर्शकों को जागरूक किया। कार्यक्रम में देवराज पूर्व पार्षद व स्वागत अध्यक्ष, नितिन बत्रा लीला निदेशक, प्रदीप गोयल कोषाध्यक्ष, चंदन शर्मा मेला अध्यक्ष, संदीप गुप्ता व्यवस्था अध्यक्ष, प्रवीण कुमार सिंह, विजय बंसल, राहुल गुप्ता, मनोज गुप्ता , बिट्टू हार्मिलापी , सुरेश जैन, राजेंद्र खंडेलवाल, उषा गोयल, रजनी गुप्ता, आशीष मित्तल उपस्थित रहे।

विधवा महिला पांच बच्चों के साथ टूटे घर में रहने को मजबूर

आवास योजना के लिए पात्र होने के बावजूद प्रशासनिक उदासीनता के कारण उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

सहावर। थाना क्षेत्र के गांव बधारी कलां की रहने वाली विधवा महिला मुन्नी देवी सरकार की तमाम योजनाये होने के बाद भी जर्जर आवास में रहने को मजबूर है। मुन्नी देवी के पति की मौत लगभग 6 माह पूर्व सांस के रोग की वजह से हो गयी। विधवा महिला का जीवन यापन करना बहुत मुश्किल है। विधवा महिला गाय का दूध को बेचकर घर का गुजारा चलाती है। लेकिन जब बारिश आती है। तो सोने के लिए छत तो है लेकिन पूरी तरह जर्जर हालत में है। जो हादसे को न्योता दे रही है। जिससे कभी भी हादसा हो सकता है। ऐसे में मुन्नी देवी के पांच बच्चे भी हैं। जिसमे प्रशा 3 वर्ष, प्रांशी उम्र 6 ,रचना 14, सुषमा 15 व प्रशांत की उम्र 16 है, आवास योजना के लिए पात्र होने के बावजूद प्रशासनिक उदासीनता के कारण उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। मुन्नी देवी ने बताया कि उन्होंने कई बार ग्राम प्रधान से मदद मांगी। लेकिन न तो पिछले ग्राम प्रधान ने और न ही वर्तमान प्रधान ने उनकी समस्या पर ध्यान दिया।मुन्नी देवी ने प्रशासन से एक आवास दिलाये जाने की माँग की है।

उत्पादकता आधारित बोनस में भेदभाव के खिलाफ आंदोलन करेंगे रेल कर्मचारी : राकेश मणि

सुनील बाजपेई

कानपुर। रेल मजदूर यूनियन के उपाध्यक्ष, राकेश मणि पाण्डेय ने रेल व भारत सरकार पर रेल कर्मचारियों को उत्पादकता आधारित बोनस देने के परिप्रेक्ष्य में धोखा देने व गुमराह करने का आरोप लगाया है। उन्होंने यहां बताया कि रेलवे कर्मचारियों को विगत वर्षों की तुलना में उसके सापेक्ष ना केवल कम धनराशि बोनस की निर्धारित की गयी है बल्कि तमाम कर्मचारियों को इससे वंचित भी कर दिया गया है।

रेल मजदूर यूनियन के उपाध्यक्ष, राकेशमणि पाण्डेय ने कहा कि ऐसा करना दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं बल्कि रेल कर्मचारियों के साथ सरकार द्वारा एक क्रूर मजाक भी है। इस अन्याय के खिलाफ रेल मजदूर यूनियन भारत सरकार व रेल मंत्रालय के प्रति निन्दा प्रस्ताव भी पारित किए जाने की जानकारी देते हुए रेल मजदूर यूनियन के उपाध्यक्ष, राकेशमणि पाण्डेय ने बताया कि इस पारित प्रस्ताव के तहत रेलवे के सभी जोनों में विरोध प्रदर्शन व ज्ञापन दिये जायेंगे।

रेल मजदूर यूनियन के उपाध्यक्ष राकेशमणि पाण्डेय व क्षेत्रीय महामंत्री लक्ष्मण प्रसाद जायसवाल ने एक संयुक्त विज्ञप्ति में रेल मजदूर यूनियन की ओर से रेलवे और भारत सरकार की वादा खिलाफी व धोखा देने की कटु निन्दा करने के साथ-साथ पूरे भारत के रेलवे जोन में इसके खिलाफ संघर्ष किये जाने के निर्णय की भी घोषणा की और बताया कि दिए गए निर्णय के अनुरूप रेलवे कर्मचारियों द्वारा काला फीता बांधकर कार्य करने, अवकाश के समय पर गेट मीटिंग कर निन्दा प्रस्ताव पास करने तथा आम जनता को सरकार द्वारा बरती जा रही अनियमित्ता और रेल कर्मचारियों के साथ दोहरी नीति का कृत्यों की जानकारी आम जनता को भी दी जायेगी।

उन्होंने बताया कि इस सम्बन्ध में मान्यता प्राप्त रेल कर्मचारियों की यूनियनों द्वारा भी उदासीनता अपनाने, रेल कर्मचारियों के साथ हो रहे अन्याय पर मूक दर्शक बने रहने और संगठन को सरकार के हाथों गिरवी रखने के खिलाफ आवाज उठाने के साथ ही रेलवे कर्मचारियों को आगाह भी किया जायेगा।

रेल मजदूर यूनियन के उपाध्यक्ष राकेशमणि पाण्डेय व क्षेत्रीय महामंत्री लक्ष्मण प्रसाद जायसवाल ने यह भी कहा कि मान्यता प्राप्त यूनियनें केवल स्वयं स्वयंभू चाटूकारता के चलते सरकार के संरक्षण में खड़ी रहती हैं और इसीलिए विगत 08 बार 80 प्रतिशत हड़ताल के पक्ष में वोट लेकर अन्तिम समय में हड़ताल से अलग होने का निर्णय लेकर कर्मचारियों के हितों पर सरे आम कुठाराघात किया है।

राकेशमणि पाण्डेय व लक्ष्मण प्रसाद जायसवाल ने सरकार व रेल मंत्रालय से उत्पादकता आधारित वास्तविक बोनस का आकलन करने और उसे परिवर्तनीय बोनस के रूप में भुगतान किये जाने की भी जोरदार मांग करते हुए बताया कि आम रेल कर्मचारियों को भी इस सम्बन्ध में जागरूक करने का कार्य रेल मजदूर यूनियन करेगी और इसके लिए प्रत्येक माह एक सप्ताह का जन जागरण 31 मार्च तक चलाया जायेगा।

दोनों नेताओं ने बताया कि इसके पश्चात दिल्ली स्थित रेल भवन पर एक विशाल रैली का भी आयोजन किया जायेगा, जिसमें रेल कर्मचारियों की वास्तविक व ज्वलन्त मांगों पर निराकरण के लिए ज्ञापन सौंपे भी जाएंगे। ताकि रेलवे की वास्तविक उत्पादकता बोनस का लाभ समुचित रूप सभी कर्मचारियों को मिल सके।

ग्लोबल लिटरेरी फेस्टिवल 2025 संपन्न

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। तीन दिवसीय ग्यारहवां ग्लोबल लिटरेरी फेस्टिवल 2025 नोएडा के फिल्म सिटी स्थित मारवाह स्टूडियो में साहित्यिक और सांस्कृतिक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव में भारत सहित विभिन्न देशों के राजदूतों, लेखकों, कवियों, साहित्यकारों और प्रबुद्धजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साहित्यिक महोत्सव की अध्यक्षता करते हुए एएफटी यूनिवर्सिटी ऑफ मीडिया एंड आर्ट्स के कुलाधिपति डॉ. संदीप मारवाह ने कहा साहित्य अपनी राष्ट्र की संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने का सबसे सशक्त माध्यम है। नवलेखन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।महोत्सव निदेशक सुशील भारती ने कहा कि शरीर, मस्तिष्क, इंटरनेट और आत्मा का संगम ही समाज को सार्थक दिशा दे सकता है।

विदेशी राजदूतों और प्रख्यात लेखकों की उपस्थिति से गरिमा बढ़ी

महोत्सव में कोमोरोस संघ के महावाणिज्यदूत, एल गंजू, पनामा के राजदूत अलोंसो कोरेया मिगुएल, फिलिस्तीन के राजदूत,अब्दुल्ला एम ए अनुशावेश,तिमोर लेस्ते की राजदूत कार्लिटो नूनस,वेनेजुला की राजदूत रॉड्रिग्स गोंजालेस, क्यूबा के राजदूत,जुआन कार्लोस मार्सन एगुइलेरा,ऑस्ट्रिया दूतावास के सांस्कृतिक निदेशक माइकल , बांग्लादेश उच्चायोग के प्रेस मंत्री फैजल महमूद,भारत निर्वाचन आयोग के सुजीत कुमार एवं ख्यातिनाम साहित्यकार एवं उद्यमी डॉ.बी एल गौर, प्रख्यात लेखक डॉ.प्रेम भारद्वाज ज्ञानभिक्षु, लेखक नरेंद्र नागदेव, लेखिका सुश्री सोना शर्मा,आभा अयंगर, वंदना राग, डॉ.गीतांजलि नीरज अरोड़ा, उपन्यासकार तन्मय दुबे, कवि-लेखक एवं आईएएस मुकुल कुमार, डॉ. संजीव जोशी आईपीएस,अभिताभ श्रीवास्तव सहित अनेक प्रख्यात लेखक, साहित्यकार उपस्थित रहे।

पुस्तकों की आवश्यकता पर विमर्श और कवि सम्मेलन

पहले दिन "सोशल मीडिया के युग में क्या अभी भी पुस्तकों की आवश्यकता है ?"विषय पर संगोष्ठी हुई।दोपहर में प्रतिभा जौहरी और निशा भार्गव के आतिथ्य में कवि सम्मेलन और सांय सत्र में गीतकार शैलेन्द्र, साहिर और मजरूह के गीतों की प्रस्तुतियां हुईं।

दूसरे दिन साहित्य पर चर्चा और सम्मान समारोह

साहित्य क्या है ?"विषय पर गंभीर चर्चा में देश-विदेश के विद्वानों ने विचार रखे।विभिन्न विधाओं के साहित्यकारों को डॉ . सविता चड्ढा,पवन माथुर,अवधेश सिंह, शैलबाला अग्रवाल,मीनाक्षी जोशी,सुभाष नीरव, ओम सपरा को सूरज प्रकाश मारवाह साहित्य रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया।

मुशायरे ने श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

मुशायरे में एडमिरल डॉ.खुर्रम नूर ,कवि सैयद नजम इकबाल, फरीद अहमद फरीद, जफर कानपुरी, शरफ नानपारवी, शायरा रचना भाटिया ने एक से एक बेहतरीन प्रस्तुति देकर मुशायरा में श्रोताओं को मंत्र मुक्त कर दिया।अतिथि के रूप में शेयर रेहाना अब्बास, प्रख्यात लेखिका,गजलकारा ममता सोनी, प्रसिद्ध लेखिका कवित्री डॉ. गीतांजलि नीरज अरोरा गीत, कवित्री रजनीश गोयल मौजूद रही।

तीसरे दिन 'राष्ट्रीय अस्मिता में साहित्य की भूमिका' पर चर्चा

लेखिका सोना शर्मा, वंदना राग, लेखक रवि वल्लूरी, विवेक मिश्र समेत अंतरराष्ट्रीय अतिथियों ने विचार व्यक्त किए।दोपहर में "अटल बिहारी अवार्ड फॉर द प्रमोशन ऑफ आर्ट एंड कल्चर" सम्मान समारोह आयोजित हुआ, जिसमें साहित्य, संगीत, चित्रकला, नाट्यकला और नृत्य क्षेत्र की विभूतियों को सम्मानित किया गया।

पुस्तक लोकार्पण और सांस्कृतिक कार्यक्रम

छह पुस्तकों का लोकार्पण हुआ जिनमें 'द ग्रेट रीसेट', 'अनंतता की राह पर', 'भाव रंग', 'साहित्य, समय और दिशा', 'दुनिया के देखे रंग हजार', और 'द मून इज़ ऑल्सो अलोन' प्रमुख रहीं।

महापुरुषों राम मनोहर लोहिया, पं. दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पोस्टर लांच किए गए फैशन शो, नुक्कड़ नाटक, चित्रकला और फोटोग्राफी प्रदर्शनियों ने महोत्सव को बहुआयामी बना दिया।अंतिम दिन महोत्सव के निदेशक सुशील भारती ने तीन दिवसीय साहित्यिक यात्रा में सहभागिता करने वाले सभी अतिथियों और दर्शकों का आभार व्यक्त करते हुए महोत्सव का समापन किया।

2 अक्टूबर 2025-महात्मा गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती और विजयादशमी का ऐतिहासिक सांस्कृतिक अद्भुत व अनूठा संयोग-दो पर्व,एक ही संदेश

विजयादशमी हमें साहस देती है, गांधी जयंती हमें मार्गदर्शन देती है कि इस लड़ाई को किस तरह नैतिक और अहिंसक तरीके से लड़ा जाए आज के युवाओं के सामने चुनौतियां बदल गई हैं,जहां गांधी जी ने साम्राज्यवाद से लड़ा,वहीं आज हमें भ्रष्टाचार,हिंसा,नफरत और पर्यावरणीय संकट जैसी ₹आधुनिक रावणों₹से लड़ना है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत एक ऐसा देश है जिसकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा हजारों वर्षों से दुनियाँ को राह दिखाती रही है। यहां के पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं होते, बल्कि उनमें जीवन-दर्शन, नैतिकता और सामाजिक संदेश भी निहित होते हैं। वर्ष 2025 में ऐसा ही एक ऐतिहासिक अवसर सामने आ रहा है। 2 अक्टूबर 2025 को महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री जयंती और विजयादशमी (दशहरा) एक साथ मनाई जाएगी। गांधीव शास्त्री जयंती हर साल 2 अक्टूबर को निश्चित रूप से आती है, जबकि विजयादशमी हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार बदलती रहती है,किंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इस बार दोनों का एक साथ पड़ना भारतीय समाज और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एक गहरी प्रेरणा देता है।यह केवल तिथियों का मेल नहीं है,बल्कि मूल्यों का संगम है।गांधी जयंती सत्य,अहिंसा और नैतिकता का प्रतीक है,जबकि विजयादशमी अच्छाई की बुराई पर जीत का स्मरण कराती है।

साथियों बात अगर हम महात्मा गांधी लाल बहादुर शास्त्री जयंती क़े महत्व को समझने की करें तो,महात्मा गांधी का नाम भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में शांति,अहिंसा और सत्य के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में जन्मे मोहनदास करमचंद गांधी ने अपने जीवन को साधारण वस्त्र,सरल जीवनशैली और उच्च आदर्शों के लिए समर्पित कर दिया।उनका सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन भारत की आज़ादी के लिए मील का पत्थर साबित हुआ।उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की सबसे बड़ी ताकत को बिना हिंसा और हथियार के चुनौती दी और यह सिद्ध कर दिया कि अहिंसा ही सबसे बड़ी शक्ति है।गांधीजी का योगदान केवल भारत की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहा। उनका प्रभाव विश्वभर में पड़ा। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन के लिए गांधी के अहिंसात्मक तरीकों को अपनाया।नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के खिलाफ संघर्ष में गांधी की शिक्षाओं को प्रेरणा बनाया।संयुक्त राष्ट्र ने भी 2 अक्टूबर को "इंटरनेशनल डे ऑफ़ नॉन-वाओलेंस" घोषित कर गांधी के विचारों की वैश्विक मान्यता को स्वीकार किया।इस दृष्टि से 2 अक्टूबर न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक प्रेरणादायक दिन है,लाल बहादुर शास्त्री जयंती का महत्व 2 अक्टूबर 1904 को जन्मे लाल बहादुर शास्त्री भारतीय राजनीति के ऐसे आदर्श नेता थे, जिन्होंने अपनी सादगी, ईमानदारी और राष्ट्रभक्ति से देशवासियों के दिलों में अमिट स्थान बना लिया। वे भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने और अपने छोटे से कार्यकाल में उन्होंने देश को कठिन परिस्थितियों में संभालने का काम किया। शास्त्रीजी का जीवन बेहद सरल था। वे मानते थे कि नेता का आचरण उसके शब्दों से अधिक प्रभावी होना चाहिए।1965 के भारत-पाक युद्ध में शास्त्रीजी का नेतृत्व ऐतिहासिक रहा। उन्होंने पूरे देश को "जय जवान,जय किसान"का नारा दिया,जिसने देश की एकता और आत्मनिर्भरता को मजबूती दी। यह नारा आज भी भारत की रीढ़,सेना और किसान, की अहमियतको दर्शाता है।शास्त्रीजी का योगदान यह साबित करता है कि नेतृत्व केवल बड़े भाषणों से नहीं, बल्कि सादगी और कर्मनिष्ठा से भी किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम विजयादशमी (दशहरा) का सांस्कृतिक महत्व को समझने की करें तो,विजयादशमी भारत का एक प्रमुख त्योहार है, जो हर वर्ष आश्विन मास की दशमी तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीराम ने इस दिन रावण का वध किया और सीता माता को मुक्त कराया। इसलिए दशहरा को "विजयादशमी" कहा जाता है। इस दिन देशभर में रामलीलाओं का मंचन होता है और रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले दहन किए जाते हैं।दशहरे का संदेश केवल धार्मिक नहीं, बल्कि दार्शनिक भी है। यह हमें यह सिखाता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः सत्य और धर्म की विजय होती है। रावण विद्वान और पराक्रमी ब्राह्मण था,लेकिन उसका अहंकार और क्रोध ही उसके विनाश का कारण बने। इस प्रकार दशहरा हमें यह शिक्षा देता है कि मानव जीवन में विनम्रता, संयम और धर्म का पालन ही स्थायी सुख और सफलता दिला सकता है।आज भी भारत के कोने-कोने में दशहरा रावण-दहन के साथ मनाया जाता है। यह केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि समाज को यह याद दिलाने का प्रतीक है कि बुराइयों का अंत करना ही जीवन का उद्देश्य है।

साथियों बात अगर हम 2025 का संयोगः गांधी और राम का मिलन को समझने की करें तो अब जब हम 2 अक्टूबर 2025 की ओर देखते हैं, तो यह केवल कैलेंडर का संयोग नहीं है, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता है।गांधी ने अंग्रेज साम्राज्य के अहंकार और अत्याचार को अहिंसा और सत्याग्रह से हराया।श्रीराम ने रावण जैसे अत्याचारी राजा को धर्म और शौर्य से

पराजित किया।दोनों ही प्रसंग हमें बताते हैं कि बुराई चाहे हिंसा, लालच, घमंड या अन्याय के रूप में हो, उसका अंत निश्चित है। गांधी और राम दोनों ने हमें यह सिखाया कि अच्छाई की शक्ति हमेशा बुराई से बड़ी होती है, बस हमें धैर्य और साहस से उसका सामना करना चाहिए।महात्मा गांधी ने ब्रिटिश साम्राज्य जैसे ₹रावण₹ को सत्य और अहिंसा से हराया।श्रीराम ने रावण जैसे राक्षस को धर्म और शौर्य से पराजित किया।दोनों ही प्रसंग हमें यह बताते हैं कि बुराई चाहे किसी भी रूप में आए, बाहरी आक्रमण हो या आंतरिक लालच और घमंड, उसका अंत निश्चित है।यह संयोग हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि गांधी जी के मूल्यों और रामायण की शिक्षाओं को आज की दुनिया में किस तरह लागू किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम रावण और गांधीः दोनों के विरोधाभास को समझने की करें तो,इतिहास और पुराणों में जब हम रावण और गांधी को देखते हैं, तो दोनों एकदम विपरीत ध्रुव दिखाई देते हैं।रावण अत्यधिक विद्वान और ब्राह्मण होते हुए भी अपने अहंकार और वासनाओं के कारण पतन का कारण बना।गांधी एक साधारण परिवार से होते हुए भी आत्मसंयम, सत्य और अहिंसा के कारण ₹महात्मा₹ कहलाए।यह तुलना हमें यह सिखाती है कि व्यक्ति का मूल्य केवल उसके ज्ञान या शक्ति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और आदर्शों से तय होता है।रावण ने ज्ञान का उपयोग सत्ता और दंभ के लिए किया, जबकि गांधी ने आत्मज्ञान का उपयोग स्वतंत्रता और न्याय के लिए किया।बुराई पर अच्छाई की विजयः साझा संदेश-गांधी जयंती और विजयादशमी दोनों का मूल संदेश एक ही है- अंततः सत्य और अच्छाई ही विजयी होती है।दशहरा कहता है कि बुराई का अंत शौर्य और धर्म से होता है।गांधी जयंती कहती है कि हिंसा और अन्याय का अंत सत्य और अहिंसा से किया जा सकता है।आज की दुनियाँ में यह संदेश और भी प्रासंगिक है, जहां आतंकवाद, युद्ध, हिंसा, भेदभाव और पर्यावरणीय संकट जैसे ₹आधुनिक रावण₹ सामने खड़े हैं,ऐसे में राम और गांधी दोनों के आदर्श हमें रास्ता दिखाते हैं।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को समझने की करें तो,2 अक्टूबर 2025 को यह डबल अवसर भारत को एक अनूठा संदेश देगाःराष्ट्रीय स्तर पर, यह हमें याद दिलाएगा कि हमें न केवल अपने अतीत के नायकों का सम्मान करना है, बल्कि उनके मूल्यों को आज के समाज में जीवित रखना है।अंतरराष्ट्रीय स्तरपर, दुनिया देखेगी कि भारत का सांस्कृतिक संदेश केवल धार्मिक या राजनीतिक सीमाओं तक नहीं है, बल्कि यह सार्वभौमिक मानवता का प्रतीक है।गांधी का संदेश पश्चिम से लेकर अफ्रीका तक आज भी प्रासंगिक है, और रामायण के आदर्श एशिया से कैरिबियन तक लाखों लोगों को प्रभावित करते हैं।गांधी जी केवल भारत तक सीमित नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक उनके विचारों ने बड़े आंदोलनों को जन्म दिया। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने गांधी के अहिंसा के सिद्धांत को अपनाकर अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन को सफल बनाया। नेल्सन मंडेला ने भी अपार्थाइड के खिलाफ गांधी से प्रेरणा ली।वहीं, रामायण केवल भारत तक नहीं बल्कि पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया,इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, मलेशिया,तक अपनी छाप छोड़ चुकी है।इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम-बहुल देश में भी रामायण का सांस्कृतिक महत्व है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि 2 अक्टूबर 2025 केवल एक तारीख नहीं,बल्कि तीन महान संदेशों का संगम है। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया, शास्त्रीजी ने सादगी और कर्तव्यनिष्ठा का आदर्श प्रस्तुत किया और विजयादशमी ने यह सिद्ध कर दिया कि अच्छाई हमेशा बुराई पर विजय पाती है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमें न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी इन मूल्यों को आत्मसात करना होगा।इस संयोग को केवल उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि एक नई दिशा तय करने के अवसर के रूप में देखना चाहिए। यह दिन भारत को दुनिया के सामने शांति,नैतिकता और सहिष्णुता का प्रतीक बनाने का अवसर देता है। वास्तव में, 2 अक्टूबर 2025 मानवता को एक नई रोशनी और नई राह दिखाने वाला ऐतिहासिक दिन बन सकता है।

सत्य की जीत का सन्देश देता है दशहरा

रमेश सर्राफ धमोरा

भारत एक विविधताओं से भरा देश है जहाँ अनेक धर्मों और संस्कृतियों के लोग साथ रहते हैं। यहां साल भर अनेक त्योंहार मनाए जाते हैं जो न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक भी होते हैं। इन्हीं प्रमुख त्योहारों में से एक है दशहरा जिसे विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व अच्छाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है और इसका भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान है। दशहरा का पर्व भगवान राम की रावण पर विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसे विजयादशमी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "विजय प्राप्त करने वाला दसवाँ दिन"। रामायण के अनुसार भगवान राम ने रावण का वध कर अपनी पत्नी सीता को उसके बंदीगृह से मुक्त कराया था। यह पर्व यह संदेश देता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो अंत में जीत सत्य और धर्म की ही होती है। यह त्योहार लोगों को नैतिक मूल्यों, सत्य, और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

दशहरा शब्द हिंदी के दो शब्दों दस और हारा से मिलकर बना है। जहां दस गणित के अंक दस (10) और हारा शब्द पराजित का सूचक है। इसलिए यदि इन दो शब्दों को जोड़ दिया जाए तो दशहरा बनता है। जो उस दिन का प्रतीक है जब दस सिर वाले दुष्ट रावण का भगवान राम ने वध किया था। दशहरा अथवा विजयदशमी पर्व को भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में। दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है।

दशहरा भारत के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इसी दिन भगवान राम ने बुराई के प्रतीक दस सिर वाले रावण का संहार किया था तो देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अधिकार करने वाले महिषासुर का 10 दिन तक चले भयंकर युद्ध के बाद मां दुर्गा ने वध किया था। इसीलिये इसको विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। इस दिन शस्त्र-पूजा की जाती है। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का समापन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है।

भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक व शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में फसल उगाकर अनाज घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के लिये वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए उनका पूजन करता है। भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिया, और आसमिया लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। बंगाल में दशहरा पूरे पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे चार दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य

सुशोभित पंडालों में विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। यहां दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं व सिंदूर से खेलती हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। अन्त में देवी प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भांति यहां भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियां और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर ढोल, नगाड़े, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रो को लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकरलोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैंजो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहाँ दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। बस्तर में यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी का पूजन होता है। अगले तीन दिन कला और विद्या की देवी सरस्वती की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी शक्ति की देवी दुर्गा की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयां व कपड़े देते हैं।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परम्परा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

महज़ राम की विजय का जश्न नहीं

डॉ घनश्याम बादल

भारत की विविध संस्कृति आदिकाल से ही पर्वधर्मा रही है। दशहरा भी इसी पर्व श्रंखला की एक ऐसी ही कड़ी है। अधिकांश लोगों को यही पता है कि रावण पर राम की विजय का प्रतीक है दशहरा। आदर्श रूप में इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में भी रेखांकित किया जाता है लेकिन दशहरा मनाने के पीछे एक नहीं अनेक कारण हैं। वस्तुतः दशहरा महज़ राम की रावण पर विजय का जश्न मात्र नहीं अपितु एक बहुआयामी पर्व है। इस दशहरे के अवसर पर यह जानना समीचीन होगा कि दशहरा मनाने के पीछे कौन-कौन से मुख्य कारण हैं।

राम की रावण पर विजय

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को, नवरात्र के नौ दिनों की साधना तथा उपवास के बाद दशहराआता है।

दशहरा मनाने के पीछे तो मुख्य कथा तो राम द्वारा रावण का वध करके सीता को पुनः प्राप्त करना लंका पर विजय प्राप्त करना और विभीषण को वहां का राजा नियुक्त करना ही है। मान्यता है कि इस दिन भगवान रामचन्द्रजी ने रावण का वध कर माता सीता की रक्षा की थी। इसीलिए दशहरा को 'रावण-दहन पर्व' भी कहा जाता है। रामायण की यह कथा अच्छाई (राम) की बुराई (रावण) पर विजय को प्रतिपादित करती है।

महिषासुर का वध

एक अन्य मिथक के अनुसार महिषासुर राक्षस देवताओं को पराजित कर स्वर्ग पर अधिकार कर सब पर अत्याचार कर रहा था। तब देवताओं की प्रार्थना पर माता दुर्गा का प्राकट्य हुआ और उन्होंने नौ दिनों तक महिषासुर से युद्ध कर दशमी के दिन उसका वध किया। इसीलिए इसे महिषासुर मर्दिनी विजय दिवस भी कहा जाता है।

पांडवों का शमी पूजन

दशहरे से जुड़ी एक अन्य कथा महाभारत से संबंधित है। महाभारत के अनुसार दुर्योधन की चाल में फंसकर पांडवों को वनवास में जाना पड़ा वनवास की शर्त थी की अंतिम वर्ष अज्ञातवास के रूप में बिताना पड़ेगा यदि पहचान लिए गए तो एक बार फिर से उन्हें वनवास करना होगा। तब अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने अपने शस्त्र शमी वृक्ष में छिपा दिए थे। एक वर्ष बाद विजयदशमी के दिन उन्होंने शस्त्र निकालकर पूजा की और बाद में इन्हीं शास्त्रों के बल पर महाभारत के युद्ध में विजय प्राप्त की। तभी से दशहरे के पर्व के अवसरपर शमी पूजन की परंपरा प्रचलित हुई।

कृषि पर्व दशहराः

दशहरे के पर्व को मात्र धार्मिक कृत्य मानना इसके महत्व को घटना होगा।

इसे कृषि पर्व भी माना गया है, दशहरे के अवसर पर खेतों से खरीफ की फसल कटने लगती है और किसान समृद्धि की कामना करते हैं। कृषि क्षेत्र की संपन्नता को दर्शाने के लिए भाइयों के कानों पर 'नौरते' रखती हैं यह नौरते वास्तव में जौ के अंकुर होते हैं जो जीवन में खुशहाली के प्रतीक हरियाली की पूजा को स्थापित करते हैं।

सरस्वती पूजा का पर्व

दक्षिण भारत में दशहरे को सरस्वती पूजन और शिक्षा-आरंभ का शुभ दिन माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार विजयदशमी विजया नक्षत्र के उदय होने पर मनाया जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि दशहरा एक बहुआयामी पर्व है जिसके एक पक्ष से ही हम अधिक परिचितहैं।

शस्त्र पूजन

इस दिन शौर्य और पराक्रम के प्रतीक रूप में लोग अपने शस्त्रों, औजारों, व्यवसायिक उपकरणों और वाहनों की पूजा करते हैं।यह परंपरा विशेषकर क्षत्रिय और सैन्य समाज में अब भी प्रचलित है। जबकि शिक्षण एवं साहित्य से जुड़े हुए लोग सरस्वती पूजा के रूप में लेखनी की पूजा भी करते हैं।

रामलीलाएं, रावण दहन

उत्तर भारत में रामलीला के आयोजन का समापन विजयदशमी को होता है।रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतलों का दहन कर बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश दिया जाता है। यह आयोजन सामुदायिक मेलजोल और सांस्कृतिक उत्सव का रूप ले चुका है।

प्रतिमा विसर्जन

बंगाल, ओडिशा, असम आदि राज्यों में दुर्गा पूजा का समापन विजयदशमी पर माँ दुर्गा की प्रतिमा के विसर्जन से होता है।

वहां इसे ₹बिजया दशमी₹ कहा जाता है और लोग एक-दूसरे को गले लगाकर 'शुभ विजयादशमी' की बधाई देते हैं।

आयुध एवं वाहन सज्जा

दक्षिण भारत में वाहन, घर-गृहस्थी के उपकरण और किताबों की विशेष पूजा होती है। इसे "आयुध पूजा" कहा जाता है

ऊर्जा प्रदाता

दशहरा केवल आस्था से नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव-जीवन के विज्ञान से भी जुड़ा है। आश्विन मास वर्षा ऋतु के समापन और शरद ऋतु के आगमन का काल है। इस समय शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है। नवरात्र के नौ दिनों का व्रत शरीर को संतुलित करता है और दशमी पर उत्सव ऊर्जा प्रदान करता है।

मानसिक शुद्धिकरण :

रावण-दहन की परंपरा केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि मनोविज्ञान पर आधारित है। अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ जैसे ₹रावण₹ को जलाकर मनुष्य आत्मशुद्धि का अनुभव करता है।

अंतर्साधना का पर्व

दशहरा केवल बाहरी उत्सव नहीं, बल्कि आत्मिक साधना का प्रतीक है। नवरात्र के नौ दिन आत्मसंयम, उपवास और ध्यान के होते हैं। दशमी इस साधना की विजय का प्रतीक है। यह बताता है कि जब मनुष्य भीतर के विकारों से जीत जाता है तो जीवन में प्रकाश और ऊर्जा का संचार होता है।शमी वृक्ष पूजन हमें स्मरण कराता है कि धैर्य और छिपे हुए सामर्थ्य का प्रयोग समय आने पर ही करना चाहिए।

आयुध पूजा जीवन में कर्म और परिश्रम की महत्ता का संदेश देती है।

सामाजिक जागरण :

रामलीलाओं और दुर्गा पंडालों ने इसे लोकनाट्य, कला और शिल्प का विशाल मंच बना दिया है। रावण-दहन को अब केवल पुतला जलाने तक सीमित न मानकर भ्रष्टाचार, नशाखोरी, हिंसा और अन्य सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रतीकात्मक संदेश देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

पर्यावरणीय चेतना :

आधुनिक युग में पुतलों और मूर्तियों को पर्यावरण-अनुकूल बनाने की पहल हो रही है। यह परंपरा और विज्ञान का सुंदर संगम है।

पुरातन, आधुनिक का संगम

दशहरा हमें यह सिखाता है कि परंपराएँ स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील होती हैं।पुरातन काल में यह शस्त्र पूजन और युद्ध आरंभ का पर्व था, आज यह शिक्षा, तकनीक और व्यवसाय में नए संकल्पों का प्रतीक है। पहले यह खेत-खलिहान और प्राकृतिक ऊर्जा से जुड़ा उत्सव था, अब यह सामाजिक सुधार और नैतिक चेतना का वाहक बन रहा है। विज्ञान और आध्यात्म दोनों ही यह कहते हैं कि जब तक हम भीतर की नकारात्मकता पर विजय नहीं पाएँगे, तब तक बाहरी विजय अधूरी रहेगी।

राष्ट्रीय स्तरपर मोबाइल चोरों, ज़ेब से पैसे उड़ाने वाले हुनरमंद चोरों को हत्या व रेप की धाराओं में लानें की सख्त जरूरत

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया

वैश्विक स्तरपर वर्तमान आधुनिक और डिजिटल युग में अपराधों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। जेबकटी, मोबाइल चोरी और डिजिटल वॉलेट से धन उड़ाने जैसी घटनाएं अब केवल स्थानीय समस्या नहीं रहीं, बल्कि एक वैश्विक चुनौती बन चुकी हैं। आज के हुनरमंद चोर इतनी सफाई से काम करते हैं कि पीड़ितों को पता ही नहीं चलता कि उनकी जेब से पैसा या मोबाइल कब और कैसे गायब हो गया। यह अपराध केवल आर्थिक नुकसान नहीं पहुँचाता, बल्कि सामाजिक असुरक्षा, मनोवैज्ञानिक दबाव और कानून व्यवस्था पर भी गहरा असर डालता है।पीड़ित अक्सर रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते- २५ पर्सेंट तक ही रिपोर्ट दर्ज होने का मैंने अंदाज लगाया हूं। रिपोर्टिंग न होने के कारण अपराधियों का डिटेक्शन और ट्रैकिंग मुश्किल होती है मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि आधुनिक शहरी भीड़, डिजिटल पेमेंट का प्रसार और त्योहारों पर बढ़ी भीड़-मास्ट्रेस का मिलन एक ऐसा परिदृश्य पैदा करता है जहाँ पारंपरिक जेबकटी अब केवल शौकीन अपराध नहीं बल्कि संगठित अपराधियों के लिए एक व्यवस्थित मुनाफ़े का साधन बन गया है। मोबाइल चुराने की कला सिर्फ़ "समर्थता" नहीं, बल्कि डिजिटलीकृत आर्थिक चोरी,जैसे मोबाइल वॉलेट रिक्त कर देना, ओटीपी चुराकर ट्रांज़ैक्शन करनें में तब्दील हो चुकी है। दुनियाँ के कई बड़े शहरों में ऐसा देखा गया है कि भीड़-भाड़ वालेसार्वजनिक क्षेत्र और त्यौहारों के आयोजन अपराधियों के लक्षित क्षेत्र बन जाते हैं। भारत में भीइस ओर अपराध तेज़ी से बढ़े है और अब यह अकेले व्यक्तिगत अपराध न रहकर रैकेट-आधारित संगठनों का हिस्सा बनते जा रहे है।हुनरमंद चोरों की विशेषता है उनकी चतुराई, टीमवर्क और भीड़-भाड़ का मूलभूत उपयोग। वे शोषण के ऐसे तरीक़े अपनाते हैं जिनमें पीड़ितों को घटना का एहसास तब होता है जब बहुत देर हो चुकी होती है। मोबाइल की चोरी के साथ ही डिजिटल धन का दुरुपयोग सिम स्वैप, ओटीपी का व्यवधान, फोन चोरी कर फिर उससे बैंक एप्स के लॉगिन,जैसी तकनीकें जोड़ दी गई हैं। नतीजा:पीड़ित न केवल एक वस्तु खोते हैं बल्कि उनकी आर्थिक सुरक्षा, निजी डाटा और भावनात्मक स्थिरता भी प्रभावित होती है। समाज पर इससे बड़ा प्रभाव पड़ता है सार्वजनिक जगहों पर असुरक्षा का भाव, त्योहारों पर घबराहट और छोटे व्यवसायियों के लिए ग्राहकों का कम आना।

साथियों बात अगर हम हुनरमंद चोरों की कार्यशैली और उनकी पहचान की करें तो,आधुनिक समय के जेबकतरे और मोबाइल चोर पारंपरिक चोरों से बिल्कुल अलग हैं। ये अपराधी न केवल शारीरिक रूप से चालाक होते हैं बल्कि मानसिक रूप से भी बेहद सजग रहते हैं। भीड़-भाड़ वाली जगहों जैसे बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बाजार, धार्मिक मेले, त्योहारों के आयोजन, और मॉल्स में यह अपराधी अपनी "कला" का प्रदर्शन करते हैं।वे भीड़ का फायदा उठाकर मोबाइल और पर्स निकाल लेते हैं।कई बार दो-तीन लोगों का गैंग बनाकर काम करते हैंएक ध्यान भटकाता है, दूसरा चोरी करता है और तीसरा माल लेकर तुरंत भाग जाता है।चोरी के तुरंत बाद मोबाइल का सिम निकालकर या उसे स्विच ऑफ करके ब्लैक मार्केट में बेच देते हैं।इस स्थिति में पुलिस व जनता दोनों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि चेहरे पहचानना और अपराधियों को सार्वजनिक रूप से बेनकाब करना। अगर इन्हें पब्लिक डोमेन में उजागर किया जाए तो जनता सतर्क रहेगी और अपराधियों पर दबाव बनेगा।नवरात्र, दशहरा, दिवाली जैसे उत्सवों में लोगों का मन त्यौहार, खरीदारी और उत्साह में रम जाता है।अपराधी इन्हीं मौकों पर सक्रिय होते हैं क्योंकि सुरक्षा व्यवस्था अक्सर सामान्य से ढीली रहती है और भीड़ का भौतिक वातावरण अपराधियों को कामयाबी देता है। धार्मिक स्थलों, मॉल, मेट्रो स्टेशन, लोकल ट्रेन और मेले — ये सब उच्च जोखिम वाले स्थल बन जाते हैं। इसलिए त्योहारों के दौरान न केवल अतिरिक्त पुलिस बल की जरूरत है बल्कि विशिष्ट तकनीकी और सामुदायिक उपायों की भी आवश्यकता है।त्योहारों में भीड़ का फायदा उठाकर जेबकटी और मोबाइल चोरी बढ़ जाती है।लोग उत्सव के माहौल में लापरवाह हो जाते हैं और सतर्कता कम हो जाती है।कई बार चोर धार्मिक स्थलों, पंडालों और रथयात्राओं को भी निशाना बनाते हैं।इसलिए पुलिस को विशेष रूप से त्योहारों के समय अपराध नियंत्रण शाखा और मोबाइल स्क्वाड जैसी विशेष इकाइयां गठित करनी चाहिए।ड्रोन सर्विलांस, सीसीटीवी और इंटेलिजेंस नेटवर्क को मजबूत करके ही इस चुनौती से सख़्ती निपटा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम मोबाइल चोरों और जेबकतरों के लिए कड़ी सज़ा: हत्या और रेप जैसे अपराधों की श्रेणी में लाने की मांग को समझने की करें तो,भारतीय न्याय संहिता २०२३ में चोरी के मामलों के लिए जो धाराएं लागू होती हैं, उनमें अधिकतम सजा ३ से 7 साल तक की है। लेकिन मोबाइल और डिजिटल धन की चोरी आज के युग में सिर्फ मामूली चोरी नहीं रही। यह अपराध (1)सैकड़ों लोगों को कंगाल बना देता है (२)पीड़ितों का मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है (३)डिजिटल फाइनेंस की विश्वसनीयता पर चोट करता है।इसलिए कई विशेषज्ञ मानते हैं कि ऐसे अपराधों को केवल "संपत्ति से जुड़ा अपराध" न मानकर, इसे गंभीर सामाजिक अपराध की श्रेणी में लाना चाहिए। यदि हत्या और रेप के मामलों की तरह कड़ी धाराएं और कठोर कारावास या उम्रकैद की सजा दी जाए, तो अपराधियों में भय व्याप्त होगा और घटनाओं में बहुत कमी आएगी।

साथियों बात अगर हम ऐसे अपराधों की जमानत और कानून की खामियां व संशोधन की आवश्यकता को समझने की करें तो,वर्तमान भारतीय न्याय संहिता २०२३ में चोरी और मोबाइल लूट से जुड़े अपराधों के आरोपियों को अक्सर जमानत मिल जाती है।यही सबसे बड़ीसमस्या है (1) आरोपी जेल से बाहर आते ही दोबारा अपराध करने लगते हैं।(२) वे नई-नई जगहों पर जाकर सैकड़ों लोगों को नुकसान पहुंचाते हैं। (3) पीड़ितों को न्याय मिलने में वर्षों लग जाते हैं।इस स्थिति में जरूरी है कि कानून में संशोधन करके ऐसे अपराधों को गैर-जमानती श्रेणी में डाला जाए। साथ ही अपराधियों के लिए "दोहराव अपराध" की सख्त धाराएं लागू हों। यदि किसी व्यक्ति पर १-३ बार ऐसे अपराध का आरोप सिद्ध हो तो उसे सीधे उम्रकैद या २० साल से अधिक कारावास की सख़्त सजा दी जाए।

साथियों बात अगर हम वर्तमान समय में कानूनी खामियाँ और सुधार की आवश्यकता को समझने की करें तोवर्तमान आपराधिक कानून में कई ऐसी बातें हैं जो आधुनिक डिजिटल- युग की चुनौतियों के अनुरूप नहीं रहीं। मैं ऐसा मानता हूं कि मुख्य समस्याएँ और मेरे सुझाए गए सुधार इस प्रकार हैं (1) जमानत नीति और सख्ती की कमी,कई बार ऐसे आरोपियों को जमानत मिल जाती है और वे फिर से सक्रिय हो जाते हैं। समाधान: रेपीट-ऑफेन्डर धाराओं को कठोर कर,डिजिटल- आधारित और त्योहार-लक्षित अपराधों के लिए गैर-जमानती धाराएँ प्रस्तावित की जानी चाहिए। (२) धारा -संशोधन और संवैधानिक परख़ा-चोरी को जब सामाजिक विनाश के पैमाने पर मापा जाए, तो ऐसा अपराध 'सामाजिक अपराध' मानकर उसमें सख्त दंड और सुधारात्मक उपाय लागू किये जाने चाहिए। लेकिन यह ध्यान रखा जाए कि किसी भी संशोधन में संवैधानिक अधिकारों और मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए, विधायी प्रक्रिया पारदर्शी और न्यायोचित होनी चाहिए। (३) रैकेट और संगठित अपराध पर केंद्रित धाराएँ- छोटे अपराध को संगठनात्मक स्तर पर दोषी ठहराने के लिए गिरोह-रैकेट धाराएँ (आर्गेनाइजेड क्राइम, क्रिमिनल कांस्पिरेसी, एंटीगैंग लॉस) प्रभावी बनानी होंगी; साथ ही धनगमन और संपत्ति जब्ती के कानून तेज़ करने होंगे ताकि मुखिया का आर्थिक आधार काटा जा सके। (4) फास्ट-ट्रैक कोर्ट और ख़ास जाँच टास्क फोर्स-डिजिटल धन से जुड़े मामलों में सबूत जल्दी मिट जाते हैं। इसलिए ऐसे मामलों के लिए फास्ट-ट्रैक न्यायालय और विशेष जाँच टीम बनानी चाहिए।(5)(a) पुलिसिंग मॉडल-विशेष शाखा, डेटाबेस और सामुदायिक साझेदारी - पुलिसिंग में सुधार बहु-आयामी होना चाहिए,यह केवल फोर्स बढ़ाने का मामला नहीं है। कुछ व्यावहारिक कदम:मोबाइल/जेबकटी स्पेशल स्क्वाड: शहरों और बड़े कस्बों में ऐसी स्पेशल यूनिट जो भीड़ वाले इलाकों और त्योहारों में तैनात रहे, स्पॉट इंटेलिजेंस और रैकेट-ट्रैकिंग करे (b) रोज़ाना हाज़िरी और नज़र-रहित निगरानी : मेरा सुझाव कि ऐसे अपराधियों की रोज़ थाने में हाज़िरी करानी चाहिए,यह तभी संवैधानिक और प्रभावी होगा जब उसे पुलिस रिकॉर्ड और निगरानी के साथ जोड़ा जाए; रोज़ हाज़िरी की नीतियाँ तब उपयोगी होंगी यदि वे न्यायालयिक आदेशों और पुनर्वसन कार्यक्रमों के साथ जुड़ी हों।

साथियों बात कर हम कॉल टू एक्शन,नागरिकों के लिये 10 तुरंत करने योग्य सुझावों को समझने की करें तो (1)भीड़ में अपने मोबाइल और पर्स को अंदर वाली नकदी-थैली में रखें।(२) त्योहारों पर अनावश्यक ध्यान भटकाने वाले लोगों से दूरी बनायें।(३) मोबाइल में मोबाइल- लॉक, बैकअप और रिमोट- शटडाउन फ़ीचर सक्रिय रखें।(4)संदिग्ध गतिविधि देखकर तुरन्त नज़दीकी पुलिस या हेल्पलाइन को सूचित करें।(5) किसी भी चोरी की घटना को रिपोर्ट करें,रिपोर्टिंग घटना को रोकने का पहला कदम है।(6) अपने बैंक/उपयोग किए गए ऐप्स में अलर्ट और २ एफए चालू रखें। (7) अज्ञात लोगों को अपने फोन की स्क्रीन न दिखाएँ; सिम/बैंक डिटेल साझा न करें।(8) अगर हम किसी को देखते हैं जो बार-बार भीड़ में संदिग्ध व्यवहार कर रहा हो तो उसकी फोटो लेना (कानूनी दायरे में) और पुलिस को सौंपना उपयोगी हो सकता है।(9) बच्चों को सार्वजनिक सुरक्षा का प्रशिक्षण दें ताकि वे भीड़ में कभी अलग न हों।(10) पड़ोस और कम्युनिटी लेवल पर "वॉच ग्रुप" बनायें और पुलिस के साथ संपर्क रखें।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राष्ट्रीय स्तरपर मोबाइल चोरों,ज़ेब से पैसे उड़ाने वाले हुनरमंद चोरों को हत्या व रेप की धाराओं में लानें की सख़्त ज़रूरत,ज़ेब से मोबाइल व पैसे उड़ाने वालों पर नक़ेल क़सनें भारतीय न्याय संहिता २०२३ में संशोधन की ज़रूरत-उम्र कैद की कठोर कारावास के डोमेन में लाया जाए।

स्क्रॉलिंग और अधैर्य: क्षणभंगुर खुशियों की सतही दुनिया

आज का युग बिजली की गति का युग है, जहाँ हर सुविधा, हर जानकारी, हर मनोरंजन बस एक बटन की दूरी पर है। स्मार्टफोन्स और सोशल मीडिया ने हमें ऐसी ताकत दी है, जिससे हम पलक झपकते दुनिया की सैर कर सकते हैं, ज्ञान का अथाह सागर खोल सकते हैं, और मनोरंजन की अनंत धारा में डूब सकते हैं। लेकिन इस तेज़ रफ्तार ने हमसे एक अनमोल रत्न छीन लिया है—धैर्य। अनवरत स्क्रॉलिंग की लत ने न केवल हमारी प्रतीक्षा करने की शक्ति को क्षीण किया है, बल्कि यह हमारे रिश्तों, मानसिक स्वास्थ्य, रचनात्मकता, और यहाँ तक कि पर्यावरण पर भी गहरा असर डाल रही है।

धैर्य कभी मानव जीवन का आधार था—एक ऐसी शक्ति, जो लंबे इंतज़ार के बाद मिलने वाली सफलता की मिठास को समझने की कला सिखाती थी। पुराने दौर में, जब कारीगर घंटों बारीक नक्काशी में डूबा रहता था, या किसान फसल की प्रतीक्षा में महीनों मेहनत करता था, तब धैर्य महज़ समय काटना नहीं था—यह एक आंतरिक अनुशासन था, जो व्यक्तित्व को तराशता था। लेकिन आज, स्मार्टफोन्स ने इस प्रतीक्षा को बेमानी बना दिया। एक अध्ययन के अनुसार, औसतन एक व्यक्ति दिन में 150 बार अपने फोन को अनलॉक करता है, और हर स्क्रॉल में चंद सेकंड्स ही खर्च करता है। यह आदत हमारे मस्तिष्क को तुरंत संतुष्टि का आदी बना रही है। परिणामस्वरूप, हमारा ध्यान अब केवल 8 सेकंड का रह गया है—माइक्रोसॉफ्ट की 2015 की रिपोर्ट के अनुसार, यह एक गोल्डफिश (9 सेकंड) से भी कम है।

सोशल मीडिया इस अधैर्य को और भड़काता है। इंस्टाग्राम, टिकटॉक, और एक्स जैसे प्लेटफॉर्म्स इस तरह डिज़ाइन किए गए हैं कि वे हमें हर पल नया कंटेंट परोसते रहें। प्रत्येक स्क्रॉल के साथ डोपामाइन का एक छोटा-सा झटका मिलता है, जो हमें और स्क्रॉल करने को उकसाता है। न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी के शोध के अनुसार, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग डोपामाइन रिसेप्टर्स को प्रभावित करता है, जिससे तत्काल संतुष्टि की भूख बढ़ती है और दीर्घकालिक प्रतीक्षा की क्षमता घटती है। इसका जीवंत उदाहरण है बफरिंग के प्रति हमारी असहिष्णुता। नेटफ्लिक्स या यूट्यूब पर 2-3 सेकंड की देरी हमें बेचैन कर देती है। यह अधैर्य अब केवल तकनीक तक सीमित नहीं रहा; यह हमारे रिश्तों, कार्यक्षमता, और जीवन के हर पहलू में रिस चुका है।

आज की तेज़-रफ़्तार दुनिया में अधैर्य ने हमारे रिश्तों को सबसे गहरा आघात पहुँचाया है। पहले, लोग घंटों एक-दूसरे के साथ बैठकर दिल खोलकर बात करते थे, पत्र लिखते थे, और जवाब के लिए हफ़्तों धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते थे। यह इंतज़ार रिश्तों में गहराई और विश्वास की नींव रखता था। लेकिन आज, व्हाट्सएप पर ₹ब्लू टिक₹ देखकर जवाब न मिलने से क्षण भर में बेचैनी घेर लेती है। प्यू रिसर्च सेंटर के 2023 के एक सर्वे के अनुसार, 70% युवा अपने पार्टनर या दोस्तों से तत्काल जवाब की अपेक्षा करते हैं, और देरी होने पर 40% को तनाव या असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। यह अधैर्य

रिश्तों में गलतफहमियों को जन्म देता है, क्योंकि हम अब रुककर सुनने या समझने को तैयार नहीं। गहरे संवाद की जगह इमोजी, ₹लोल,₹ और सतही बातचीत ने ले ली है।

धैर्य की कमी ने हमारी सीखने की क्षमता को भी कमज़ोर किया है। पहले, किसी कला या विषय में निपुणता के लिए सालों की मेहनत और धैर्य की ज़रूरत होती थी। लेकिन आज, गूगल और यूट्यूब ट्यूटोरियल्स ने हमें यह भ्रम दे दिया है कि कुछ मिनटों में सब कुछ सीखा जा सकता है। यह ज्ञान सतही है, गहराई से खाली। हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू की 2024 की एक रिपोर्ट बताती है कि डिजिटल युग में गहन चिंतन की क्षमता 30% तक कम हुई है, क्योंकि नोटिफिकेशन्स, मल्टीटास्किंग, और तुरंत जानकारी की चाह ने हमें ₹स्किमिंग₹ का आदी बना दिया है। इसका असर हमारी रचनात्मकता पर भी पड़ा है। महान विचारों को जन्म देने के लिए समय, चिंतन, और धैर्य चाहिए, लेकिन हम अब जल्दबाज़ी के गुलाम हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव और भी गंभीर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2025 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 18-34 आयु वर्ग में चिंता विकारों में 25% की वृद्धि हुई है, जिसका एक प्रमुख कारण डिजिटल ओवरलोड है। अनवरत स्क्रॉलिंग हमारे दिमाग को हाइपर-एक्टिव मोड में रखती है, जिससे तनाव हार्मोन कॉर्टिसोल का स्तर बढ़ता है। माइंडफुलनेस और धैर्य का गहरा नाता है। जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार, मेडिटेशन जैसे अभ्यास, जो धैर्य को पोषित करते हैं, तनाव को 40% तक कम कर सकते हैं। लेकिन स्मार्टफोन की लत ने हमें इस शांति से वंचित कर दिया है।

यह अधैर्य समाज के व्यापक ढांचे पर भी छाया है। उपभोक्तावाद ने इसे और हवा दी है। अमेज़न की ₹वन-डे डिलीवरी₹ से लेकर फूड डिलीवरी ऐप्स की ₹30 मिनट या फ्री₹ नीतियाँ, सब कुछ तुरंतपन पर टिका है। लेकिन इस तेज़ी की पर्यावरणीय कीमत भारी है। ग्रीनपीस की 2024 की एक रिपोर्ट के अनुसार, ई-कॉमर्स की तेज़ डिलीवरी ने वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में 15% की वृद्धि की है। अनियोजित पैकेजिंग, लॉजिस्टिक्स, और ऊर्जा खपत ने पृथ्वी पर बोझ बढ़ाया है। यदि हम धैर्य के साथ खरीदारी करें, तो यह नुकसान कम हो सकता है।

बच्चों पर अधैर्य का प्रभाव गहरी चिंता का विषय है। पहले, खेल के मैदान में बच्चे धैर्य सीखते थे—चाहे वह अपनी बारी का इंतज़ार हो या कोई नया खेल सीखने की मेहनत। लेकिन आज, यूनिसेफ की 2025 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 6-12 वर्ष के 60% बच्चे रोज़ाना 3 घंटे से अधिक स्क्रीन पर बिताते हैं। यह निरंतर स्क्रीन टाइम उनकी एकाग्रता और भावनात्मक नियंत्रण को कमज़ोर कर रहा है। स्मार्टफोन्स की तात्कालिक संतुष्टि की लत ने उनकी सहनशीलता को क्षीण किया है, जिसका दीर्घकालिक असर उनके निर्णय लेने और तनाव प्रबंधन की क्षमता पर पड़ेगा।

धैर्य का खोना केवल व्यक्तिगत हानि नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षति है। धैर्य हमें जीवन के हर पल में गहराई और अर्थ तलाशना सिखाता है। यह हमें सिखाता है कि हर चीज़ का अपना समय होता है, और उस समय का सम्मान ही जीवन को सार्थक बनाता है। लेकिन स्मार्टफोन्स ने हमें इस प्राकृतिक प्रवाह से विच्छेद कर दिया। हम हर क्षण को स्क्रॉल कर, जल्दबाज़ी में जीने की दौड़ में हैं, जिससे हमारी ज़िंदगी सतही होती जा रही है और गहराई लुप्त हो रही है।

क्या इस अधैर्य से मुक्ति संभव है? निश्चित रूप से, बशर्ते हम सचेत प्रयास करें। रोज़ाना कुछ समय फोन से दूर बिताना, किताबों में खो जाना, प्रकृति की सैर करना, या मेडिटेशन का अभ्यास—ये छोटे कदम धैर्य को पुनर्जनन दे सकते हैं। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार, रोज़ाना 10 मिनट का माइंडफुलनेस अभ्यास एकाग्रता को 20% तक बढ़ा सकता है। रिश्तों में भी हमें ठहराव लाना होगा—स्क्रीन-मुक्त लंबी बातचीत, एक-दूसरे को सुनने और समझने का धैर्य।

धैर्य वह अमूल्य पूँजी है, जिसने मानव सभ्यता को आकार दिया। यह वह शक्ति है, जो हमें फिर से संतुलित और संपूर्ण बना सकती है। स्मार्टफोन्स ने हमें सुविधाएँ दीं, लेकिन हमारी आत्मा को खोखला भी किया। यदि हम धैर्य को फिर से गले लगाएँ, तो न केवल अपने जीवन को समृद्ध करेंगे, बल्कि भावी पीढ़ियों को एक गहरी, सार्थक, और संतुष्ट दुनिया सौंप सकेंगे। तुरंत मिलने वाली ख़ुशी क्षणभंगुर है, पर धैर्य से अर्जित संतुष्टि चिरस्थायी। अब समय है यह समझने का कि सच्ची ख़ुशी धीरे-धीरे, लेकिन ठोस कदमों से आती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वच्छ हवा, स्वस्थ लोग

विजय गर्ग

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण स्वास्थ्य महासंघ (आईएफईएच) द्वारा इसकी शुरुआत के बाद 2011 में विश्व पर्यावरणीय स्वास्थ्य दिवस मनाया गया था। तब से, यह पानी की गुणवत्ता, खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और हाल ही में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य किया है। यह दिन पर्यावरण स्वास्थ्य पेशेवरों के शांत लेकिन महत्वपूर्ण योगदान को पहचानने का एक क्षण है, जो बीमारी से बचाने और स्वस्थ रहने वाले वातावरण को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास करते हैं। वर्ष 2025 में, इस दिन की 15वीं वार्षिक मान्यता तब होगी जब प्रदूषित वायु के खिलाफ भारत का संघर्ष सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकास की एक महत्वपूर्ण चिंता बन गया है।

भारत आज दुनिया के अधिकांश प्रदूषित शहरों की मेजबानी करने का शर्मनाक गौरव रखता है। स्विस कंपनी आईक्यूएयर द्वारा जारी विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2024 में भारत को वैश्विक स्तर पर पांचवां सबसे प्रदूषित देश माना गया है। दिल्ली अक्सर अपनी खतरनाक धुंध के कारण समाचारों पर हावी होती है, विशेष रूप से सर्दियों में जब वाहन निकास, औद्योगिक अपशिष्ट, फसल जलाने और निर्माण धूल का एक हानिकारक मिश्रण शहर को घेर लेता है। उदाहरण के लिए, नवंबर 2023 में दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) कई दिनों में 450 से अधिक हो गया - मानव स्वास्थ्य के लिए ₹गंभीर₹ और ₹खतरनाक₹ स्तर। कानपुर, लखनऊ, गाजियाबाद और पटना जैसे शहरों में अक्सर वायु गुणवत्ता की सीमाओं से काफी अधिक होती है, जिससे प्रतिदिन लाखों लोग खतरे में पड़ जाते हैं। यह मुद्दा बड़े शहरों से परे है; छोटे शहरी क्षेत्र भी असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों और वाहनों की वृद्धि से बढ़ते प्रदूषण का सामना कर रहे हैं।

इस विषाक्त वायु के कारण स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव भारी हैं। प्रदूषण और स्वास्थ्य पर लैंसेट आयोग ने कहा कि वायु प्रदूषण से भारत में 2019 में लगभग 1.6 मिलियन प्रारंभिक मौतें हुईं, जिससे इसे मृत्यु दर का प्राथमिक पर्यावरणीय जोखिम कारक माना गया। शहर के स्कूलों में अस्थमा, ब्रॉन्किटिस और फेफड़ों की वृद्धि को रोकने वाले मामलों की बढ़ती संख्या के साथ बच्चे विशेष रूप से जोखिम में हैं। वयस्कों को हृदय रोग, स्ट्रोक, फेफड़ों के कैंसर और यहां तक कि लंबे समय से संपर्क में आने वाले संज्ञानात्मक गिरावट का खतरा बढ़ जाता है। मानव स्वास्थ्य के अलावा, वायु प्रदूषण पशुधन और कृषि को प्रभावित करता है। कण पदार्थों के उच्च स्तर के संपर्क में आने वाले जानवर श्वसन संबंधी समस्याएं और दूध का उत्पादन कम होते हैं। वायु प्रदूषण के परिणामस्वरूप भूमि स्तर पर ओजोन, प्रकाश संश्लेषण को बाधित करके फसल उपज को खतरे में डालता है और पौधों की वृद्धि को रोकता है। वायु प्रदूषण भारत के लिए भी भारी आर्थिक बोझ लाता है। अनुमानों से पता चलता है कि देश की सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 3 प्रतिशत के बराबर 95 अरब डॉलर और 150 बिलियन डॉलर का वार्षिक नुकसान होता है। ये नुकसान कई कारकों से आते हैं - श्रम उत्पादकता में कमी, प्रदूषण-संबंधित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य देखभाल की लागत बढ़ जाती है और समय से पहले मौतों के कारण आर्थिक उत्पादन कम होता है।

यह संकट कारकों के एक जटिल नेटवर्क में जड़ है। जलद शहरी विकास और औद्योगिक विकास, साथ ही पर्यावरण कानूनों का कमजोर कार्यान्वयन ने भारतीय शहरों को प्रदूषण के हॉटस्पॉट में बदल दिया है। निजी कारों में तेजी से वृद्धि और अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन के कारण वाहन उत्सर्जन मुख्य कारण बना हुआ है। कोयले से चलने वाले थर्मल पावर स्टेशन और ईंट विनिर्माण सुविधाएं प्रदूषकों की बड़ी मात्रा में उत्सर्जन करते हैं, जबकि निर्माण कार्य धूल उत्पन्न करते हैं जो हवा में रहती है। पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में मौसमी खरपतवार जलने से दिल्ली में शीतकालीन धुंध फैलती है। ग्रामीण और उपनगरीय घरों में खाना पकाने के लिए बायोमास का उपयोग आंतरिक और बाहरी वायु प्रदूषण दोनों में एक शांत लेकिन महत्वपूर्ण कारक है। सामूहिक रूप से, ये तत्व वायु प्रदूषण की आपात स्थिति बनाते हैं जो तत्काल समाधानों का विरोध करता है।

इस मुद्दे से निपटने में जनता की जागरूकता महत्वपूर्ण है। हालांकि सरकारी नियम और तकनीकी समाधान आवश्यक हैं, लेकिन नागरिकों का व्यवहार उनकी प्रभावशीलता निर्धारित कर सकता है। दिल्ली में 'ओड-ईवन' वाहन प्रतिबंध या प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के माध्यम से स्वच्छ एलपीजी खाना पकाने वाले ईंधन को प्रोत्साहित करने जैसी पहल यह प्रदर्शित करती हैं कि सक्रिय सार्वजनिक भागीदारी से महत्वपूर्ण प्रगति की जा सकती है। दुर्भाग्यवश, प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों की समझ अभी भी कई समुदायों में सीमित है, जिसके परिणामस्वरूप देरी होती है। उदाहरण के लिए, उच्च धुंध वाले दिनों या शैक्षिक संस्थानों और कार्यस्थलों में नियमित वायु गुणवत्ता मूल्यांकन पर मास्क लागू करना दुर्लभ है। स्वच्छ नीतियों और जिम्मेदार जीवन जीने की मांग को बढ़ावा देने के लिए पर्यावरण स्वास्थ्य साक्षरता में सुधार करना महत्वपूर्ण है।

इस मुद्दे की गंभीरता को स्वीकार करते हुए, भारत ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए विभिन्न कानून और पहल लागू की हैं। 1981 में वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम ने औद्योगिक उत्सर्जन की निगरानी के लिए आधार स्थापित किया। 1986 के पर्यावरण संरक्षण अधिनियम ने सरकार को पर्यावरणीय गुणवत्ता की रक्षा करने का व्यापक अधिकार दिया। हाल ही में, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) की शुरुआत 2019 तक 131 शहरों में कण पदार्थों के स्तर को 20-30 प्रतिशत कम करने का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के राज्यों में प्रदूषण नियंत्रण की देखरेख करने के लिए 2021 में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) भी स्थापित किया गया था। इलेक्ट्रिक वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा और उद्योगों और वाहनों के लिए उत्सर्जन मानकों को बढ़ावा देने वाली नीतियां संकट से निपटने में भारत की प्रतिबद्धता दर्शाती हैं। फिर भी, काफी रिक्तियां बनी हुई हैं। विनियमों का उपयोग अलग-अलग होता है, और अपराधियों के लिए दंड अक्सर दोहराए जाने वाले उल्लंघन को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। राज्य सरकारों के बीच सहयोग - जड़ जलने की अवधि में आवश्यक - अक्सर राजनीतिक असहमति से बाधित होता है। सार्वजनिक परिवहन प्रणाली शहरी विस्तार के साथ तालमेल बनाए रखने में असमर्थ हैं, जिससे निजी कारों पर निर्भरता बढ़ जाती है। कई शहरों में खुलेआम अपशिष्ट जलाना अनियंत्रित है। एनसीएपी को पर्याप्त वित्तपोषण और प्रभावी निगरानी प्रणालियों की अनुपस्थिति के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है। मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, पर्याप्त धन और सामुदायिक भागीदारी के अभाव में ये पहल अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को पूरा करने में विफल हो सकती हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत को एक व्यापक और बहुआयामी कार्य रणनीति की आवश्यकता है। सभी शहरों और कस्बों में जनता के लिए उपलब्ध वास्तविक समय डेटा प्रदान करके वायु गुणवत्ता की निगरानी में काफी सुधार किया जाना चाहिए। दूसरी बात यह है कि उद्योगों, विद्युत सुविधाओं और वाहनों के लिए उत्सर्जन विनियमों को लागू करना स्पष्ट लेखा परीक्षाएं तथा अनुपालन न करने पर भारी जुर्माना से मजबूत होना आवश्यक है। निजी वाहनों पर निर्भरता कम करने के लिए शहरों को मेट्रो नेटवर्क, इलेक्ट्रिक बस और सुरक्षित साइकिल चलाने की सुविधाओं जैसी सतत सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों में पर्याप्त निवेश करना होगा। चौथा, कृषि नीतियों से किसानों को खरपतवार जलाने के विकल्पों को अपनाने में सहायता की आवश्यकता है, जिसमें अवशिष्ट प्रबंधन और फसलों का विविधता शामिल है। पांचवें, शहरी नियोजन में उन हरे क्षेत्रों पर जोर दिया जाना चाहिए जो प्राकृतिक वायु शुद्धिकरण के रूप में कार्य करते हैं और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भवन परियोजनाएं धूल प्रबंधन नियमों का पालन करें। छठवां, जागरूकता अभियानों को न केवल शहरी अभिजात वर्ग बल्कि ग्रामीण परिवारों के लिए भी विस्तारित किया जाना चाहिए, क्योंकि इनडोर वायु प्रदूषण एक गंभीर खतरा बना हुआ है।

कार्य योजना में वायु गुणवत्ता के उद्देश्यों को व्यापक राष्ट्रीय विकास रणनीतियों में भी शामिल किया जाना चाहिए। विकास भारत 2047 को प्राप्त करने के लिए शुद्ध वायु आवश्यक है, विलासिता नहीं। वायु प्रदूषण की उपेक्षा करके भारत को लाखों उत्पादक जीवन वर्षों के संभावित नुकसान का सामना करना पड़ रहा है, स्वास्थ्य देखभाल चुनौतियों में वृद्धि हो रही है और कृषि उत्पादन कम हो गया है - जिनमें से सभी सीधे आर्थिक विकास में बाधा डाल रहे हैं। एक दूषित वातावरण विकास का आधार कमजोर कर देता है, जिससे स्वास्थ्य घाटे श्रम उत्पादकता और आर्थिक क्षमता को कम करते हैं।

हमारे वायु प्रदूषण दुविधा की महत्वपूर्ण प्रकृति पर विचार करने का समय आ गया है, चल रही पहल की सराहना करें और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन कमियों को पहचानें जो बनी हुई हैं। शुद्ध वायु को एक बुनियादी अधिकार माना जाना चाहिए, जो हमारे संविधान में बताए अनुसार रहने के अधिकार से स्वाभाविक रूप से जुड़ा हुआ है। इसकी सुरक्षा के लिए नीति निर्माताओं, उद्योगों, समुदायों और व्यक्तियों से एकजुट समर्पण की आवश्यकता होती है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस पर, आइए हम खुद को याद दिलाएं कि विकास और स्वच्छ हवा एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। इसके विपरीत, स्वस्थ वातावरण सतत विकास का आवश्यक आधार है। भारत के लिए, वायु प्रदूषण का समाधान स्वच्छ आकाश से परे है; इसमें स्वस्थ लोग, अधिक मजबूत पशुधन और कृषि, लचीला प्राकृतिक संसाधन और समृद्ध अर्थव्यवस्था शामिल हैं। तभी 2047 तक विकसित भारत का सपना सचमुच साकार हो सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

क्या गांधी जी के सिद्धांत वर्तमान में भी उपयोगी हैं?

शम्स आगाज़

महात्मा गांधी इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्तित्व के रूप में उभरे, जिन्होंने न केवल भारत को स्वतंत्रता की दिशा दिखाई और दिलाई, बल्कि पूरी दुनिया को एक नई वैचारिक दिशा भी प्रदान की। वे मात्र एक राजनेता नहीं थे, बल्कि एक दार्शनिक, समाज–सुधारक और नैतिक विचारक थे, जिन्होंने राजनीति और नैतिकता को एक–दूसरे से जोड़ते हुए यह प्रमाणित किया कि सत्ता केवल वर्चस्व की नहीं, सेवा और उत्तरदायित्व की प्रक्रिया हो सकती है।

गांधी जी की विचारधारा दो मूल स्तंभों पर आधारित थी, सत्य और अहिंसा। उनके लिए सत्य केवल भाषण या नारा नहीं था, बल्कि जीवन की प्रत्येक गतिविधि में ईमानदारी, पारदर्शिता और नैतिक प्रतिबद्धता का दूसरा नाम था। वे कहा करते थे कि सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य। उनका मानना था कि यदि व्यक्ति अपने विचारों और कर्मों को सत्य पर आधारित रखे, तो वह न केवल व्यक्तिगत रूप से शुद्ध रहता है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था को भी भ्रष्टाचार और अनैतिकता से मुक्त कर सकता है। वर्तमान राजनीति में, जहां झूठा प्रचार, वादाखिलाफी और विश्वासघात आम हो गए हैं, गांधी जी की सत्यनिष्ठा एक नैतिक मार्गदर्शन के रूप में सामने आती है।

अहिंसा गांधी जी के चिंतन का दूसरा केंद्रीय तत्व था। उनके अनुसार, अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं, बल्कि मन, वाणी और व्यवहार में भी किसी प्रकार की क्रूरता या द्वेष का स्थान न होना है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि नैतिक साहस और जनबल के माध्यम से एक साम्राज्य को बिना हिंसा के झुकाया जा सकता है। आज जब विश्व युद्धों, आतंकवाद और जातीय हिंसा की त्रासदी झेल रहा है, गांधी का यह सन्देश कि सच्ची शक्ति सहिष्णुता, धैर्य और नैतिक बल में निहित है ,अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

गांधी जी की आर्थिक दृष्टि भी उतनी ही क्रांतिकारी थी। वे पूंजीवादी व्यवस्था के विरोधी थे और मानते थे कि धन का संचय केवल कुछ हाथों तक सीमित न होकर समाज के कल्याण हेतु उपयोग में आना चाहिए। उन्होंने ₹ट्रस्टीशिप₹ का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार संपन्न व्यक्तियों को अपनी संपत्ति का उपयोग जनहित में करना चाहिए, न कि केवल निजी लाभ के लिए। आज, जब वैश्विक असमानता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है और संसाधनों पर कुछ चुनिंदा लोगों का नियंत्रण स्थापित हो चुका है, गांधी जी की यह अवधारणा आर्थिक न्याय की दिशा में एक संभावित समाधान बनकर उभरती है।

गांधी जी का जीवन स्वयं सादगी, संयम और पर्यावरण संतुलन का प्रतीक था। उनका विश्वास था कि धरती पर सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन पर्याप्त हैं, किंतु लालच के लिए नहीं। आज जब पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की अंधाधुंध दोहन और प्रदूषण मानव अस्तित्व को ही चुनौती दे रहे हैं, गांधी जी की यह सोच भविष्य के लिए चेतावनी के रूप में उभरती है। यदि समाज उपभोग की अंधी दौड़ से हटकर संतुलन और सादगी को अपनाए, तो न केवल पर्यावरण की रक्षा संभव है, बल्कि एक स्थायी जीवनशैली की ओर भी कदम बढ़ाया जा सकता है।

गांधी जी धार्मिक सौहार्द और सामाजिक एकता के प्रबल पक्षधर थे। वे मानते थे कि भारत की सच्ची स्वतंत्रता और प्रगति तभी संभव है, जब सभी धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग मिलजुल कर प्रेम और भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करें।

उन्होंने हमेशा सांप्रदायिक हिंसा का विरोध किया और इसके लिए अंततः अपने प्राणों की आहुति भी दी। आज जब समाज धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता और विभाजनकारी प्रवृत्तियों से ग्रस्त है, गांधी जी का यह विचार सामाजिक शांति और समरसता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

कुछ आलोचकों का तर्क है कि गांधी जी की विचारधारा केवल आदर्शवाद है, जिसे व्यावहारिक जीवन में लागू करना कठिन है। वे मानते हैं कि कुछ परिस्थितियों में शक्ति का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। किंतु यह तर्क तब असंगत प्रतीत होता है जब हम इतिहास में गांधी जी और उनके आंदोलन की सफलता को देखते हैं। न केवल भारत में, बल्कि विश्व के अन्य हिस्सों में भी जैसे अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने गांधीवादी विचारों से प्रेरणा लेकर अपने-अपने देशों में परिवर्तन लाया।

वर्तमान समय में जब राजनीति केवल सत्ता और लाभ के इर्द-गिर्द घूम रही है, जब समाज वैमनस्य और असमानता से बंट रहा है, जब पर्यावरण संकट चरम पर है, और जब नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।गांधी जी की सोच एक प्रकाशस्तंभ की भांति मार्गदर्शन करती है। यदि राजनेता सत्यनिष्ठा को अपनाएं, समाज अहिंसा के मार्ग पर चले, अमीर वर्ग ट्रस्टीशिप के सिद्धांत पर अमल करे, आम नागरिक सादगी को जीवनशैली बनाएं और धर्मों के अनुयायी भाईचारे को अपनाएं ,तो एक शांतिपूर्ण, समरस और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण संभव है।

गांधी जी के सिद्धांतों पर चलना निःसंदेह कठिन है। यह आत्मसंयम, त्याग और नैतिक दृढ़ता की मांग करता है। किंतु यदि हम तात्कालिक लाभों के बजाय दीर्घकालिक मानव कल्याण की ओर दृष्टि रखें, तो गांधी जी का मार्ग ही वह दिशा है जो न केवल भारत को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को स्थायी शांति और न्याय की ओर ले जा सकता है।

अतः यह कहना उचित होगा कि महात्मा गांधी केवल अतीत की महान विभूति नहीं, बल्कि एक जीवंत विचारधारा हैं, जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके जीवनकाल में थी। उनका दर्शन केवल पुस्तकों, भाषणों या समारोहों तक सीमित न रहकर हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में समाहित होना चाहिए। तभी हम एक ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं, जहाँ प्रेम, शांति, समता और न्याय को वास्तविक रूप में साकार किया जा सके।

अब दशानन रावण बहुत दुखी है वह चिंतन कर रहा है - क्या हो रहा है धरती पर ....।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

रावण परम ज्ञानी था , जो अभी धरती पर भ्रमण करनें निकाला है। ऐसे तों वह हर साल आता ही जाता है । क्योंकि वह अमर है फिर भी अपने आप को प्रभु श्री राम के हाथों से मरने का संकल्प लेकर धरती पर हर बार आता ही है । ऐसे तो लंकापति राजा रावण का पराक्रम जगविख्यात था। भगवान श्री राम ने रावण की अमृत की उस पोटली को जब बाणों से छलनी कर दी थी , तब ही उसके घमंड और अहंकार, रुपी दानव का अंत हुआ था। पर जो प्रभु के हाथों से मारा गया है वह तो संसार के बंधनों से मुक्त हो चुका है। इसीलिए वहां धरती पर आता-जाता है। रावण ना जाने कितने युगों से धरती पर आ रहा है । तब और अब के इस बदलते दौर की दुनिया देख कर वह हास्यास्पद हो रहा था ...। अरे इतना बदलाव कैसे हो गया , दुनिया में कहीं युद्ध की काली छाया में बम धमाके विस्फोट व जलजला , पानी , आंधी तुफ़ान भूकम्पों से धरती हिल रही है । कहीं आंतक को पनाह ता जा रहा है। मनुष्य आपस में लड़ाई कर रहें हैं। देखो-देखो दुश्मन दुश्मन नहीं रहा , अब वह शत्रु भी नहीं है । वह तो मनुष्य विरोधी हो रहा हैं। इसीलिए दुनिया का चौधरी देश भी भारत जैसे विशाल देश को आंखें दिखा रहा है। विश्व में अब पतन हो रहा है। इन सभी नाकारात्मक गतिविधियों को देख रावण का भी सिर भी चकराता है। दुनिया की इस आपाधापी में दौड़ते भागते इंसान को देखकर दंग रह जाता है । फिर वह भारत में अपने आराध्य शिव शम्भू भोलेनाथ के धाम आ कर दर्शन करतें हुए आगे बढ़ता है। वहां हिमालय से बढ़ते हुए राम नगरी अयोध्या धाम की रौनक को देखता है। उसे देख वह खुश होता है। मुझे जो हर साल मरते हैं मुझे अपने धाम लें जातें हैं, जिन्होंने मुझे अमर कर दिया है।

प्रभु राम की अयोध्या इतनी खूबसूरत लग रही है। वहीं वर्तमान में राजधानी दिल्ली में आज भी परम्परागत राम-लीला मैदान में वहीं मेरे और प्रभु श्री राम जी के चरित्र का मंचन चल रहा है। रामलीला में अपने चरित्र को देखकर रावण मुस्कराते हुए हटहास करता है। और आगे बढ़कर वह नजर उठाकर देखता है । आज दशहरे पर गली मोहल्ले में अब रावण के पुतले बनाने का काम में बच्चे ज्यादा आनंद नहीं ले रहे हैं वह काम कम हो गया , अब तो बाजार में ही रेडिमेड पुतलों का चलन व क्रेज ज्यादा हो गया। यह बात को देखकर दशानन रावण कुछ भी बोलने के लायक कहा रहा । पहले विश्व विजेता महाराज नाकारात्मक शक्ति का बलशाली एक ही रावण था । और अब तो गली गली में .... ? रावण आगे बढ़ता जाता है और सोचता है कि अभी उसका समय आ ही गया , धरती पर भ्रमण करते करते वह चुनावी राज्य के मैदान में जाता है। अरे यह तो मगध या मिथिला है जिसे आज बिहार कहते हैं । एक और नीतीश बाबू और दुसरी ओर परिवारवाद व स्थानीय राजनेताओं का यहां दंगल होना है अभी समय है। वहीं देखें तो हिम क्षेत्र में लेह-लद्दाख में कुछ देशद्रोही ताकतों ने अशांत माहौल कर दिया है । हमेशा जो बुद्धम शरणम् गच्छामि का संदेश देता था और शान्ति का अनुभव करता था वहां हिंसा और आगजानी हो गई । रावण बोलता है पहले में जम्मू-कश्मीर जब आता था तो गोली बारुद व पत्थरबाजी के बीच मनुष्य हाहाकार करता था। आतंक का काला साया यहां था पर अब यहां पर सब शन्ति शन्ति है। अच्छा वातावरण है हाल ही में देश के राजनेताओं की बात सुनकर रावण बोलता वह क्या बात है। कभी मेरी भी सोने की लंका हुआ करती थी पर वीर हनुमान जी ने उसे जला दी। वहीं भारत में आज जब में आया तो कोई नेता यह पर विस्फोट करने की बात कह रहा था, कभी एटम बम की बात करते हैं , कभी वोट चोरी की बात कही चुनाव आयोग पर उनका कोई ना कोई व्यक्तिगत निशाने बाणों से भी घातक रहते है। पहले वहां कभी कभी बोलते थे कि यहां जलेबी की फेक्ट्री खुला देंगे है। वह कहां है। ऐसा लगता है कि अब कुबेर जी व विश्वकर्मा जी का काम खत्म हो गया है जो भारत के नेता इस तरह का काम करने हेतु आगे बढ़ रहें हैं। यह कोई तपस्वी है यह कोई परम जीव है । एक और मनुष्य अपनी ही चालों में घिरता जा रहा है। दुसरी और कर्म का फल या ढण्ड मिलें या ना मिले उसे पाप का डर शायद वर्तमान काल में नहीं रहा । अब तो महिलाएं भी खुलेआम नाकारात्मक पहलू की और बढ़ रही है कभी वहां शादी कर के पति को हनीमून पर ले जाती है और अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या कर देती है। तो कोई अपने पति को पानी के ड्रम में बंद करके मार रही है। वहीं एक और इतने दानव पनप रहें हैं जो छोटी छोटी बच्चियों और नवयुवतियों को भी इन जालिमों की दरिंदगी का शिकार बना रहे है । धरती पर यहां मनुष्य सब के सब मौन हो कर रहे गये हैं। यह मौन कब तक ..? ऐसा मौन खतरनाक है, पहले तो लज्जा मान मर्यादा शर्म सभी हुआ करती थी । तभी तो सीता माता का सतीत्व आज भी नारीशक्ति में माना जाता है। मैं उस ताकत का अनुभव कर चुका हूं । जिसने मुझ जैसे परम ज्ञानी को भी आईना दिखा दिया था। जब दशानन राजा रावण झुक सकता है तो आप क्यों नहीं ? मुझे अब त्रेतायुग का स्मरण हो रहा है या कलयुग की शुरुआत का दर्शन ऐसा है तो अंत कैसा होगा ... हे राम ।

आज भी भारत मे रामनाम से धरती गुजमान हों रहीं हैं इस धरती को देखता हूं तो भारत में रामलीला में मेरे और भगवान श्री राम के संवादों का चित्रण चल रहा है। विश्व भ्रमण करते करते रावण बहुत ही वैचारिक चिंतन करता हुआ कहता है कि अब आज दशहरा आ गया फिर मेरे पुतलों को यानी मेरे अहंकार , माया , लोभ, छल -कपट को मेरे भाई कुंभकरण और सुपुत्र मेघनाद के पाप का अंत करने व अंहकार को धराशाही करने मेरी सोने की लंका जलाने हनुमान जी और प्रभु राम लक्ष्मण की वानर सेना आने वाली हैं। अब दस सिरों के साथ रावण जगह जगह गली मोहल्ले में अब खड़ा हो चुका है बुराईयों का यह खेल फिर शुरु हो गया है। इसे मिटाने फिर से परम पिता परमेश्वर अवतार लेकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के रूप में आने वाले हैं। मैं रावण हूं अब मुझे तो प्रभु श्री राम के हाथों युगों युगों तक के लिए मर कर अमर होना ही है , इस लिए मैं हर वर्ष उनके हाथों से मरा ही जाता हूं । यह सब जो हों रहा है यह मेरे पापों का पश्चित ही है कि मुझे हर साल मरना पड़ता है। पर अब कितने रावण इस धरती पर आ गए हैं, यह देख मुझे भी चक्कर आ रहे है। मेरी सोचने समझने की ताकत भी अब दुनिया देखने के बाद खत्म सी हो चुकी है। वह ताकत जो ब्रह्माण्ड में सबसे ज्यादा व शक्तिशाली थी वह भी इन सब नाकारात्मक कार्य से कमजोर हो रही है। देख तेरे संसार की हालत मेरे राम...। अब दुनिया में मेरे पुतलों को जलाने से ज्यादा जरूरी है मनुष्य के खोए हुए ज़मीर को जागने की है , मानवीय मूल्यों व उनके गुणों का अनुसरण करने की है । मानव जो दानव बनने की चैष्टा कर रहा है यही पाप दुष्कर्म गेंगरेप बलात्कार को दुनिया में बड़ा रहा है। जिस प्रकार मेरे अभिमान व मेरे घमंड को चूर चूर किया था उसी प्रकार इस युग में भी पाप का अंत करने आ जाओ। विजयदशमी पर्व पर प्रभु इस धरती पर असुरक्षित वातावरण से भटक रहे लोगों की करुण पुकार सुनो। आप ने मुझे मर कर अर्धम का नाश किया था तो अब क्या सोच रहे हो प्रभु आ जाओ...।।

अंतरिक्ष यात्री ने दुनिया की सबसे बड़ी नदी अमेज़न के नसों को पकड़ लिया

विजय गर्ग

अमेज़न नदी नेटवर्क सनलिंट प्रभाव जलमार्गों के अदृश्य प्राकृतिक मानचित्र में बदल देता है। अंतरिक्ष यात्री डॉन पेटिट ने एक बार फिर पृथ्वी की ओर अपना लेंस मोड़ लिया है, इस बार वह अंतरिक्ष से अमेज़न नदी के बेसिन का आकर्षक दृश्य कैप्चर कर रहे हैं।

अपने मिशन के दौरान, पेटिट ने दुनिया की सबसे बड़ी नदी प्रणाली को सूर्यप्रकाश के प्रभाव में झलकते हुए तस्वीरें लीं, जिसका प्रकाश उसकी सतह से सीधे प्रतिबिंबित होता है, जिससे वह रेनवॉस्ट लैंडस्केप पर ₹चमकता हुआ फ्रैक्टल पैटर्न₹ का वर्णन करता है।

ऑर्बिट से साझा की गई छवि में, अमेज़न लगभग एक जीवित जीव जैसा दिखता है, इसकी सहायक नदियों का विशाल नेटवर्क बाढ़ के मैदान पर दशकों किलोमीटर तक नसों की तरह फैला हुआ है। मुख्य नदी अटलांटिक महासागर की ओर दौड़ती है, जिसके साथ घुमावदार द्वितीयक चैनल, ऑक्सबो झीलें और बाढ़ वाली तटीय झीलें चमकती हैं।

सनलिंट प्रभाव जलमार्गों के व्याप्ती को एक आश्चर्यजनक प्राकृतिक मानचित्र में बदल देता है, जिससे नदी प्रणाली की चौड़ाई और जटिलता का पता चलता है जो पृथ्वी पर सबसे जैव विविध पारिस्थितिकी प्रणालियों में से एक को बनाए रखता है।

अमेज़न का पैमाने कक्षा से स्पष्ट है। इसकी बाढ़ की मैदान उत्तरी दक्षिण अमेरिका के विशाल क्षेत्रों में फैली हुई हैं, जिनमें तालाब, झीलें और अनगिनत बदलते जलमार्ग हैं।

वैज्ञानिक इस बात पर जोर देते हैं कि ऐसी छवियां न केवल दृश्य रूप से आकर्षक होती हैं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी मूल्यवान होती हैं। अंतरिक्ष से अवलोकन शोधकर्ताओं को नदियों की गतिशीलता का अध्ययन करने में मदद करते हैं, जैसे कि मौसमी बाढ़ के दौरान चैनल कैसे बदलते हैं और जब भारी बारिश होती है तो सहायक नदी पानी को पुनः वितरित करती हैं।

जलवायु परिवर्तन के चरम वर्षाओं को बढ़ाने वाले क्षेत्र में उपनिवेश परिवहन, बाढ़ के मैदानों की सीमा और बाढ़ के विकासशील पैटर्न को समझने के लिए ये दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं।

समान रूप से महत्वपूर्ण, चित्र मानव प्रभावों पर प्रकाश डालते हैं। यहां तक कि कक्षा से भी, जलमार्गों के किनारे घने हरे जंगल की तुलना में वन कटौती और भूमि उपयोग में परिवर्तन तीव्र विपरीत प्रतीत होते हैं। ये संकेत अमेज़न बेसिन की अखंडता पर वृक्षारोपण, कृषि और विकास के बढ़ते प्रभाव को उजागर करते हैं।

बहुत से लोगों के लिए, पेटिट का साझा दृष्टिकोण पृथ्वी की सबसे बड़ी नदी प्रणाली में प्रकृति और मानव गतिविधि के नाजुक बातचीत को दर्शाता है। अंतरिक्ष से, अमेज़न सुंदर और नाजुक दोनों है - एक विशाल जीवित नेटवर्क जो वर्षा वन, महासागर और जलवायु को एक जटिल डिजाइन में जोड़ता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

"बुराई पर विजय: क्या रावण सच में मर गए?"

दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, लेकिन आज रावण दहन केवल मनोरंजन बन गया है। पुतले जलते हैं, पर समाज में अपराध, दुष्कर्म, घरेलू हिंसा और भ्रष्टाचार लगातार बढ़ रहे हैं। पुराना रावण विद्वान और शक्तिशाली था, पर अहंकार और वासना के कारण विनष्ट हुआ। आज के रावण और भी खतरनाक हैं, क्योंकि वे कानून और नैतिकता की परवाह किए बिना समाज में व्याप्त बुराइयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दशहरे का असली संदेश यह है कि हमें अपने भीतर और समाज में व्याप्त दोषों का संहार करना चाहिए, तभी वास्तविक विजय संभव है।

\- डॉ सत्यवान सौरभ

दशहरा, जिसे विजयादशमी भी कहा जाता है, हमारे समाज में बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इस दिन रावण का दहन करके यह संदेश दिया जाता है कि बुराइयाँ समाप्त हो जाएँ और धर्म और नैतिकता की स्थापना हो। परंतु आज के दौर में यह पर्व केवल उत्सव और मनोरंजन का साधन बनता जा रहा है। रावण दहन के पुतले जलते हैं, मगर समाज में व्याप्त रावण – यानी अपराध, दुराचार और नैतिक पतन – लगातार बढ़ते जा रहे हैं।

हर साल दशहरे पर लोग बड़े उत्साह के साथ रावण के पुतले फोड़ते और जला देते हैं। इसका उद्देश्य हमेशा यह रहा कि बुराइयों का नाश हो और अच्छाई की विजय हो। लेकिन वर्तमान समाज में यह प्रतीकात्मक क्रिया केवल दृश्य मनोरंजन बनकर रह गई है। लोग इसे देखने आते हैं, सोशल मीडिया पर फोटो और वीडियो डालते हैं, पर भीतर अपने जीवन या समाज में व्याप्त बुराइयों को बदलने का प्रयास नहीं करते।

पुराने समय में रावण महाज्ञानी, शक्तिशाली और नीति पालन करने वाला शासक था। वह भगवान शिव का उपासक था, विद्वान था, और शूरवीर भी। उसकी एक गलती – वासना के कारण सीता का हरण – उसे नाश की ओर ले गई। रावण के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि कोई भी व्यक्ति अपनी विद्वत्ता, शक्ति या संसाधनों के बल पर नैतिक पतन के मार्ग पर टिक नहीं सकता। यदि अहंकार और वासना हृदय पर हावी हो जाए तो विनाश निश्चित है।

आज का समाज भी इसी तरह के रावणों से भरा है। पुराना रावण केवल एक व्यक्तित्व था, जबकि आज के रावण हर घर, गली, शहर और गाँव में विद्यमान हैं। अपराध, हत्या, दुष्कर्म, घरेलू हिंसा, रिश्वत और भ्रष्टाचार की संख्या लगातार बढ़ रही है। यह केवल पुलिस या कानून व्यवस्था का मुद्दा नहीं है, बल्कि समाज के नैतिक पतन का संकेत भी है।

हमारे दशहरे के पर्व में जलते पुतले यह दिखाते हैं कि बुराई का अंत हो गया। परंतु वास्तविकता यह है कि बुराई समाज में कहीं भी कम नहीं हुई। आज के "रावण" धूर्त, अहंकारी और क्रूर हैं। वह अपने लाभ के लिए किसी की भी हानि करने से नहीं हिचकिचाते। दहेज़ के लिए पत्नी को जलाना, महिलाओं का अपहरण, बलात्कार और बच्चों पर अत्याचार – ये केवल कुछ उदाहरण हैं। यह सब समाज में बड़े पैमाने पर घट रहा है।

पुराने रावण ने अपने भीतर की इच्छाओं और अहंकार के कारण ही विनाश का मार्ग अपनाया। आज के रावण और भी खतरनाक हैं, क्योंकि वे केवल बाहरी शक्ति और कानून का इस्तेमाल करके अपने स्वार्थ साधते हैं। उनमें नैतिकता, ईमानदारी या धर्म के लिए कोई श्रद्धा नहीं है। परिणामस्वरूप, समाज में विश्वास और मानवता का संकट बढ़ता जा रहा है।

रावण दहन का असली उद्देश्य केवल पुतले जलाना नहीं है। यह हमें अपने भीतर के रावणों – दोष, नकारात्मक भावनाओं और बुराइयों – को पहचानने और दूर करने की शिक्षा देता है। जब तक हम अपने भीतर के अहंकार, द्वेष, झूठ, कपट और वासना को नहीं मारेंगे, तब तक समाज में स्थायी परिवर्तन संभव नहीं है।

आपकी कविता "जलते पुतले पूछते..." इस संदेश को बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त करती है। इसमें यह दिखाया गया है कि पुतले जलते हैं, पर असली रावण समाज में बढ़ते ही रहते हैं। हर वर्ष रावण का वध होता है, लेकिन मन में रावण कहीं और पनपता है। इसका अर्थ यही है कि बाहरी उत्सव केवल प्रतीकात्मक क्रिया है, जबकि असली युद्ध हमें अपने अंदर करना है।

आज का समाज शिक्षित और जागरूक है, पर फिर भी बुराइयाँ बढ़ रही हैं। अपराध, दुष्कर्म, घरेलू हिंसा, भ्रष्टाचार, अनैतिक व्यापार – ये सभी आधुनिक रावणों के उदाहरण हैं। बच्चों और युवाओं पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि हम केवल रावण दहन के उत्सव में आनंद लेते रहेंगे और बुराइयों के खिलाफ वास्तविक प्रयास नहीं करेंगे, तो यह उत्सव खाली प्रतीक बनकर रह जाएगा।

दशहरे का असली अर्थ तब पूरा होता है जब हम अपने भीतर के दोषों का संहार करें। झूठ, कपट, अहंकार, वासना और द्वेष – इन्हें पहचानकर दूर करना ही असली विजय है। यह केवल सामाजिक और नैतिक सुधार का मार्ग नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत उन्नति का भी मार्ग है।

रावण का जीवन अत्यंत शिक्षाप्रद है। वह महाज्ञानी था, पर अहंकार और वासना के कारण विनष्ट हुआ। यही शिक्षा आज के समाज के लिए महत्वपूर्ण है। हमें यह समझना होगा कि बाहरी प्रतीक केवल मार्गदर्शन कर सकते हैं; वास्तविक परिवर्तन अंदर से होना आवश्यक है।

लद्दाख और बरेली का एजेंडा एक ही है

राजेश कुमार पासी

पहले लद्दाख और फिर बरेली में हिंसा हुई है । बेशक इन दोनों घटनाओं का आपस में कोई संबंध नहीं है लेकिन इनका एजेंडा एक ही है । दोनों घटनाओं को एक साथ जोड़कर देखना गलत होगा लेकिन दोनों जगहों पर आम जनता को भड़का कर हिंसा करने की कोशिश की गई है । अगर बरेली की बात करें तो ऐसा लगता है कि ज्यादा कुछ नहीं हुआ है । यूपी पुलिस ने भीड़ पर लाठीचार्ज करके प्रदर्शनकारियों को खदेड़ दिया और मामला खत्म हो गया । इसका दूसरा पक्ष यह है कि किसी ने यूपी पुलिस की ऐसी ही कार्यवाही के लिए प्रदर्शन करवाया हो । जब से पीएम मोदी ने केंद्र में सत्ता संभाली है, तब से मुस्लिम और वामपंथी संगठनों की कोशिश विक्टिम कार्ड खेलने की रही है । भाजपा शासित राज्यों में विशेष रूप से ऐसे प्रदर्शन करने की कोशिश की जाती है जिसे बाद में हिंसक रूप दिया जा सके । इसके पीछे उद्देश्य यह होता है कि सरकार कोई सख्त कार्यवाही करे और पूरी दुनिया में यह प्रचारित किया जा सके कि भारत में मुस्लिमों पर अत्याचार हो रहा है ।

यूपी पुलिस की कार्यवाही के वीडियो और योगी के बयान ऐसे संगठनों और देशविरोधी एनजीओ के लिए विदेशी फंड जुटाने का बढ़िया रास्ता तैयार कर सकते हैं । मुस्लिम समाज को भड़काने का उद्देश्य यह है कि विदेशी शक्तियों को संदेश दिया जा सके कि हम आपका काम बहुत अच्छी तरह से कर रहे हैं । प्रधानमंत्री मोदी का लगातार सत्ता में रहना दुनिया के कई देशों के लिए बहुत बड़ी समस्या है और ये लोग मोदी को सत्ता से हटाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं । अक्सर मोदी सरकार पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि वो सब कुछ जानते हुए भी समय रहते इन लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही क्यों नहीं करती है । सवाल यह है कि जब तक ऐसे संगठन या व्यक्ति कोई अपराध नहीं करते हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही करना क्या संभव है । अगर सरकार चाहे तो सब कुछ हो सकता है लेकिन सवाल फिर उठता है कि मोदी सरकार क्यों कुछ नहीं करती । लद्दाख की बात करें तो क्या यह संभव था कि मोदी सरकार लेह हिंसा से पहले सोनम वांगचुक के खिलाफ कोई कार्यवाही कर सकती थी ।

वास्तव में मोदी की कार्यशैली थोड़ी अलग है, बेशक उन पर तानाशाही के आरोप लगाए जाते हों लेकिन वो सामने वाले को अपना खेल खेलने का पूरा मौका देते हैं । सोनम वांगचुक पर लेह हिंसा से पहले कार्यवाही की जाती तो पूरे देश में बवाल मच सकता था । ऐसे ही तौकीर रजा पर बरेली हिंसा से पहले कोई कार्यवाही की जाती तो विपक्ष मुस्लिमों की आवाज दबाने की कोशिश कहकर तानाशाही का शोर मचा देता । लेह हिंसा के बाद सोनम वांगचुक पर कार्यवाही का जबरदस्त विरोध हो रहा है. अगर ये कार्यवाही पहले की जाती तो कल्पना कीजिए क्या होता । सुप्रीम कोर्ट का रवैया ऐसे मामलों में सबको पता है, उसे तो सिर्फ यह दिखाना है कि वो संविधान का रक्षक है । लद्दाख हिंसा के बाद कहा जा रहा है कि सरकार सो रही थी. सवाल यह है कि सरकार जागकर भी क्या कर लेती । बरेली हो या लद्दाख, प्रदर्शन तो शांतिपूर्ण तरीके से किए जा रहे थे और ये तो सबका लोकतांत्रिक अधिकार है । पैगम्बर साहब से प्रेम का प्रदर्शन किसी मुस्लिम द्वारा व्यक्त करना गलत कैसे हो सकता है । इस प्रेम का प्रदर्शन करने के लिए जुलूस निकालना भी गलत नहीं कहा जा सकता । रैली या जुलूस निकालने के लिए प्रशासन की अनुमति लेनी होती है. बरेली में यह अनुमति नहीं मिली थी हालांकि इसकी सूचना प्रशासन को दी गई थी । सीमित मात्रा में कुछ लोगों द्वारा ज्ञापन देने की बात मान ली गई थी लेकिन तौकीर रजा ने सैकड़ों लोगों का हुजूम इकट्ठा कर लिया था । इसके बाद भीड़ द्वारा पुलिस बैरिकेड तोड़ने की कोशिश की गई और पुलिस पर भीड़ में से कुछ लोगों ने हमला भी किया । पुलिस ने लाठीचार्ज किया तो भीड़ को चप्पल छोड़कर भागना पड़ा । पुलिस को भीड़ के हिंसक होने पर कार्यवाही करनी पड़ती है, इसमें नया क्या है । योगी सरकार में दंगाइयों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने का चलन है और उसी चलन के अनुसार पुलिस कार्यवाही कर रही है । भीड़ इकट्ठा करने वालों की जिम्मेदारी है कि वो भीड़ को हिंसक न होने दें । बार-बार देखा जा रहा है कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन के नाम पर पहले भीड़ जुटाई जाती है और फिर उसके हिंसक होने पर सरकार पर ही सवाल खड़े कर दिये जाते हैं । अगर सरकार प्रदर्शन करने की इजाजत न दे तो लोकतंत्र खतरे में है, का शोर मचाया जाता है । जब सबको पता है कि भीड़ में शरारती तत्व घुसकर शांति भंग कर सकते हैं तो आयोजकों को इससे बचना चाहिए ।

लेह में भी शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया जा रहा था लेकिन अचानक भीड़ ने हिंसक रूप ले लिया । सवाल यह है कि आयोजकों ने भीड़ को नियंत्रित करने का प्रयास क्यों नहीं किया । भाजपा कार्यालय और स्वायत्त परिषद के कार्यालय को निशाना बनाया गया । भाजपा कार्यालय तो पूरी तरह से जल गया है, इससे लगता है कि साजिश तो वहां काम करने वाले लोगों को जलाकर मारने की रही होगी । यह कैसा शांतिपूर्ण प्रदर्शन था, जिसमें लोगों को मारने की कोशिश की गई । जिस तरह से बरेली के बारे में कहा जा रहा है कि दंगा करने के लिए बाहर से लोग आए थे, इसी प्रकार लेह में भी हिंसा करने वालों को बाहर का बताया जा रहा है । सवाल यह है कि बाहर से आकर हिंसा करने वाले कैसे भीड़ में शामिल हो जाते हैं और आयोजकों को पता भी नहीं चलता । अगर आयोजकों को लगता है कि ऐसा कुछ हो सकता है तो उन्हें प्रदर्शन करने से बचना चाहिए ।

सरकार से भी सवाल है कि उसकी गुप्तचर व्यवस्था क्या कर रही थी । अगर हिंसा होने की कोई पूर्व सूचना थी तो सुरक्षा का बेहतर इंतजाम करना चाहिए था । 72 साल तक लद्दाख के लोग जम्मू-कश्मीर राज्य से अलग होने की मांग करते रहे लेकिन किसी ने नहीं सुना । 2019 में मोदी सरकार ने उनकी यह मांग पूरी कर दी और केंद्र शासित प्रदेश बनाकर उनके विकास का रास्ता खोल दिया । 72 सालों तक उपेक्षित महसूस करने वाले लद्दाख में केंद्र सरकार हजारों करोड़ के काम करवा रही है । अब लद्दाख में पूर्ण राज्य की नई मांग रख दी गई है । ऐसा लगता है कि हजारों करोड़ की परियोजनाओं के कारण कुछ लोगों के मुंह में पानी आ गया है । वो सोचते हैं कि अगर वो सत्ता में आ जाएं तो इन योजनाओं का पैसा उनके घर में आ सकता है । निर्माण कार्यों में कितना भ्रष्टाचार होता है, ये तो सर्वविदित है ।

छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग उचित लगती है लेकिन सरकार इस पर विचार कर रही है तो हिंसक प्रदर्शन करने की क्या जरूरत थी । ऐसा नहीं होता है कि सरकार के सामने मांग रखी गई और उसने तुरंत स्वीकार कर लिया । सरकार को ऐसे फैसले बहुत सोच समझकर लेने होते हैं । एक तरफ विकास की मांग की जा रही है तो दूसरी तरफ पर्यावरण खराब होने का डर भी लग रहा है । सवाल यह है कि अगर पर्यावरण की इतनी चिंता है तो विकास की मांग नहीं होनी चाहिए । वास्तव में आम जनता तो विकास चाहती है लेकिन कुछ एजेंडाधारी लोग नहीं चाहते हैं कि लद्दाख का विकास हो । इसके पीछे विदेशी शक्तियों का भी हाथ हो सकता है ।

जेन जी आंदोलन के नाम पर सरकार को डराया जा रहा है । लगातार ऐसे बयान आ रहे हैं कि जैसा श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल में हुआ है, वैसा ही जल्दी भारत में होने जा रहा है । जेन जी के नाम पर देश के युवाओं को भड़काया जा रहा है कि देश का युवा सो रहा है जबकि कई देशों में जेन जी ने सत्ता परिवर्तन कर दिया है । सवाल यह है कि जिन देशों में हिंसक आंदोलन से सत्ता परिवर्तन हुआ है, उनकी हालत कैसी है । क्या वहां सत्ता परिवर्तन से युवाओं का कुछ भला हुआ है । बांग्लादेश की हालत बिगड़ती जा रही है जबकि श्रीलंका को भारत ने संभाल लिया है । अगर भारत श्रीलंका को न संभालता तो वो एक रोग स्टेट बन सकता था । नेपाल में जेन जी के आंदोलन के बाद क्या होगा, अभी देखना बाकी है ।

भारत का विकास बहुत लोगों की आंखों में किरकिरी बनकर चुभ रहा है, इसलिए अपने गुर्गों की मदद से वो भारत को बर्बाद करने की कोशिश में लगे हुए हैं । ये लोग भारत के पड़ोस में आग लगा चुके हैं, इसलिए उत्साहित हैं कि वो जल्दी भारत में भी सफल हो जाएंगे । धर्म, क्षेत्रवाद और भाषा के नाम पर देश को जलाने की कोशिश की जा रही है । आई लव मोहम्मद का नारा भारत के अलावा किसी मुस्लिम देश में नहीं लग रहा है । सिर्फ कुछ यूरोप के देशों में इस नारे के साथ हिंसक प्रदर्शन किए गये हैं । सवाल यह है कि क्या मुस्लिम देशों के मुस्लिम मोहम्मद साहब से प्रेम नहीं करते । वास्तव में कोई अपने प्रेम का इजहार नहीं कर रहा है बल्कि प्रेम के नाम पर नफरत का इजहार हो रहा है । लद्दाख में जनता की मांग की आड़ में देश तोड़ने का एजेंडा चलाया जा रहा है । जब सरकार से 6 अक्टूबर को वार्ता होने वाली थी तो प्रदर्शन करने की क्या जरूरत थी । युवाओं का इस्तेमाल देश में हिंसा फैलाने के लिए किया जा रहा है । बरेली और लद्दाख का मुद्दा अलग हो सकता है लेकिन एजेंडा एक ही है.

युवाओं को लुभाती संघ प्रार्थना

गजेंद्र सिंह

इन दिनों एक गीत सोशल मीडिया, व्हाट्सऐप स्टेटस, शॉर्ट्स और प्रोफाइल पर खूब प्रचलित हो रहा है। जिसे पहले केवल ध्वज के सामने संघ की शाखाओं में सुनना संभव था, आज वही गीत लंदन ऑर्केस्ट्रा की धुनों पर और युवाओं के अपने अंदाज़ में गूंज रहा है। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रार्थना—"नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि"—है, जिसे अब लंदन के ऑर्केस्ट्रा की धुन, शंकर महादेवन की स्वर-लहरियों और हरीश भिमानी ने व्याख्या की है- जिन्होंने महाभारत में अपनी आवाज़ से "मैं समय हूँ" कहकर पहचान बनाई ।

कभी यह प्रार्थना केवल शाखाओं और संघ परिवार के कार्यक्रमों में ही सुनाई देती थी लेकिन आज, कुछ देशी और विदेशी युवा बड़े हॉल में, विभिन्न परिधानों में, अपने काम में मग्न, अलग-अलग वाद्य यंत्रों के साथ, अपनी चिर परिचित मुस्कान लिए, इस प्रार्थना की धुन पर सुर लगाने बैठते हैं । जब वे इस गीत की राग में सुर देते हैं तो यह केवल सुनने मात्र का अनुभव नहीं रह जाता बल्कि देखने मात्र से भी रोमांचक और भावपूर्ण अनुभव उत्पन्न होता है। यह गीत करुणापूर्ण भाव, आधुनिकता और तारतम्यता के साथ अपने मूल स्वरूप को भी संग्रहीत किए हुए है जिससे दर्शक और श्रोता दोनों ही भाव-विभोर हो उठते हैं।

संघ की शाखाओं में प्रतिदिन यह प्रार्थना ध्वज के सामने गाई जाती है। चूंकि यह संस्कृत में रची गई है, इसलिए हिंदी, अंग्रेज़ी या अन्य भाषी लोगों के लिए इसका सही उच्चारण करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है लेकिन संघ परिवार इसके अर्थ और मूल परिवेश के प्रति सदैव सतर्क रहा है। शाखाओं और अभ्यास वर्गों में नियमित रूप से इसके उच्चारण का अभ्यास कराया जाता है ताकि इसकी शुद्धता, स्वरूप और भावनात्मक गहराई अक्षुण्ण बनी रहे।

भारत में हजारों संगठन हैं और प्रत्येक संगठन का अपना गीत और प्रार्थना होती है। अधिकांश गीत या तो किसी परंपरा, आस्था या संगठनात्मक उद्देश्य तक सीमित रहते हैं लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यह प्रार्थना संगठन की सीमाओं को पार कर पूरे राष्ट्र की आत्मा को स्पर्श करती है। यह केवल एक संगठनात्मक गीत नहीं है बल्कि भारत के गौरव, वैभव और राष्ट्रीयता का प्रतीक बन चुकी है। इस प्रार्थना के माध्यम से एक साधारण नागरिक भी अपने हृदय में मातृभूमि के प्रति समर्पण और राष्ट्र के वैभव की कामना का अनुभव करता है।

इसके भाव अत्यंत सरल और स्पष्ट हैं "नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि" यह पंक्ति सीधे-सीधे मातृभूमि को प्रणाम करती है। इसका भाव है कि हम अपने देश के प्रति न केवल सम्मान बल्कि गहरी श्रद्धा और प्रेम रखते हैं। अगला भाग इस बात को व्यक्त करता है कि हमारा जीवन, हमारी शक्ति और हमारे कर्म राष्ट्र की सेवा में समर्पित हैं। यह संदेश हर नागरिक को यह स्मरण कराता है कि व्यक्तिगत उपलब्धियाँ और क्षमताएँ तभी पूर्ण होती हैं जब उन्हें समाज और देश की उन्नति के लिए लगाया जाए। राष्ट्र की महानता और वैभव की कामना का भाव निहित है जो भारत को जग में सशक्त, मार्गदर्शक और वैभवशाली बनाता है । यह केवल शक्ति की बात नहीं है बल्कि भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक महानता को विश्व में प्रतिष्ठित करने की कामना है। इसका संदेश है कि मातृभूमि के प्रति प्रेम और राष्ट्रभक्ति सभी भारतीयों में समान रूप से होनी चाहिए। यह भाव हर व्यक्ति समावेशिता और सार्वभौमिकता की भावना जगाता है। यही कारण है कि यह प्रार्थना किसी धर्म, जाति या क्षेत्र की सीमाओं में बंधी नहीं है और हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की एक गूढ़ अनुभूति जगाती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपने 100 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूरी कर इस विजयादशमी पर 101 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह संगठन जिसने भारतीय समाज में स्वतंत्रता, समरसता और चेतना जागरण का बीड़ा उठाया, अब अपने 'पंच-परिवर्तन' के लक्ष्यों के साथ समाज को नई दिशा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इन पाँच परिवर्तनों में विशेष बल दिया गया है— सामाजिक समरसता : समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सौहार्द और प्रेम का विस्तार, कुटुम्ब प्रबोधन : परिवार को राष्ट्र के विकास की आधारशिला मानकर सशक्त बनाना, पर्यावरण संरक्षण : पृथ्वी को माता मानकर पर्यावरण-संरक्षण हेतु जीवनशैली में बदलाव, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता : भारतीय अर्थव्यवस्था को स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के आधार पर मज़बूत करना, नागरिक कर्तव्य : प्रत्येक नागरिक को सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर राष्ट्रहित में योगदान हेतु प्रेरित करना।

समय के साथ संचार माध्यमों और संगीत की नई शैलियों के आगमन ने इस प्रार्थना को वैश्विक रूप दे दिया है। इसका प्रभाव विशेष रूप से देश के युवा वर्ग पर महसूस किया जा रहा है। जब कोई मौलिक स्वरूप युवाओं के अपने खास अंदाज़ और आधुनिक प्रस्तुति के साथ सामने आता है तो इसे देखने और सुनने के लिए युवा पीढ़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करती है। यह अनुभव केवल कानों तक सीमित नहीं रहता; यह आंखों और हृदय दोनों को मंत्रमुग्ध कर देता है और श्रोता को भावनात्मक रूप से उस प्रार्थना और उसके संदेश से जोड़ देता है। आधुनिकता और परंपरा के इस अनोखे संगम में युवा अपने सांस्कृतिक जड़ों और राष्ट्रभक्ति की भावना को पूरी तरह महसूस करते हैं।

संक्षेप में, "नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि" केवल एक प्रार्थना या गीत नहीं है। यह शब्दों, उच्चारण और भावनाओं का ऐसा मिश्रण है जो व्यक्ति के हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम, राष्ट्र के प्रति समर्पण और समाज में अपनी भूमिका के प्रति चेतना जागृत करता है। परंपरा और आधुनिकता का यह संगम अब भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है।

बाढ़ ने यमुना में क्रूज की सवारी पर फेरा पानी, अब नवंबर में नहीं शुरू की जा सकेगी सेवा

यमुना में आने वाली बाढ़ के कारण क्रूज सेवा की शुरुआत में देरी हो रही है। पहले यह सेवा नवंबर में शुरू होने वाली थी लेकिन अब इसे अगले साल जनवरी तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। जगतपुर से सोनिया विहार तक यमुना में यह सेवा शुरू की जाएगी जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना में कई सरकारी एजेंसियां शामिल हैं।

नई दिल्ली। बाढ़ ने यमुना में क्रूज को उतारने के प्लान पर पानी फेर दिया है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत नवंबर में वाटर टैक्सी के नाम से जो क्रूज सेवा शुरू होनी थी, अब इसे जनवरी तक के लिए टाल दिया गया है।

पर्यटन के विकास के तहत जगतपुर (शनि मंदिर) से सोनिया विहार तक करीब छह किलोमीटर तक यह सेवा शुरू होनी थी। पहले चरण में दो क्रूज यमुना में उतारे जाने थे। दिल्ली सरकार के सूत्रों ने कहा सोनिया विहार में जिस स्थान पर क्रूज पर चढ़ने और उतरने का स्टॉप बनाया जाना था, वहां पर बाढ़ से बहुत मिट्टी आ चुकी है, मिट्टी हटाने में काफी समय लगेगा। उसके बाद ही सेवा को शुरू किया जा सकेगा। अनुमान है कि अब अगले साल की शुरुआत में यह सेवा शुरू हो सकेगी। टिकटों की कीमत अभी तय नहीं हुई है। इस परियोजना के तहत जगतपुर से सोनिया विहार में वजीराबाद बैराज तक सेवा शुरू होनी थी। इसके लिए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस साल मार्च में घोषणा की थी। दिल्ली पर्यटन एवं परिवहन विकास निगम (डीटीटीडीसी) के एक अधिकारी ने कहा कि दिल्ली क्रूज सेवा के लिए संबंधित कंपनी का निर्धारण हो चुका है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए पांच एजेंसियों भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आइडब्ल्यूएआई), दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए), दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी),डीटीटीडीसी और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। अधिकारियों ने बताया कि डीडीए ने इस परियोजना के लिए जमीन उपलब्ध कराई है, जबकि सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग क्रूज के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ सहायता और तटीय सुविधाएं प्रदान करेगा। क्रूज को प्रतिदिन कम से कम चार चक्कर अनिवार्य होंगे।

बालासोर में NIELIT केंद्र स्थापित किया जाएगा

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बालासोर में NIELIT केंद्र - राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना की जाएगी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव NIELIT डिजिटल विश्वविद्यालय का उद्घाटन करेंगे। इस पहल का उद्देश्य देश भर में उच्च-गुणवत्ता वाली डिजिटल शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करना है ।यह प्लेटफ़ॉर्म आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा, डेटा साइंस और सेमीकंडक्टर जैसी अत्याधुनिक तकनीकों में उद्योग-केंद्रित कार्यक्रम प्रदान करेगा। लचीले डिजिटल लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और वर्चुअल लैब के साथ, इसका उद्देश्य भारत के युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कौशल से लैस करना और रोज़गार क्षमता को बढ़ाना है।

इस कार्यक्रम के तहत, मंत्री महोदय मुजफ्फरपुर (बिहार), बालासोर (ओडिशा), तिरुपति (आंध्र प्रदेश), दमन (दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव) और लुंगलेई (मिज़ोरम) में पाँच नए NIELIT केंद्रों का वर्चुअल उद्घाटन करेंगे। इस एकीकरण के साथ, NIELIT भारत के प्रौद्योगिकी भविष्य को आकार देने में अपनी भूमिका का विस्तार करता रहेगा।

इस उद्घाटन समारोह में ₹शिक्षा के डिजिटलीकरण में AI की भूमिका₹ पर एक पैनल चर्चा होगी, जिसमें शिक्षा और उद्योग जगत के प्रमुख विशेषज्ञ एक साथ आएंगे। NIELIT और Kyndryl द्वारा संयुक्त रूप से संचालित DevSecOps पाठ्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित करने के लिए एक सम्मान समारोह भी आयोजित किया जाएगा। इसके अलावा, नाइलिट उद्योग-शिक्षा सहयोग को और मज़बूत करने के लिए प्रमुख उद्योग भागीदारों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करेगा। इस कार्यक्रम में देश भर से नाइलिट के छात्रों, शिक्षाविदों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों सहित 1,500 से अधिक प्रतिभागियों के भाग लेने की उम्मीद है। समर्पित स्टॉल इलेक्ट्रॉनिक्स और

घर की धड़कन, समाज की रीढ़: फिर भी अदृश्य क्यों?

बचपन से हम सुनते आए हैं कि "घर संभालना आसान नहीं।" यह वाक्य प्रशंसा-सा लगता है, लेकिन वास्तव में यह गृहिणी के अथक श्रम को सामान्य और अदृश्य बनाकर उसकी गरिमा को कम करता है। समाज में गृहिणी का परिश्रम आज भी उपेक्षित है, मानो वह कोई "काम" ही न हो। सुबह की पहली चाय से लेकर रात के खाने तक, बच्चों की देखभाल से लेकर घर की साफ-सफाई तक, गृहिणी का हर कदम परिवार की नींव को अटूट बनाता है। फिर भी, उसे न आर्थिक मूल्यांकन मिलता है, न सामाजिक सम्मान। यह विरोधाभास न केवल गृहिणी के आत्मसम्मान को चोट पहुँचाता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं की गहरी खामियों को भी उजागर करता है।

गृहिणी का श्रम एक अनवरत, बहुआयामी यात्रा है। वह सुबह सबसे पहले उठकर परिवार के लिए भोजन तैयार करती है, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करती है, बुजुर्गों की देखभाल करती है, घर को चमकाती है, कपड़ों की धुलाई से लेकर राशन का हिसाब तक संभालती है, और सामाजिक रिश्तों को सहेजती है। इसके साथ ही, वह परिवार के भावनात्मक संतुलन की धुरी बनती है, जो किसी भी घर का आधार है। यदि इन कार्यों को पेशेवरों—जैसे शेफ, हाउसकीपर, चाइल्डकेयर विशेषज्ञ, या रिलेशनशिप मैनेजर—द्वारा किया जाए, तो इसके लिए लाखों रुपये खर्च होंगे। ऑक्सफैम की 2020 की रिपोर्ट के अनुसार, अवैतनिक घरेलू और देखभाल कार्य वैश्विक अर्थव्यवस्था में 10.8 ट्रिलियन डॉलर का योगदान देता है। भारत में यह जीडीपी का 15-25% तक हो सकता है। फिर भी, यह श्रम "अदृश्य" क्यों रहता है?

इस अदृश्यता का मूल कारण समाज का वह दृष्टिकोण है, जो केवल "पैसा कमाने" वाले कार्य को ही महत्व देता है। गृहिणी का श्रम, जो परिवार की बुनियाद ढालता है, उसे "स्वाभाविक" मान लिया जाता है। पुरुष की कमाई को प्रतिष्ठा का आधार बनाया जाता है, पर यह भुला दिया जाता है कि उसकी सफलता के पीछे गृहिणी का अथक परिश्रम है। बिना उसके, न पुरुष समय पर दफ्तर जा सकता है, न बच्चे स्कूल, और न ही घर सुचारु रूप से चल सकता है। गृहिणी घर की धुरी है, फिर भी उसे न आर्थिक मान्यता मिलती है, न निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

यह उपेक्षा केवल आर्थिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक भी है। "तुम तो बस घर पर रहती हो" जैसे ताने गृहिणी के आत्मविश्वास को तोड़ते हैं। सामाजिक तौर पर भी, उसे कमतर समझा जाता है, क्योंकि वह "कमाने वाली" नहीं है। "वर्किंग वूमन" जैसे शब्दों का उपयोग इस तरह होता है, मानो गृहिणी का श्रम "काम" ही नहीं। यह दृष्टिकोण न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि लैंगिक असमानता को और गहराता है।

गृहिणी के श्रम को सम्मान और मान्यता देना न केवल सामाजिक न्याय की मांग है, बल्कि एक समृद्ध और समावेशी समाज की नींव भी है।

गृहिणी के श्रम की अदृश्यता का प्रभाव केवल वर्तमान तक सीमित नहीं, बल्कि यह भावी पीढ़ियों को भी आकार देता है। बच्चियाँ अपनी माँ को देखकर यह मान लेती हैं कि घर की जिम्मेदारी उनकी ही है, जबकि लड़के यह सीखते हैं कि उनकी भूमिका केवल बाहर की कमाई तक सीमित है। इस तरह, लैंगिक असमानताएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी गहरी होती जाती हैं। इस चक्र को तोड़ने के लिए घरेलू श्रम को साझा जिम्मेदारी बनाना होगा। पुरुषों को घर के कामों में बराबर की हिस्सेदारी निभानी होगी। यह बदलाव न केवल गृहिणी के बोझ को हल्का करेगा, बल्कि समाज में समानता की मजबूत नींव भी रखेगा।

नीतिगत स्तर पर इस मुद्दे को गंभीरता से लेना अनिवार्य है। भारत के सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में एक फैसले में कहा था कि गृहिणी का श्रम अनमोल है और इसे आर्थिक मूल्यांकन की जरूरत है। फिर भी, इस दिशा में ठोस नीतियाँ लागू नहीं हुईं। कनाडा और स्वीडन जैसे देशों में अवैतनिक घरेलू श्रम को मान्यता देने और गृहिणियों के लिए पेंशन या सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर काम हुआ है। भारत में भी ऐसी पहल की जरूरत है। उदाहरण के लिए, गृहिणियों के लिए पेंशन, स्वास्थ्य बीमा, या अन्य सामाजिक योजनाएँ उनके श्रम को सम्मान देने का प्रभावी कदम हो सकती हैं।

गृहिणी की आत्म-छवि भी इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब तक वह अपने श्रम को मूल्यवान और सम्मानजनक नहीं मानेगी, समाज भी उसे गंभीरता से नहीं लेगा। गृहिणी को यह समझना होगा कि उसका योगदान परिवार और समाज के लिए अपरिहार्य है। उसे अपने कार्य पर गर्व करना होगा और परिवार को भी इसका महत्व बताना होगा। यह तभी संभव है जब समाज में जागरूकता फैले और गृहिणी के श्रम को "काम" के रूप में स्वीकार किया जाए।

इसके लिए गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की जरूरत है। स्कूलों में बच्चों को लैंगिक समानता और घरेलू श्रम के महत्व की शिक्षा देनी होगी। मीडिया को गृहिणी के योगदान को सकारात्मक और प्रेरक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। परिवारों को यह समझना होगा कि गृहिणी का श्रम केवल शारीरिक मेहनत नहीं, बल्कि भावनात्मक और मानसिक निवेश भी है। वह न केवल घर को व्यवस्थित रखती है, बल्कि रिश्तों को पोषित करती है, परिवार को जोड़ती है और एक सुरक्षित, प्यार भरा माहौल बनाती है।

आर्थिक मान्यता के साथ-साथ सामाजिक सम्मान भी उतना ही जरूरी है। गृहिणी का श्रम तब तक अदृश्य रहेगा, जब तक समाज इसे "काम" के रूप में स्वीकार नहीं करता। हमें यह मानना होगा कि घर का काम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कोई पेशेवर कार्य। यह केवल खाना पकाने या सफाई तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की नींव को मजबूत करने वाला आधार है।

गृहिणी के श्रम को दृश्यमान बनाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिसमें नीतिगत सुधार, सामाजिक जागरूकता, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत सम्मान शामिल हों। जब तक हम गृहिणी के श्रम को उसका उचित स्थान और सम्मान नहीं देंगे, हमारा समाज अधूरा रहेगा। गृहिणी का कार्य न केवल परिवार, बल्कि राष्ट्र की प्रगति का आधार है। इसे नजरअंदाज करना सिर्फ अन्याय नहीं, बल्कि सामाजिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। आइए, हम सब मिलकर इस अनमोल श्रम को वह सम्मान और मान्यता दें, जिसकी वह सच्ची हकदार है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ज़रूरत से ज़्यादा सोच भी लक्ष्य से भटका देती है

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह, सहज हरदा (मध्य प्रदेश)

एक छोटे से गांव का लड़का रयान डॉक्टर बनने का सपना देखता था। वह बेहद होशियार था, लेकिन अध्ययन में एकाग्रता उसकी कमजोरी थी। परिणाम आया तो सारे साथी अच्छे अंकों के साथ पास हो गए, लेकिन रयान असफल हो गया। जिन शिक्षकों ने कभी उसकी प्रशंसा की थी, अब वही निराश थे। यह आलोचना उसके लिए सबसे बड़ी सीख बनी,केवल प्रशंसा या आलोचना की सोच ज़रूरी नहीं, असली ज़रूरत लक्ष्य पर ध्यान और अनुशासन की है। रयान ने खुद को सुधारा, अनुशासन विकसित किया, और अगले साल न सिर्फ पास हुआ, बल्कि टॉप भी किया। अब न आलोचना मायने रखती थी, न प्रशंसा, उसका लक्ष्य ही उसका प्रेरक बन गया ।कई बार राह में आलोचना या प्रशंसा हमें या तो रोक देती है या भटका देती है। यदि हम आलोचना से डरकर रुक जाते हैं या प्रशंसा से मदहोश हो जाते हैं, तो लक्ष्य दूर हो जाता है। एक प्रसिद्ध कहानी "Group of Frogs" में देखा गया कि कुछ मेंढक जब पेड़ पर चढ़ने लगे, तो सभी जानवर उन्हें रोकने, आलोचना करने और हतोत्साहित करने लगे। लेकिन एक मेंढक उन सबकी आवाज़ सुन ही नहीं सकता था—वह बहरा था। उसे लगा सब उसे प्रोत्साहित कर रहे हैं, और वह चोटी तक पहुँच गया। सोचने का तरीका लक्ष्य की राह खुद तय करता है ।विवेचना यानी सोच-विचार अच्छा है, पर ज़रूरत से ज़्यादा सोच भी लक्ष्य से भटका देती है। जो जीवन में केवल विवेचना में उलझ जाता है, वह अमल तक नहीं पहुँच पाता। अतः अपने लक्ष्य को प्राथमिकता दें, बाकी सब बातों को केवल सीख के तौर पर लें ।जो इंसान अपने लक्ष्य को सर्वोपरि मान लेता है, उसके लिए बाहरी राय, आलोचना या प्रशंसा बस शोर रह जाती है। न वे रुकावट बनती हैं, न मंज़िल। असली विजेता वही है, जो सबकी बात सुनता है, पर आगे बढ़ता है अपने लक्ष्य की तरफ। यह कहानी और विचार वास्तविकता के करीब हैं, और हर व्यक्ति को अपने जीवन-संघर्ष में प्रेरित कर सकते हैं।

मंडप में महानवमी; गांव से शहर तक दुर्गा पूजा उत्सव का माहौल

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : आज मंदिर में दशमी और मंडप में महानवमी है। कटक, भुवनेश्वर, बालासोर, राउरकेला, संबलपुर,कामाक्षा नगर सभी जगह दुर्गा पूजा का आध्यात्मिक माहौल है। माँ के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ रही है। पुजारियों द्वारा मंत्रोच्चार और घंटियों की ध्वनि से भक्तिमय वातावरण बना हुआ है। जगज्जननी माँ दुर्गा की पूजा पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार की जा रही है ।जुड़वाँ शहरों में जुलूस देखने के लिए भारी भीड़ देखी जा रही है।

राजधानी में रात में उत्सव का माहौल देखा जा रहा है। दिन में जितनी भीड़ होती है, रात में उससे भी ज़्यादा भीड़ होती है। सभी जुलूस मंडलों में लंबी कतारें देखी जा रही हैं। मंडलों को अलग-अलग थीम पर सजाया गया है, जहाँ भारी भीड़ देखी जा रही है। कटक में लोग दिन की बजाय रात में जुलूस के चारों ओर घूमना पसंद करते हैं। भीड़ के कारण, कटक शहर के निवासी रात में अपने परिवारों के साथ शारदीय दुर्गा पूजा का आनंद लेते हैं। आधी रात के बाद भी लोगों की भारी भीड़ देखी जा रही है। खाननगर दुर्गा पूजा मंडल में लोगों की भारी भीड़ देखी जा रही है। जुलूस को ऑपरेशन सिंदूर की थीम पर तैयार किया गया है। जिसे देखने के लिए लोग आ रहे हैं। रात में जुलूस के चारों ओर घूमते समय सुरक्षा कड़ी कर दी गई है।

राउरकेला सरकारी अस्पताल (आर जी एच) भूमि संकट से जूझ रहा, जनता स्वास्थ्य अधिकार से वंचित - प्रदेश अध्यक्ष एनसीपी

परिवहन विशेष न्यूज

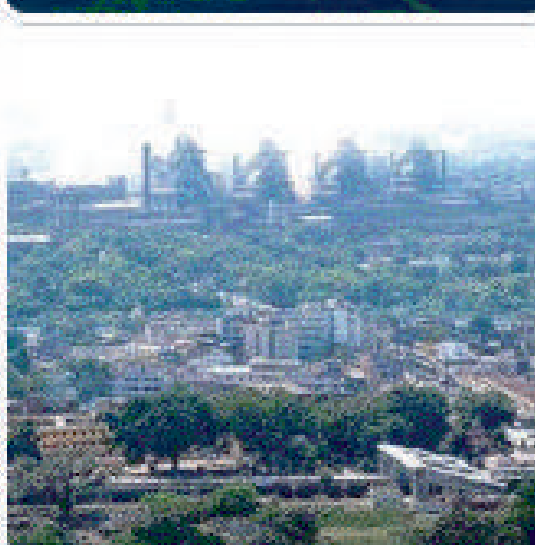

राउरकेला: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में बरहमपुर एवं बूर्ला मेडिकल कॉलेज के विस्तार कार्यों का शिलान्यास किया, किंतु राउरकेला सरकारी अस्पताल इस प्रक्रिया से बाहर रह गया। मुख्य कारण है भूमि की कमी और प्रशासनिक शिथिलता।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा कि ₹वर्तमान अस्पताल के आसपास राउरकेला इस्पात संयंत्र की हजारों एकड़ भूमि वर्षों से अनुपयोगी पड़ी है। इस भूमि पर झुग्गी-बस्तियाँ और अवैध खरीद-बिक्री बढ़ रही है। जिला प्रशासन और राउरकेला इस्पात संयत्र (आर एस पी) के बीच समन्वय की कमी के चलते यह भूमि किसी भी सामाजिक या सरकारी कार्य में नहीं आ पा रही। यदि यही भूमि अस्पताल व अन्य जनहित परियोजनाओं के लिए उपलब्ध कराई जाए, तो राउरकेला के विकास को सर्वांगीन विकास हेतु नई दिशा मिल सकती है।₹

राउरकेला सरकारी अस्पताल के लिए ₹627 करोड़ की राशि पहले ही आवंटित की गई है, किंतु भूमि अभाव के कारण योजना ठप है। विगत वर्षों में बीजद सरकार के समय इस राशि को अन्यत्र मोड़कर बंदरबाँट का प्रयास हुआ था, लेकिन कुछ संगठनो व चंद राजनैतिक दलों के विरोध से यह सम्भव न हो सका किन्तु आज भी यह योजना फाइलों में धूल खा रही है।

राउरकेला के नागरिक अपेक्षा कर रहे हैं कि जिला प्रशासन और राउरकेला इस्पात संयत्र के आपसी तालमेल से इस भूमि को अस्पताल विस्तार के साथ-साथ एयरपोर्ट, स्मार्ट बस स्टैंड, कृषि मंडी, ट्रक टर्मिनल और आवासीय योजनाओं के लिए सदुपयोग करें। इससे ₹ग्रेटर राउरकेला₹ का सपना साकार होगा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री मोहन माझी की मंशा के अनुरूप हर परिवार को आवास व स्वास्थ्य सुविधा मिल सकेगी।

गौरतलब है कि भुवनेश्वर कैपिटल हॉस्पिटल में पीजी कोर्स आरंभ हो चुके हैं, जबकि 2014 में प्रधानमंत्री ने राउरकेला में मेडिकल कॉलेज और पोस्ट ग्रेजुएट संस्थान का वादा किया था, जो अब तक लंबित है। जनता को आशा है कि राउरकेला सरकारी अस्पताल का नवीनीकरण शीघ्र पूरा हो और शहर की जनता को स्वास्थ्य अधिकार प्राप्त हो।

लेफ्टिनेंट जनरल वीरेंद्र वत्स ने आज एनसीसी के महानिदेशक का पदभार संभाला

परिवहन विशेष न्यूज

लेफ्टिनेंट जनरल वीरेंद्र वत्स ने लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह के स्थान पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के महानिदेशक का पदभार ग्रहण किया है।

17 दिसंबर, 1988 को भारतीय सेना की 19 कुमाऊँ रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त, लेफ्टिनेंट जनरल वीरेंद्र वत्स अपने साथ 37 वर्षों की विशिष्ट सेवा लेकर आए हैं। उन्होंने चुनौतीपूर्ण उग्रवाद-रोधी और आतंकवाद-रोधी परिस्थितियों में सेवा की है और अरुणाचल प्रदेश, कश्मीर घाटी तथा सेना मुख्यालय में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। उन्होंने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत एक इन्फैंट्री ब्रिगेड की भी कमान संभाली है। इस नियुक्ति से पहले, वे वेलिंगटन स्थित रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज में कमांडेंट थे।

#DGNCC

रावण है बहुत खूँखार

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर,
मद, घृणा, द्वेष, भय और अहंकार,
दस दुर्गुणों वाला रावण है बहुत खूँखार ।

रावण है बहुत खूँखार बैठा सबके भीतर,
नकारात्मकता चाटुरिकता ये मनोविकार,
खत्म करना होगा इसको अवश्य इस बार,
तभी शुभकारी हुआ विजयदशमी त्यौहार ।

अधर्म की होगी फिर करारी हार जोरदार,
धर्म की लहराएगी सहर्ष ₹आनंद₹ पतवार,
खत्म होगा विश्व से तभी दुखदाई अनाचार,
जब सभी अपनाएंगे सद्गुण उन्नत व्यवहार ।

परंपराओं के निहित तथ्य हो पहले उजागर,
भरो मन में आत्मिक शुद्धता प्रेम का सागर,
न हो हत्याएं, न युद्ध हो, न हो कहीं भ्रष्टाचार,
मन का मैल हटे ऐसा छाए रश्मिरथी उजियार ।

मन को जीत सको तो जीतो संकल्प अपना कर,
अंतस जगे ज्ञान, बंद हो अतिशय बाह्य आडंबर,
कितना ध्येय समझा रावण का पुतला जलाकर,
क्या तुमने अपनाया श्री राम को भीतर सजाकर ।

– **मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु**
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

गान्धी जयन्ती पर विशेष आलेख : सत्याग्रही एक राजनीतिक महात्मा

आज मैं उस महान विभूति पर अपना मत प्रकट कर रहा हूँ, जो गुजरात की राजकोट रियासत के दीवान की धर्मपत्नी की कोख से जन्मा था, एक अनुमान से कहा जा सकता है कि अपने पिता के दीवान पद पर आसीन होने से जिसे ताउम्र न तो धन की कोई कमी रहती और न किसी सुख सुविधा की। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि जिस गुलामी काल में धनाभाव के कारण तत्कालीन छात्र अपने गाँव में भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे, उस समय उन्हें सात समुन्दर पार ब्रिटेन में कानून की शिक्षा दिलवाई गई। जो आजीवन सूट-बूट पहनकर ऐश्वर्य से रह सकता था, उसने जिन्दगी में कभी कपड़े न पहनने का संकल्प ले लिया। कोई विवशता न होते हुए सारे सुखों का इतना बड़ा त्याग साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं है। इतना ही नहीं भारत को स्वतन्त्रता मिलने के बाद भी उन्हें किसी भी सर्वोच्च पद पर निर्विरोध विभूषित किया जा सकता था किन्तु किसी भी पद के प्रति आकर्षण न होना उनकी महान विभूति के विशेषण को और भी सार्थक करता है।

जिनकी शिक्षाओं को गान्धी दर्शन का नाम मिला जिसे हमारे देश में ही नहीं अपितु विश्व के कई देशों में पढ़ाया जाता है। इतना ही नहीं उनके पथ पर चलने वाले किसी भी देश के जुझारू व्यक्तित्व को उस देश का गान्धी पुकारकर सम्मानित किया जाता है। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मण्डेला इसके प्रमाण रहे हैं। ₹सीमान्त गान्धी₹ या ₹सरहदी गान्धी₹ के नाम से खान अब्दुल गफ्फार खान को जाना जाता है, जो महात्मा गान्धी के अनुयायी थे। उनके समान विचारधारा के कारण उन्हें यह उपनाम दिया गया। वह ब्रिटिश भारत के उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त (अब पाकिस्तान में है) के पश्तून थे और उन्होंने अहिंसा के मार्ग पर चलकर एक अहिंसक प्रतिरोध आन्दोलन, 'खुदाई खिदमतगार', का नेतृत्व किया।

जिस मोहनदास को चम्पारण के एक किसान ने बापू कहा तो वह युग का प्यारा बापू हो गया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने जिन्हें राष्ट्रपिता कहा तो वह भारत का राष्ट्रपिता कहा जाने लगा। गुरुदेव कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा कहा तो वह राजनीतिक सन्त के रूप में महात्मा हो गया। विंटन चर्चिल ने जिसे अर्द्ध नग्न फकीर कहा तो ₹मजबूरी का नाम महात्मा गान्धी₹ एक लोकोक्त उक्ति बन गया।

हमें विचार करना होगा कुछ तो बात है, जिससे वे हमेशा के लिए अमर हो गए। वे आज भी कीर्तिकाय होकर जीवित हैं। मोहनदास गान्धी ने ऐसे काम किए हैं जिनके कारण भारत राष्ट्र उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है।

उनके जीवन को समझते हुए आगे बढ़ते हैं। महात्मा गान्धी का वास्तविक नाम मोहनदास करमचन्द गान्धी था।

गान्धी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के ख्यात बन्दरगाह पोरबन्दर शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम करमचन्द गान्धी और माँ का नाम पुतलीबाई था। उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान थे।

महज 13 साल की उम्र में गान्धी जी का विवाह कस्तूरबा से हुआ था। गान्धी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर और राजकोट में हुई। फिर 1888 में 19 साल की उम्र में गान्धी जी कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए। वहाँ यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लन्दन से वकालत की डिग्री ली।

बैरिस्टर बनने के बाद उन्हें 1893 में एक कानूनी मामले के लिए साउथ अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ जब उन्हें नस्लभेदी टिप्पणियों और भेदभाव का सामना करना पड़ा, तो उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय को उनके रंग-रूप के कारण संघर्ष करता देख गान्धीजी ने उनकी लड़ाई लड़ने का फैसला किया। जिन्हें रंग भेद के कारण अपमानित कर ट्रेन से फेंक दिया गया। यही उनके जीवन का वह मोड़ था जिससे गान्धी जी की विचारधारा में सत्याग्रह का जन्म हुआ।

20 साल से अधिक समय तक दक्षिण अफ्रीका में रहने के बाद 1915 में गान्धीजी भारत लौटे। देश वापस आते ही गान्धी जी अपने देश की आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। इसके लिए वह भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस से जुड़े और जल्द ही इसके प्रमुख नेता बन गए। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के कई राष्ट्रीय आन्दोलन उनके नेतृत्व में किए गए, जिनसे भारत में पदस्थ गोरों की सरकार ही नहीं अपितु समूची दुनिया प्रभावित रही। इनमें असहयोग आन्दोलन, स्वदेशी आन्दोलन, नमक कानून तोड़ने के लिए दाण्डी यात्रा, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि प्रमुख थे।

महात्मा गान्धी ने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा, आत्मनिर्भरता, सर्वधर्म समभाव, स्वच्छता, अस्पृश्यता, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय जैसे सिद्धान्तों को पूरे जीवन में मन से अपनाया। इन सिद्धान्तों का गम्भीर प्रभाव समूचे विश्व पर पड़ा और जिसे गान्धी दर्शन के नाम से जाना गया। उनके त्याग और सिद्धान्तों को जानकर पीढ़ियाँ की पीढ़ियाँ गान्धी जी की भक्त बनती गईं। उनके एक आह्वान पर समूचा देश खड़ा हो जाता था, दुष्ट अँग्रेजी सरकार उनके कदमों में आ गिरती थी। सच तो यही है कि दूसरी सहस्राब्दी के 1000 सालों में विश्व में उन जैसा राजनीतिक समझ वाला गुणवान व्यक्तित्व पैदा ही नहीं हुआ। इसीलिए सन् 2000 में दुनिया द्वारा महात्मा गान्धी को सहस्राब्दी का महानायक माना गया। यह भारत के गौरवशाली इतिहास को और भी गौरवान्वित करता है।

4 जून 1944 को सिंगापुर में एक रेडियो मैसेज देते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने महात्मा गांधी को देश का पिता (राष्ट्रपिता) कहकर संबोधित किया था। आगे चलकर भारत सरकार ने इस नाम को मान्यता दी।

भारत को आजादी दिलाने में जिन महान विभूतियों का नाम आता है उनमें स्वयं का बलिदान करने वाले लाखों उन अमर शहीदों का महत्त्व किसी से किसी भी तरह कम नहीं है। स्वयं के अस्तित्व के बलिदान देने से बड़ा दूसरा कोई बलिदान नहीं हो सकता। जिन माता-पिता ने अपनी सन्तानों को अपनी आँखों से फाँसी पर झूलते हुए देखा। जिन बहनों ने अपने भाई और पतियों को खोया। जिन वीरांगनाओं ने बलि पथ का चयन किया उसकी तुलना किसी भी अन्य त्याग से नहीं की जा सकती। यह परम सत्य है। इसीलिए यह भी सच है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति का श्रेय किसी एक व्यक्ति को देना भी उचित नहीं होगा, बात इकतरफा नहीं होनी चाहिए परोक्षापरोक्ष सभी के त्याग महत्त्वपूर्ण हैं।

यद्यपि अखण्ड भारत के बँटवारे का आरोप व शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह की फाँसी टालने के लिए अँग्रेजी सत्ता से कुछ न कहने का आरोप उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करते रहे हैं। सम्भवतः इन्हीं कारणों से आक्रोशित नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने आज़ादी मिलने के 5 महीने बाद ही 30 जनवरी 1948 को महात्मा गान्धी को दिल्ली में गोली मार दी।

गोडसे ने अदालत में दिए अपने बयान में कहा कि उसने महात्मा गान्धी को इसलिए मारा क्योंकि गान्धीजी की नीतियों ने भारत का विभाजन करवाया और लाखों हिन्दुओं का जीवन बर्बाद किया। गोडसे ने गान्धीजी पर मुस्लिम तुष्टिकरण और देश के बँटवारे में भूमिका निभाने का आरोप लगाया। उसने कहा कि वह गान्धीजी की देश सेवा का सम्मान करता है, लेकिन उन्हें यह अधिकार नहीं था कि वे मातृभूमि को तोड़ें। इतना सब कुछ होते हुए भी स्वतन्त्रता प्राप्ति में महात्मा गान्धी जी के योगदान को कमतर नहीं आँका जा सकता।

गान्धी जी की मृत्यु की शोक सूचना सिर्फ भारत को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को शोक में डालने वाली थी। एक ऐसा राजनीतिक सन्त महात्मा जिस पर हर भारतीय गर्व करता है, जिसने विश्व की राजनीति को दिशा दी, आज हमारे बीच में नहीं होते हुए भी है। आओ हम सब उनके सिद्धान्तों पर चल कर उनकी आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण' इन्दौर
(इस आलेख के लेखक हिन्दी के वरिष्ठ कवि व साहित्यकार हैं।)

दशहरे में भी उपेक्षित ईचा का ऐतिहासिक सैनिक अखाड़ा एवं ढाल- तलवारें

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा, ओडिशा उत्तरी भाग में बसा ऐतिहासिक सरायकेला राज्य का ईचा राजा की जमींदारी, जहां कभी हजारों राजकीय सैनिक तैनात हुआ करते थे। जिन्हें उत्कलीय परंपरागत पाइक यानी पदातिक सैन्य कहा जाता था। स्थानीय ओड़िया भाषा में गहदोल भी कहा जाता रहा। सरायकेला का राजनगर प्रखंड का यह बड़ा सा भू भाग पर एक बृहत अखाड़ा हुआ करता था। सरायकेला के खड़ायत सैन्य अधिकारियों के पाईक अखाड़ा व संचालक परिवारों को आज खैर खबर लेने वाला कोई नहीं है, नतो इतिहास को तरहीज या संरक्षण देने वाला।

यह सोलह आने सच है जिस इतिहास व लोगों की आर्थिक, सांस्कृतिक उत्थान उस देशी रियासत विलय दस्तावेज का मुख्य हिस्सा रहा है वह पुरी तरह उपेक्षित है बिहार व झारखंड सरकार में अब। इतना ही नहीं शारदीय पूजा चढ़ा हुआ है सर पर परन्तु सुनसान हैं सरायकेला के ऐतिहासिक उत्कलीय पारंपरिक सभी पाइक अखाड़े। विगत दशकों से सरकार दशहरे की पूजा तक नहीं कराती कहीं। चौंकिए नहीं यही सच है पर आगामी दिनों में एन सी आर टी की किताबों में यही पाइक विद्रोह की पढ़ाई होने जा रही है, पर उसी ओडिशा का हिस्सा रहा सरायकेला में यह जानबुझकर कफ़न ढंक कब्र में गाड़ देना कहां तक उचित है ?

1797ई में जब सरायकेला के महाराजा अभिराम सिंह के द्वितीय पुत्र दामोदर सिंह सबसे पहले आज के राजनगर प्रखंड के पोटका में गये तब अपने साथ एक सैन्य अधिकारी दल गोबिंद परिच्छा को साथ में ले गये। फिर उन्होंने पोटका, बंदोडीह फिर

1803 में ईचा में जा बसे अपना जमींदारी कायम किया। यहां सैन्य संचालन का जिम्मा उन्हीं दोल गोबिन्द परिच्छा के जिम्मे था। उनके अन्तिम कड़ी के रूप में पाइक सैन्य अखाड़े का संचालक मेघनाथ परिच्छा करते थे आजादी के समय तक। ये सभी अखाड़े गुरू हुआ करते एवं सेनापति भी थे। जहां सैकडों तलवारें ढालें युद्ध रियाज के समान हुआ करता था आज से कुछ वर्षों पहले तक, अब कितना बचा कोई नहीं जानता। दशहरे में पाइक खंडा खेल हुआ करता था आज बंद पड़ा है। यह था स्वरूप सरायकेला स्टेट का इसके हर जगह सैनिक मौजूद रहते थे। वास्तव वे जगन्नाथ सीमा सुरक्षा प्रहरी भी हुआ करते थे परिच्छा गण। कारण 1205 में जब पोड़ाहाट राज्य (सिंहभूम) की नींव पड़ी तब ये शासक वर्ग पुरी से गजपति महाराज के आदेश पर आये थे इस इलाके में। परिच्छा का काम जगन्नाथ सेवायत वन कर राज्य की सुरक्षा, युद्ध हेतु सैन्य अधिकारी से लेकर सीमा सुरक्षा प्रहरी भी।

स्लाइट में नवरात्रि नाइट 2025 का आयोजन

लोगोंवाल,1 अक्टूबर (जगसीर सिंह)-

संत लौंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, लौंगोवाल के हैप्पी क्लब ने ग्रीन कोर्ट - स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एक जीवंत नवरात्रि नाइट 2025 का आयोजन किया। 30 सितंबर को शाम 5:00 बजे से 8:00 बजे तक आयोजित इस सांस्कृतिक संध्या में भक्ति, संगीत और उत्सव का माहौल रहा, जहाँ पारंपरिक वेशभूषा में छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, स्लाइट के निदेशक, प्रो. मणिकांत पासवान ने किया; जिन्होंने रिबन काटकर माँ दुर्गा की आरती उतारी, जिससे इस अवसर पर आध्यात्मिक माहौल बना। कार्यक्रम का आयोजन प्रो. एम. एम. सिन्हा (डीन, एसडब्ल्यू) के मार्गदर्शन में किया गया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर आर. के. मिश्रा, डीन (एआई एंड आर), प्रोफेसर पी. कुमार, डॉ. गुरजिंदर कौर और डॉ. अंशुका बंसल (मुख्य वार्डन), डॉ. जगदीप, डॉ. सुधीर और डॉ. योगेश वर्मा (वार्डन) और कई अन्य संकाय और स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का पर्यवेक्षण संकाय सलाहकार डॉ. योगेश कपिल और छात्र सलाहकार किशलय राज ने किया। साक्षी सिंह और नमन सिन्हा के नेतृत्व में आयोजकों और समन्वयकों ने इस संध्या की सफलता सुनिश्चित करने के लिए अथक परिश्रम किया। संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के परिवारों की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह की गरिमा और गर्मजोशी को और बढ़ा दिया। भारत के सभी हिस्सों से आए नृत्य और संगीत के संयोजन ने ₹एक भारत, श्रेष्ठ भारत₹ की थीम को पूरी तरह से प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम ने सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा दिया, सामुदायिक बंधनों को मजबूत किया और स्लाइट में परंपरा और एकजुटता की भावना को उजागर किया।

अलका तिवारी बनी मुख्य चुनाव आयुक्त झारखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, नगर निकाय चुनाव के पहले मुख्य सचिव पद से रिटायर्ड होने के बाद अलका तिवारी मुख्य चुनाव आयुक्त झारखंड बनाई गयी है। राज्य के नये निर्वाचन आयुक्त अलका तिवारी सोमवार, 5 अक्टूबर को पदभार ग्रहण कर सकती हैं. दुर्गा पूजा की छुट्टी के कारण, आयोग में सोमवार को काम फिर से शुरू होगा. भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1988 बैच की अधिकारी अलका तिवारी ने एक तेज-तर्रार महिला प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अपनी पहचान बनाई है.

वह बचपन से ही एक मेधावी छात्रा थीं. मेरठ यूनिवर्सिटी में राज्यपाल के हाथों उन्हें गोल्ड मेडल मिला था. उन्होंने मनोविज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की. इसके बाद, आगे की शिक्षा के लिए वे यूनाइटेड किंगडम के मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी गईं और वहां एमएससी की पढ़ाई की. वहां उन्हें मैनेजमेंट और विकास प्रोजेक्ट्स में अच्छा प्रदर्शन के लिए गोल्ड मेडल भी मिला. इसके अलावा उन्होंने रांची विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री भी प्राप्त की है. उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय और ड्यूक विश्वविद्यालय सहित कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से शॉर्ट टर्म का कोर्स भी पूरा किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**